Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ગુજરાત રાજ્યના શિક્ષણવિભાગના પત્ર-ક્રમાંક
મશબ/1116/1052-54/છ, તા. 28-11-2016-થી મંજૂર

हिन्दी

(द्वितीय भाषा)

कक्षा 10

प्रतिज्ञापत्र

भारत मेरा देश है।
सभी भारतवासी मेरे भाई-बहन हैं।
मुझे अपने देश से प्यार है और इसकी समृद्धि तथा बहुविध परम्परा पर गर्व है।
मैं हमेशा इसके योग्य बनने का प्रयत्न करता रहूँगा।
मैं अपने माता-पिता, अध्यापकों और सभी बड़ों की इज्जत करूँगा एवं हरएक से नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा।
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने देश और देशवासियों के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा।
उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

मूल्य : ₹ 18.00

तमसोमा ज्योतिर्गमय

गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल
'विद्यायन', सेकटर 10-ए, गांधीनगर-382 010

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

© गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर
इस पाठ्यपुस्तक के सर्वाधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन हैं ।
इस पाठ्यपुस्तक का कोई भी अंश, किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

विषय-सलाहकार
डॉ. चन्द्रकान्त मेहता

लेखन-संपादन
डॉ. चंदुभाई स्वामी (कन्वीनर)
डॉ. गिरीशभाई त्रिवेदी
डॉ. जे. बी. जोशी
श्री महेशभाई उपाध्याय
डॉ. वर्षाबहन पारेख
डॉ. सविताबहन डामोर
श्री पुलकित जोशी

समीक्षा
डॉ. रवीन्द्र अंधारिया
डॉ. पूजाभाई ओड़ेदरा
श्री पंकज मारु
श्री केशवचंद्र शर्मा
श्री बिन्दुबहन पंड्या
श्री वीरेन्द्रगिरि गोंसाई
श्री भारतीबहन भट्ट
श्री जिज्ञाबहन त्रिवेदी

संयोजन
डॉ. कमलेश एन. परमार
(विषय-संयोजक : हिन्दी)

निर्माण-संयोजन
डॉ. कमलेश एन. परमार
(नायब नियामक : शैक्षणिक)

मुद्रण-आयोजन
श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : उत्पादन)

प्रस्तावना

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार किए गए नये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के अनुसंधान में गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड द्वारा नया पाठ्यक्रम तैयार किया गया है, जिसे गुजरात सरकार ने स्वीकृति दी है।

नये राष्ट्रीय अभ्यासक्रम के परिपेक्ष में तैयार किए गए विभिन्न विषयों के नये अभ्यासक्रम के अनुसार तैयार की गई यह **कक्षा 10 हिन्दी (द्वितीय भाषा)** की पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मंडल हर्ष का अनुभव कर रहा है। नई पाठ्यपुस्तक के हस्तप्रत-निर्माण की प्रक्रिया में संपादकीय पेनल ने विशेष ध्यान रखते हुए तैयार की है । एन.सी.ई.आर.टी. तथा अन्य राज्यों के अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को देखते हुए गुजरात की नई पाठ्यपुस्तक को गुणवत्तालक्षी कैसे बनाया जाय, उस पर संपादकीय पेनल ने सराहनीय प्रयत्न किया है।

इस पाठ्यपुस्तक को प्रकाशित करने से पहले इसी विषय के विषय निष्णातों तथा इस स्तर पर अध्यापनरत अध्यापकों द्वारा सर्वांगीण समीक्षा की गई है। समीक्षा शिविर में मिले सुझावों को इस पाठ्यपुस्तक में शामिल किया गया है। पाठ्यपुस्तक का मंजूरी क्रमांक प्राप्त करने की प्रक्रिया के दौरान गुजरात माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड द्वारा प्राप्त हुए सुझावों के अनुसार इस पाठ्यपुस्तक में आवश्यक सुधार करके प्रकाशित किया गया है।

भाषाकीय नये अभ्यासक्रम का एक उद्देश्य है, इस स्तर के छात्र व्यवहारिक भाषा का उपयोग करने के साथ-साथ अपनी भाषा-अभिव्यक्ति को विशेष असरकारक बनाएँ। साहित्यिक स्वरूप एवं सर्जनात्मक भाषा के परिचय के साथ-साथ हिन्दी भाषा की खूबियों को समझकर अपने स्व-लेखन में उनका प्रयोग करना सीखें, इसलिए स्व-लेखन के लिए छात्रों को पूर्ण अवकाश दिया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक को रुचिकर, उपयोगी एवं क्षतिरहित बनाने का पूरा प्रयास मंडल द्वारा किया गया है, फिर भी पुस्तक की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षा में रुचि रखनेवालों से प्राप्त सुझावों का मंडल स्वागत करता है।

एच. एन. चावड़ा
नियामक
ता. 17-03-2017

डॉ. नीतिन पेथाणी
कार्यवाहक प्रमुख
गांधीनगर

प्रथम आवृत्ति : 2017
प्रकाशक : गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, 'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर की ओर से एच. एन. चावड़ा, नियामक
मुद्रक :

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मूलभूत कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -*

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आवाहन किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) माता-पिता अथवा अभिभावक 6 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु के अपने बालक या पाल्य को शिक्षण के सुअवसर प्रदान करे।

***भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनुक्रमणिका

1.	प्रभुजी तुम चंदन हम पानी	(प्रार्थना गीत)	रैदास	1
2.	बूढ़ी काकी	(कहानी)	प्रेमचन्द	2
3.	सवैये	(मुक्तक)	रसखान	6
4.	एक प्रश्न : चार उत्तर	(लेख)	श्री प्रकाश	8
5.	मीरा के पद	(पद)	मीराबाई	11
6.	कालिदास का प्राणीप्रेम	(नाट्यांश)	मोहन राकेश	13
7.	जन्मभूमि	(कविता)	सुमित्रानंदन पंत	17
8.	सुधामूर्ति	(जीवनी)	संकलित	19
9.	कुत्ते की सीख	(कथा काव्य)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	22
10.	जीने की कला	(निबंध)	मौलाना अबुल कलाम 'आज़ाद'	24
11.	भारतवर्ष हमारा है	(कविता)	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	26
12.	एक नई शुरुआत	(कहानी)	जाकिर अली 'रजनीश'	28
13.	साधूपदेश	(हास्य-व्यंग)	काका हाथरसी	32
14.	मेरी माँ	(आत्मकथा अंश)	रामप्रसाद बिस्मिल	35
15.	हे जनशक्ति महान !	(गीत)	रांगेय राघव	38
16.	चोरी	(कहानी)	यशपाल जैन	40
17.	कश्मीर	(कविता)	वीरेन्द्र मिश्र	44
18.	रचना	(एकांकी)	रघुवीर चौधरी	46
19.	तोता और इन्द्र	(संवाद-काव्य)	नरेन्द्र मालवीय	51
20.	अलबम	(कहानी)	सुदर्शन	53
21.	पहेलियाँ-मुकरियाँ	(मुक्तक)	अमीर खुसरो	56
22.	भीतरी समृद्धि	(निबंध)	डॉ. चन्द्रकान्त मेहता	58
23.	भूख	(कविता)	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	61

प्रयोजनमूलक हिन्दी

- संचार माध्यम, समाचारपत्र, आकाशवाणी 62
- दूरदर्शन (टी.वी.), STD, ISD, PCO, कम्प्यूटर (Computer) 62
- डी.टी.पी. (Desk Top Publishing), ई-मेल (E-mail) 63
- पत्र-लेखन 64
- पत्राचार 65

पूरक वाचन

1.	क्रिकेट जगत में अनुशासन और टीम भावना	(लेख)	विजय मर्चन्ट	67
2.	जलियाँवाला बाग में बसंत	(कविता)	सुभद्राकुमारी चौहान	68
3.	सत्साहसी	(लेख)	गणेश शंकर विद्यार्थी	69
4.	असाध्य एड्स	(लेख)	दीपिका गुप्त	70
5.	बंटी की उलझन	(उपन्यास अंश)	मन्नू भण्डारी	73

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1 प्रभुजी तुम चंदन हम पानी

रैदास

(जन्म : सन् 1388 ई., निधन : सन् 1518 ई. अनुमानित)

संत कवि रैदास कबीर के समकालीन महान संत थे । रैदास को रविदास के नाम से भी जाना जाता है । यह माना जाता है कि संत रामानंदजी के शिष्यों में से एक थे । ये काशी में रहते थे । पढ़े-लिखे नहीं थे, मगर उनकी साधना उच्च प्रकार की थी ।

उनके पदों में अनन्य भक्तिभाव की अभिव्यक्ति है । संत कवि रैदास ने भक्त और भगवान के अटूट संबंध की पुष्टि अपने पदों में की है । आत्मा-परमात्मा का मिलन सोने में सुगंध की भाँति उत्तम बतलाया है । उनके पद बहुत लोकप्रिय हैं । उनके कुछ पद गुरुग्रंथ साहब में संग्रहीत है । बोलचाल की सरल सहज भाषा में दो सौ से अधिक पद हैं ।

यहाँ संकलित पद में रैदास कहते हैं कि प्रभुजी मैं हरहाल में आपके निकट रहता हूँ । मुझे आपकी भक्ति से प्रभुमय बनना है । मैं आपका दास आपकी प्रतीति चाहता हूँ । यहाँ आत्मा और परमात्मा की अद्वैतता वर्णित है ।

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी ।
जाकी अंग अंग बास समानी ।
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा ।
जैसे चितवत् चंद चकोरा ।
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती ।
जाकी जोति बरै दिन-राती ।
प्रभुजी तुम मोती हम धागा ।
जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा ।
ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

शब्दार्थ

बास बू, गंध **मोरा** मोर-धन-बादल **बरै** जले **दासा** दास **सुहागा** एक तरह का खनिज पदार्थ **चकोर** तितर जैसा पक्षी जो चंद्र की ओर देखता है **चितवत्** देखना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) प्रभु चंदन है तो भक्त क्या है ?
(2) भक्त दीपक बनकर क्या चाहता है ?
(3) सोने का महत्त्व कब बढ़ता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्न के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) भक्त किन-किन उदाहरणों द्वारा समझाता है कि मैं प्रभु से निकट हूँ - अपने शब्दों में लिखिए ।

3. उचित जोड़े बनाइए :

'अ'	'ब'
चंदन	मोरा
धन बन	ज्योति
दीपक	पानी
सोना	रैदासा
भक्त	सुहागा

योग्यता-विस्तार

- रैदास के अन्य पद संकलित कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- रैदास के पद एवं गुरुनानक के पद की तुलना कीजिए ।
- निरालाजी की 'तुम और मैं' कविता का गान करें और समझाइए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2 बूढ़ी काकी

प्रेमचन्द

(जन्म : सन् 1880 ई., निधन : सन् 1936 ई.)

हिन्दी के उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द का जन्म उत्तर प्रदेश में वाराणसी के निकट लमही नामक गाँव में हुआ था । उनका मूल नाम धनपतराय था। शिक्षा काल में ही उन्होंने अंग्रेजी के साथ उर्दू का भी अध्ययन किया था । प्रारंभ में वे कुछ वर्षों तक स्कूल में रहे, बाद में शिक्षा विभाग में सब-डिप्टी इंस्पेक्टर रहे । स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्होंने नौकरी छोड़ दी और वे स्वतंत्र लेखन की ओर मुड़े । वे हिन्दी ही नहीं बल्कि समग्र भारतीय साहित्य के महान व्यक्तित्व हैं ।

अपनी आवाज जनता तक पहुँचाने के लिए उन्होंने उपन्यास, कहानियाँ और नाटक लिखे । उन्होंने अन्य भाषाओं से अनुवाद किए, निबंध लिखे तथा बालोपयोगी साहित्य की रचना भी की । गबन, वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गोदान, मंगलसूत्र (अपूर्ण) उनके उपन्यास हैं । 'मानसरोवर' आठ भागों में उनकी लगभग तीन सौ कहानियाँ संग्रहित हैं । प्रेम की वेदी, कर्बला और संग्राम उनके नाटक हैं । कुछ विचार, कलम और तलवार और त्याग आदि उनके निबंध संकलन हैं ।

'बूढ़ी काकी' में प्रेमचन्द ने ऐसे दयनीय वृद्धों की अवस्था की ओर हमारा ध्यान खींचा है, जिन्हें उपेक्षा मिलती है और जो जीवन के हर क्षण का आनंदपूर्वक उपभोग करना चाहते हैं । यह मूल कहानी का संक्षिप्त रूप हैं ।

बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है । बूढ़ी काकी में जीभ के स्वाद के सिवा न और कोई चेष्टा शेष थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने का, रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा ही । समस्त इंद्रियाँ, हाथ और पैर जवाब दे चुके थे । जमीन पर पड़ी रहती और घरवाले कोई बात उनकी इच्छा के प्रतिकूल करते, भोजन का समय टल जाता या उसकी मात्रा कम होती अथवा बाजार से कोई वस्तु आती और न मिलती, तो वे रोने लगती थीं । उनका रोना-सिसकना साधारण रोना न था, वे गला फाड़-फाड़कर रोती थीं ।

उनके पति को स्वर्ग सिधारे बहुत वक्त हो चुका था । बेटे तरुण हो-होकर चल बसे थे । अब एक भतीजे के सिवाए और कोई न था । उसी भतीजे के नाम उन्होंने अपनी सारी संपत्ति लिख दी । बुद्धिराम ने सारी संपत्ति लिखाते समय खूब लंबे-चौड़े वादे किए, किंतु वे सब वादे केवल कुली डिपो के दलालों के दिखाए हुए सब्जबाग थे । यद्यपि उस संपत्ति की वार्षिक आय कम न थी तथापि बूढ़ी काकी को पेट भर भोजन भी कठिनाई से मिलता था ।

लड़कों का बूढ़ों से स्वाभाविक विद्वेष होता ही है और फिर जब माता-पिता का यह रंग देखते तो वे बूढ़ी काकी को और सताया करते । कोई चुटकी काटकर भागता, कोई उन पर पानी कुल्ली कर देता । काकी चीख मार कर रोती, परंतु यह बात प्रसिद्ध थी कि वे केवल खाने के लिए रोती हैं, अतएव उनके संताप और आर्तनाद पर कोई ध्यान नहीं देता था ।

संपूर्ण परिवार में यदि काकी से किसी का अनुराग था, तो वह बुद्धिराम की छोटी लड़की लाडली थी । लाडली अपने दोनों भाइयों के डर से अपने हिस्से की मिठाई या चबैना बूढ़ी काकी के पास बैठकर खाया करती थी । यही उसका रक्षागार था और यद्यपि काकी की शरण उनकी लोलुपता के कारण महँगी पड़ती थी, तथापि भाइयों के अन्याय की तुलना में कहीं सुलभ थी। इस स्वार्थानुकूलता ने उन दोनों में सहानुभूति का आरोपण कर दिया था ।

रात का समय था । बुद्धिराम के द्वार पर शहनाई बज रही थी और गाँव के बच्चों का झुंड विस्मयपूर्ण नेत्रों से गाने का रसास्वाद कर रहा था ।

आज बुद्धिराम के बड़े लड़के मुखराम का तिलक आया है । यह उसी का उत्सव है । घर के भीतर स्त्रियाँ गा रही थीं और रूपा मेहमानों के लिए भोजन के प्रबंध में व्यस्त थी । भट्ठियों पर कड़ाह चढ़े थे । एक में पूड़ियाँ-कचौड़ियाँ निकल रही थीं । एक बड़े पतीले में मसालेदार सब्जी पक रही थी । घी और मसालों की सुगंध चारों ओर फैली हुई थी ।

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में बैठी हुई थी । यह सुगंध उन्हें बेचैन कर रही थी । वे मन-ही-मन सोच रही थीं, इतनी देर हो गई कोई भोजन लेकर नहीं आया । मालूम होता है, सब लोग भोजन कर चुके हैं । यह सोचकर उन्हें रोना आया, परंतु अपशकुन के डर से वे रो न सकीं ।

बूढ़ी काकी की कल्पना में पूड़ियों की तसवीर नाचने लगी । खूब लाल-लाल, फूली-फूली, नरम-नरम होंगी । कचौड़ियों में अजवाइन और इलायची की महक आ रही होगी । एक पूड़ी मिलती तो जरा हाथ लेकर देखती । क्यों न चलकर कड़ाह के सामने ही बैठूँ । इस प्रकार निर्णय करके बूढ़ी काकी उकड़ूँ बैठकर हाथों के बल सरकती हुई बड़ी कठिनाई से चौखट से उतरी और धीरे-धीरे रेंगती हुई कड़ाह के पास आ बैठीं । यहाँ आने पर उन्हें उतना ही धैर्य हुआ जितना भूखे कुत्ते को खानेवाले के सम्मुख बैठने में होता है ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बुद्धिराम की पत्नी रूपा उस समय कार्य-भार से परेशान हो रही थी । कभी इस कमरे में जाती, कभी उस कमरे में, कभी कड़ाह के पास आती, कभी भंडार में जाती । बेचारी अकेली दौड़ते-दौड़ते व्याकुल हो रही थी, झुँझलाती थी, कुढ़ती थी, परंतु क्रोध प्रकट करने का अवसर न पाती थी । इस अवस्था में उसने बूढ़ी काकी को कड़ाह के पास बैठे देखा तो जल उठी । क्रोध न रुक सका । जिस प्रकार मेंढक केंचुए पर झपटता है, उसी प्रकार वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली, ''ऐसे पेट में आग लगे, पेट है या भाड़ ? कोठरी में बैठते हुए क्या दम घुटता था ? अभी मेहमानों ने नहीं खाया, भगवान को भोग नहीं लगा, तब तक धैर्य न हो सका ?''

बूढ़ी काकी ने सिर उठाया; न रोईं न बोली । चुपचाप रेंगती हुई अपनी कोठरी में चली गई । भोजन तैयार हो गया है । आँगन में पत्तलें पड़ गईं, मेहमान खाने लगे ।

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में जाकर पश्चाताप कर रही थीं कि मैं कहाँ चली गई । उन्हें रूपा पर क्रोध नहीं था । अपनी जल्दबाजी पर दुःख था । सच ही तो है, जब तक मेहमान लोग भोजन न कर लेंगे, घरवाले कैसे खाएँगे । मुझसे इतनी देर भी न रहा गया । अब जब तक कोई बुलाने न आएगा, न जाऊँगी ।

मन-ही-मन इसी प्रकार का विचार कर वह बुलावे का इंतजार करने लगीं । वह मन को बहलाने के लिए लेट गई । धीरे-धीरे एक गीत गुनगुनाने लगीं । उन्हें मालूम हुआ कि मुझे गाते देर हो गई । क्या इतनी देर तक लोग भोजन कर रहे होंगे ? किसी की आवाज नहीं सुनाई देती । अवश्य ही लोग खा-पीकर चले गए । मुझे कोई बुलाने नहीं आया । रूपा चिढ़ गई है, क्या जाने न बुलाए । बूढ़ी काकी चलने के लिए तैयार हुई । यह विश्वास है कि एक मिनट में पूड़ियाँ और मसालेदार सब्ज़ियाँ सामने आएँगी, उनकी स्वादेंद्रियाँ गुदगुदाने लगीं । उन्होंने मन में तरह-तरह के मंसूबे बाँधे-पहले सब्जी से पूड़ियाँ खाऊँगी, फिर दही और शक्कर से, कचौड़ियाँ रायते के साथ मज़ेदार मालूम होंगी । चाहे कोई बुरा माने चाहे भला, मैं तो माँग-माँगकर खाऊँगी । यही न लोग कहेंगे कि इन्हें विचार नहीं । कहा करें, इतने दिन के बाद पूड़ियाँ मिल रही हैं तो मुँह जूठा करके थोड़े ही उठ जाऊँगी ।

वह उकड़ूँ बैठकर हाथों के बल सरकती हुई आँगन में आईं । परंतु हाय दुर्भाग्य ! मेहमान मंडली अभी बैठी हुई थी । कोई खाकर उँगलियाँ चाटता था, कोई तिरछे नेत्रों से देखता था कि और लोग अभी खा रहे हैं या नहीं । इतने में बूढ़ी काकी रेंगती हुई उनके बीच में जा पहुँचीं ।

पंडित बुद्धिराम काकी को देखते ही क्रोध से तिलमिला गए । लपककर उन्होंने काकी के दोनों हाथ पकड़े और घसीटते हुए लाकर उन्हें अँधेरी कोठरी में धम से पटक दिया ।

मेहमानों ने भोजन किया । घरवालों ने भोजन किया । बाजेवाले, धोबी, नाऊ भी भोजन कर चुके, परंतु बूढ़ी काकी को किसी ने न पूछा । बुद्धिराम और रूपा दोनों ही बूढ़ी काकी को उनकी निर्लज्जता के लिए दंड देने का निश्चय कर चुके थे । उनके बुढ़ापे पर, दीनता पर किसी को करुणा न आई । अकेली लाडली उनके लिए परेशान हो रही थी ।

लाडली को काकी से अत्यंत प्रेम था । वह झुँझला रही थी कि वे लोग काकी को बहुत-सी पूड़ियाँ क्यों नहीं दे देते? क्या मेहमान सब की सब खा जाएँगे ? और यदि काकी ने मेहमानों के पहले खा लिया तो क्या बिगड़ जाएगा ? वह काकी के पास जाकर उन्हें धैर्य देना चाहती थी परंतु माँ के डर से न जाती थी । उसने अपने हिस्से की पूड़ियाँ बिलकुल न खाई थीं । उन पूड़ियों को काकी के पास ले जाना चाहती थीं । उसका हृदय अधीर हो रहा था । बूढ़ी काकी मेरी बात सुनते ही उठ बैठेंगी, पूड़ियाँ देखकर कैसी प्रसन्न होंगी । मुझे खूब प्यार करेंगी ।

रात के ग्यारह बज गए थे । रूपा आँगन में पड़ी सो रही थी । लाडली की आँखों में नींद न थी । काकी को पूड़ियाँ खिलाने की खुशी उसे सोने न देती थी । जब विश्वास हो गया कि अम्माँ सो रही है, तो वह चुपके से उठी और बूढ़ी काकी की कोठरी की ओर चली ।

बूढ़ी काकी को केवल इतना याद था कि किसी ने मेरे हाथ पकड़ कर घसीटे और फिर ऐसा मालूम हुआ कि जैसे कोई पहाड़ पर उड़ाए लिए जाता है । उनके पैर बार-बार पत्थरों से टकराए तब किसी ने उन्हें पहाड़ पर दे पटका, वे मूर्छित हो गईं ।

जब वे सचेत हुईं तो किसी की जरा भी आहट न मिलती थी । उन्होंने समझा कि सब लोग खा-पीकर सो गए ।

यह विचारकर काकी निराशामय संतोष के साथ लेट गईं । ग्लानि से गला भर-भर आता था, परंतु मेहमानों के डर से रोती न थीं ।

सहसा उनके कानों में आवाज आई, 'काकी उठो; मैं पूड़ियाँ लाई हूँ ।' काकी ने लाडली की बोली पहचानी । चटपट उठ बैठीं । दोनों हाथों से लाडली को टटोला और उसे गोद में बैठा लिया । लाडली ने पूड़ियाँ निकालकर दीं ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

काकी ने पूछा, ''क्या तुम्हारी अम्माँ ने दी हैं ?''

लाडली ने कहा, ''नहीं, यह मेरे हिस्से की हैं ।''

काकी पूड़ियों पर टूट पड़ी । पाँच मिनट में पिटारी खाली हो गई । लाडली ने पूछा, ''काकी पेट भर गया ?''

जैसे थोड़ी-सी वर्षा ठंडक के स्थान पर गरमी पैदा कर देती है, उसी तरह इन थोड़ी पूड़ियों ने काकी की क्षुधा और इच्छा को और उत्तेजित कर दिया था । बोली, ''नहीं बेटी, जाकर अम्माँ से और माँग लाओ ।''

लाडली ने कहा, ''अम्माँ सो गई हैं, जगाऊँगी तो मारेंगी ।''

काकी ने पिटारी को फिर टटोला । उसमें कुछ खुर्चन गिरे थे । उन्हें निकालकर वे खा गईं । बार-बार होंठ चाटती थीं, चटखारें भरती थीं ।

हृदय मसोस रहा था कि और पूड़ियाँ कैसे पाऊँ ? काकी का अधीर मन इच्छा के प्रबल प्रवाह में बह गया । उचित और अनुचित का विचार जाता रहा । वे कुछ देर तक उस इच्छा को रोकती रहीं । सहसा लाडली से बोली, ''मेरा हाथ पकड़कर वहाँ ले चलो, जहाँ मेहमानों ने बैठकर खाना खाया ।''

लाडली उनका अभिप्राय समझ न सकी । उसने काकी का हाथ पकड़ा और ले जाकर जूठे पत्तलों के पास बैठा दिया । काकी पत्तलों से पूड़ियों के टुकड़े चुन-चुनकर खाने लगीं । ओह ! दही कितना स्वादिष्ट था, कचौड़ियाँ कितनी सलोनी, खस्ता कितना सुकोमल । काकी बुद्धिहीन होते हुए भी इतना जानती थीं कि मैं वह काम कर रही हूँ, जो मुझे कदापि न करना चाहिए । मैं दूसरों की जूठी पत्तल चाट रही हूँ । परंतु बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है, जब संपूर्ण इच्छाएँ एक ही केंद्र पर आ लगती हैं । बूढ़ी काकी में यह केंद्र उनकी स्वादेंद्रियाँ थीं ।

ठीक उसी समय रूपा की आँखें खुलीं । उसे मालूम हुआ कि लाडली मेरे पास नहीं है । चौकी, चारपाई के इधर-उधर देखने लगी कि कहीं नीचे तो नहीं गिर पड़ी । उसे वहाँ न पाकर वह उठी तो क्या देखती है कि लाडली जूठे पत्तलों के पास चुपचाप खड़ी है और बूढ़ी काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खा रही हैं ।

रूपा का हृदय सन्न हो गया । यह वह दृश्य था जिसे देखकर देखनेवालों के हृदय काँप उठते हैं । ऐसा प्रतीत होता मानों ज़मीन रुक गई, आसमान चक्कर खा रहा है । संसार पर कोई विपत्ति आनेवाली है । रूपा को क्रोध न आया । शोक के सम्मुख क्रोध कहाँ ? करुणा और भय से उसकी आँखें भर आईं । इस अधर्म के पाप का भागी कौन है ? उसने सच्चे हृदय से गगन-मंडल की ओर हाथ उठा कर कहा, ''परमात्मा, मेरे बच्चों पर दया करो । इस अधर्म का दंड मुझे मत दो, नहीं तो मेरा सत्यानाश हो जाएगा ।''

रूपा की ओर स्वार्थपरता और अन्याय इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप में कभी न दीख पड़े थे । वह सोचने लगी, ''हाय ! कितनी निर्दय हूँ ? जिसकी संपत्ति से मुझे दो सौ रुपया वार्षिक आय हो रही है, उसकी यह दुर्गति ! और मेरे कारण ! हे दयामय भगवान ! मुझसे बड़ी भारी गलती हुई है, मुझे क्षमा करो ।''

रूपा ने दिया जलाया, अपने भंडार का द्वार खोला और एक थाली में सारा भोजन सजाकर लिए हुए बूढ़ी काकी की ओर चली । उसने कंठावरुद्ध स्वर में कहा, ''काकी उठो, भोजन कर लो । मुझसे आज बड़ी भूल हुई, उसका बुरा न मानना । परमात्मा से प्रार्थना कर दो कि वे मेरा अपराध क्षमा कर दें ।''

भोले-भाले बच्चों की भाँति, जो मिठाइयाँ पाकर मार और तिरस्कार सब भूल जाता है, बूढ़ी काकी सब भुला कर बैठी हुई खाना खा रही थीं । उनके एक-एक रोएँ से सच्ची सदिच्छाएँ निकल रही थीं और रूपा बैठी इस स्वर्गीय दृश्य का आनंद लेने में निमग्न थी ।

शब्दार्थ

पुनरागमन वापस आना **आर्तनाद** दुःख भरी चीख **सब्जबाग** झूठे सपने **क्षुधावर्धक** भूख को बढ़ानेवाली **रक्षागार** सुरक्षित स्थान **दिक करना** हैरान करना **उद्विग्न** चिंतित **सदिच्छाएँ** शुभकामना, अच्छी इच्छा **सेतु** पुल **ग्रास** कौर **मंसूबे** कल्पनाएँ इच्छाएँ **रसास्वादन** स्वाद लेना, आनंद लेना

मुहावरा

सब्जबाग दिखाना अपना काम साधने के लिए बड़ी-बड़ी आशाएँ दिलाना ।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) बूढ़ी काकी के भतीजे का क्या नाम था ?

(अ) धनीराम (ब) पं. बुद्धिराम (क) सुखराम (ड) दुःखराम

(2) रूपा किसकी पत्नी थी ?

(अ) धनीराम (ब) मनीराम (क) हनीराम (ड) पं. बुद्धिराम

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(3) किसने अपने हिस्से की पूड़ियाँ काकी के लिए बचाकर रखी थी ?
(अ) रूपा (ब) बुधिराम (क) लाडली (ड) श्यामा
(4) बूढ़ी काकी को पत्तलों पर से जूठी पूड़ी के टुकड़े खाता देखकर कौन सन्न रह गया ?
(अ) रूपा (ब) बुधिराम (क) लाडली (ड) श्यामा

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :
(1) बूढ़ी काकी कैसे रोती थी ?
(2) बुद्धिराम के घर किस उत्सव में पूड़ियाँ बन रही थीं ?
(3) बूढ़ी काकी को कहाँ पर बैठा देखकर रूपा क्रोधित हो गई ?
(4) किस खुशी में लाडली को नींद आ रही थी ?
(5) उत्सव के दिन बूढ़ी काकी किसके डर से नहीं रो रही थी ?
(6) बुढ़ापे में बूढ़ी काकी की समस्त इच्छाओं का केन्द्र कौन-सी इन्द्रिय थी ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :
(1) बूढ़ी काकी कब रोती थी ?
(2) लड़के बूढ़ी काकी को कैसे सताते थे ?
(3) बूढ़ी काकी की कल्पना में पूड़ियों की कैसी तसवीर नाचने लगी ?
(4) थाली में भोजन सजाकर बूढ़ी काकी को खिलाते समय रूपा ने क्या कहा ?
(5) बुद्धिराम ने बूढ़ी काकी की संपत्ति कैसे हथिया ली थी ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :
(1) क्या देखकर रूपा का पश्चाताप हुआ ? क्यों ?
(2) रूपा और बुद्धिराम ने बूढ़ी काकी के प्रति कब अमानुषिक व्यवहार किया और क्यों ?
(3) खाने के बारे में बूढ़ी काकी के मन में कैसे-कैसे मंसूबे बँधे ?
(4) 'बुढ़ापा तृष्णारोग का अंतिम समय है' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :
(1) बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है ।
(2) लड़कों का बूढ़ों से स्वाभाविक विद्वेष होता ही है ।

6. सूचानुसार उत्तर लिखिए :
(1) **समानार्थी शब्द दीजिए :** दीनता, वाटिका
(2) **विरुद्धार्थी शब्द दीजिए :** प्रतिकूल, सज्जन, अनुराग, सुलभ, अपशकुन, दीर्घाहार, निर्लज्जता, अपरिमित
(3) **शब्दसमूह के लिए एक शब्द दीजिए :** जहाँ घटना बनी है वह जगह,
जीभ का स्वाद,
भूख से आतुर,
धीरज की परीक्षा लेनेवाली
(4) **मुहावरों के अर्थ बताकर वाक्य-प्रयोग कीजिए :** सब्जबाग दिखाना, आपे से बाहर होना, उबल पड़ना, छाती पर सवार होना, नाक कटवाना, बेसिर पैर की बात, हृदय सन्न रह जाना, मुँह बाए फिरना, कलेजे में हूक-सी उठना, रोटियों के लाले पड़ना, आग हो जाना, जवाब दे चुकना, कलेजा पसीजना ।
(5) **संधि-विच्छेद कीजिए :** परमानंद, परमात्मा, अर्धांगिनी, स्वार्थानुकूलता, सहानुभूति, रसास्वादन, व्याकुल, दीर्घाहार, प्रतीक्षा, कण्ठावरुद्ध, क्षुधातुर, कालान्तर, रक्षागार सज्जन, सदिच्छाएँ, पुनरागमन, दुर्गति, सम्मुख
(6) **विग्रह करके समास का नाम लिखिए :** क्षुधातरु, सदिच्छाएँ, क्षुधावर्धक, रसास्वादन

योग्यता-विस्तार

- प्रेमचन्द की कहानी 'बड़े भाईसाहब' ढूँढकर पढ़िए ।
- प्रस्तुत कहानी का नाट्य रूपांतरण तैयार करके इसका मंचन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को वृद्धाश्रम की मुलाकात पर ले जाइए ।
- प्रेमचन्द की और कहानियाँ विद्यार्थियों को सुनाइए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3 सवैये

रसखान

(जन्म : सन् 1548 ई., निधन : सन् 1628 ई.)

रसखान का असली नाम सैयद इब्राहिम था । उसका जन्म दिल्ली के एक संपन्न परिवार में हुआ था । गोस्वामी विठ्ठलनाथजी से दीक्षा ग्रहण कर ब्रज में रहकर कृष्ण-भक्ति के पद लिखे । इस मुसलमान कवि की अनन्य कृष्ण-भक्ति सराहनीय है । इनकी कविता में कृष्ण की रूप-माधुरी, ब्रज-महिमा और राधा-कृष्ण की प्रेमलीलाओं का वर्णन हुआ है । उनकी भक्ति में प्रेम, शृंगार और सौंदर्य की त्रिवेणी बहती है । ब्रजभाषा का जैसा सरल-तरल, सरस-स्वच्छ और सजीव प्रयोग रसखान की कविता में मिलता है वैसा बहुत कम कवियों में प्राप्त होता है । रसखान जैसे भक्त कवियों को लक्ष्य करके ही भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा था - 'इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दू वारिए ।'

'सुजान रसखान', 'प्रेमवाटिका' और 'रसखान रचनावली' उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं ।

यहाँ रसखान के चार सवैये लिए गये हैं । इनके सवैयों में कृष्ण ही नहीं, कृष्ण-भूमि के प्रति अनन्य अनुरक्ति एवं समर्पण की भावना सजीव हुई है । कृष्ण की विविध लीलाओं का मनोहर वर्णन हुआ है । इन सवैयों में कृष्ण का धेनु चराना, बेनु बजाना, प्रेमरंग में रंगना और भंगिमाओं के साथ माधुर्यपूर्ण चित्रण हुआ है । कृष्ण के सामीप्य के लिए कवि लकुटी लेकर ग्वालों संग फिरने की बात करते हैं । शिक्षक छात्रों को बतायें कि एक मुसलमान कवि होते हुए भी रसखान कृष्ण-भक्ति में लीन थे ।

मानुष हौं तो वही 'रसखान', बसौं मिलि गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जो पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ॥
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्यो कर छत्र पुरंदर कारन ।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन ॥ 1 ॥

या लकुटी अरु कामरिया पर, राज तिहूँ पुर को तजि डारौं ।
आठहुँ सिद्धि, नवो निधि को सुख, नंद की धेनु चराय बिसारौं ॥
'रसखान' कबौं इन आँखिन सो, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं ।
कोटिकहू कलधौत के धाम, करील के कुंजन ऊपर वारौं ॥ 2 ॥

जा दिन तै वह नंद को छोहरो, या बन धेनु चराइ गयो है ।
मोहिनीताननि गोधन गाइकै, बेनु बजाइ रिझाइ गयो है ॥
ताही घरी कछु टोना सो कै, 'रसखान' हिये में समाइ गयो है ।
कोऊ न काहू की कानि करै, सिगरो ब्रज बीर बिकाइ गयो है ॥ 3 ॥

मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी ।
ओढ़ि पितांबर, लै लकुटी बन, गोधन ग्वारिन संग फिरौंगी ॥
भावतो वोहि मेरो रसखानि, सो, तेरे कहे सब स्वाँग भरौंगी ।
पै मुरली मुरलीधर की, अधरान-धरी अधरा न धरौंगी ॥ 4 ॥

शब्दार्थ

मानुष मनुष्य **बसौ** रहना करूँ **मँझारन** मध्य, बीच **पाहन** पत्थर **पुरन्दर** इन्द्र **कालिंदी-कूल** यमुना नदी का किनारा **लकुटी** लाठी **कामरिया** कम्बल **तिहूँ** तीनों **पुर** लोक **बिसरौं** भूल जाई **कोटिक** करोड़ **करील** एक कँटीला वृक्ष **कलधौत के धाम** सोने के राजमहल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) यमुना किनारे कदंब की डाल पर रसखान किस रूप में बसना चाहते हैं ?

(अ) पशु (ब) भगवान (क) पक्षी (ड) मनुष्य

(2) आठ सिद्धि और नव निधि का सुख प्राप्त होता है .....

(अ) नंद की धेनु चराने में । (ब) यमुना किनारे स्नान करने में ।
(क) कदंब के वृक्ष पर बसने में । (ड) मुरली बजाने में ।

(3) कलधौत के धाम का अर्थ होता है .....

(अ) काली यमुना नदी । (ब) सोने का राजमहल । (क) चाँदी का राजमहल ।(ड) कृष्ण का राजमहल ।

(4) गोपी गले में ·········· माला पहनना चाहती है ।

(अ) सोने की (ब) हीरों की (क) मोतियों की (ड) गुंजे की

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) मनुष्य के रूप में रसखान कहाँ बसना चाहते हैं ?
(2) पशु के रूप में कवि कहाँ निवास करना चाहते हैं ?
(3) रसखान किस पर्वत का पत्थर बनना चाहते हैं ?
(4) पशुयोनि में जन्म मिलने पर कवि क्या करना चाहते हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) लकुटी लेकर रसखान क्या करना चाहते हैं ? क्यों ?
(2) श्रीकृष्ण को रिझाने के लिए गोपी क्या-क्या करना चाहती है ?
(3) गोपी कृष्ण की मुरली को अपने अधरों पर क्यों नहीं रखना चाहती ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) रसखान श्रीकृष्ण का सामीप्य किन रूपों में किस प्रकार चाहते हैं ?
(2) कवि श्रीकृष्ण से संबंधित किन वस्तुओं की अभिलाषा करता है । इनके लिए वह किन वस्तुओं को छोड़ने के लिए तैयार है ?
(3) कृष्ण की मुरली का ब्रज की स्त्रियों पर क्या प्रभाव पड़ा ?
(4) कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित करने के लिए रसखान क्या-क्या न्यौछावर करना चाहते हैं ?

5. उचित जोड़े बनाइए :

'अ'	'ब'
मनुष्य	नंद की गाय
पशु	यमुना के किनारे कदंब की डाल
पक्षी	गोवर्धन पर्वत
पत्थर	गोकुल गाँव

योग्यता-विस्तार कीजिए

- 'इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दू वारिए' कवि रसखान के संदर्भ में इस कथन की चर्चा कीजिए ।
- 'सवैये' कंठस्थ करके उनका सस्वर पठन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- रसखान के अन्य 'सवैये' छात्रों को बताइए ।
- रसखान द्वारा रचित सौंदर्य के कुछ सवैयों की सूरदास के बाल-सौंदर्य एवं कृष्ण-भक्ति के पदों से तुलना करवाइए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4 एक प्रश्न : चार उत्तर

श्री प्रकाश

(जन्म : सन् 1890 ई., निधन : सन् 1971 ई.)

श्री प्रकाश हिन्दी के जाने माने साहित्यकार हैं । उन्होंने अपनी लेखनी के द्वारा राष्ट्र-भक्ति सांस्कृतिक उत्थान, सामाजिक उत्थान एवं सम-सामयिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है । उनकी भाषा सरल एवं सहज है । उन्होंने निबंध, लेख, संस्मरण, जीवनी पर भी अपनी कलम चलाई है । छोटी-छोटी बातों पर गहरा चिंतन उनके साहित्य में देखने मिलता है ।

प्रस्तुत पाठ में श्री प्रकाश द्वारा पूछे गये एक ही प्रश्न का उत्तर चार महानुभावों ने अपने-अपने ढंग से दिये हैं । हमारा देश तभी उन्नति कर सकता है जब देश का प्रत्येक नागरिक पूर्णतः ईमानदारी, लगन एवं निष्ठा के साथ अपना छोटे-से-छोटा कार्य करेगा । यही चारों महानुभावों के द्वारा दिये गये उत्तरों का निष्कर्ष है ।

सबको ही कुछ न कुछ खब्त होता है । मुझे भी कई बातों का खब्त है । उनमें एक यह है कि जब किसी विदेशी से मेरी मित्रता हो जाती है और उन्हें सहृदय पाता हूँ साथ ही यह समझता हूँ कि हमारे देश में बहुत दिनों से रहने के कारण वे पर्याप्त अनुभव भी प्राप्त कर चुके हैं तो उनके किसी सुअवसर पर मैं पूछता हूँ – 'आप कृपाकर यह बतलावें कि क्या कारण है कि हमारे देश में इतने विशेष पुरुषों के रहते हुए, इतने बड़े-बड़े आंदोलनों के होते हुए भी देश कुछ उन्नति नहीं कर रहा है ? ऐसा मालूम होता है कि हम ज्यों के त्यों पड़े हुए हैं ।' अवश्य ही हमारे मित्र इससे चकित होते हैं, उत्तर देते संकोच करते हैं और शिष्टता के नाते क्षमा चाहते हैं । पर मैं उन्हें छोड़ता नहीं और उनको उत्तर देने के लिए बाध्य करता हूँ ।

मेरे पहले मित्र एक वृद्ध ईसाई पादरी हैं । वे 36 वर्ष से भारत में ईसाई-मत के प्रचार में तो उतना नहीं, पर सपत्नीक देश के दरिद्र नर-नारियों की सामाजिक सेवा में लगे रहे हैं । मेरे हृदय में उनके लिए बड़ा सत्कार और प्रेम है । उनका उत्तर थोड़े में यह है कि, 'तुम लोग अपने काम में गर्व नहीं लेते ।' विस्तार से उन्होंने बताया कि यहाँ पर जब किसी को कोई नौकरी चाहिए तो अतिशयोक्तिपूर्ण शब्दों में वह दरखास्त देता है । बहुत ही 'विनय' और 'सम्मान' के साथ वह आरंभ करता है । अंत में प्रतिज्ञा करता है कि यदि स्थान मिल जायेगा, तो वह सदा अपने मालिक की शुभकामना करेगा । पर स्थान मिलते ही वह अपने काम अर्थात् अपनी जीविका के साधन को ही खराब समझने लगता है । अन्य साथियों से मिलकर काम खराब करने के लिए षड्यंत्र रचने लगता है और मालिक की नाकों-दम कर डालता है । और देशों में भी लोग नौकरी की दरखास्त देते हैं । वे साधारण शब्दों में प्रार्थना-पत्र लिखते हैं और जब स्थान मिल जाता है तो इस तरह काम करते हैं जैसे संसार की गति उन्हीं पर निर्भर करती है और वे यदि काम छोड़ दें तो संसार डूब जाय ।

बात इस पादरी मित्र ने बहुत ठीक कही । हमें अपने काम का गर्व नहीं है । दुःख तो इसका है कि मुल्क की परंपरा में अपने काम का गर्व करने का आदेश है । जाति-भेद इसी पर निर्भर करता है । एक जाति का आदमी दूसरी जाति के आदमी द्वारा अपना मान-मर्यादा नहीं चाहता । वह अपनी जातिवालों के बीच अपना उपयुक्त पद और स्थान चाहता है । यह अपनी जीविका के साधनों का बड़ा आदर-सत्कार करता है । बढ़ई अपने औजारों की और दुकानदार अपनी बहियों की निश्चित तिथियों पर पूजा करता हैं । पर लंबी दासता के कारण हम अपनी परंपरा को भूल गये हैं । हम अपना काम छोड़कर दूसरों का काम उठाते हैं । एक काम छोड़कर दूसरा काम लेते रहते हैं । हम अपनी असफलता का दोष दूसरों को देते हैं । स्वयं दुखी रहते हैं, दूसरों को भी दुःखी करते हैं । कोई काम ठीक न कर सकने के कारण अपने को खराब करते हैं, काम को भी खराब करते हैं । 'स्वधर्म निधन श्रेयः' (अपना धर्म या कर्तव्य करते हुए मर जाना श्रेयस्कर है) यह आदेश हम भूल गये । हम अपने काम में गर्व नहीं लेते ।

दूसरे मित्र एक वृद्ध सरकारी कर्मचारी आई.सी.एस. (आई.ए.एस.) के सदस्य हैं । 30 वर्ष से अधिक भारत में गवर्नमेन्टी नौकरी कर हाल में पेन्शन लेकर वापिस स्वदेश गये । न जाने कैसे मेरी उनसे बड़ी मैत्री हो गई । वही सवाल मैंने उनके सामने पेश किया । उत्तर मिला – 'तुम लोग जिम्मेदारी नहीं समझते ।' विस्तार में इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति का समष्टि की तरफ जो कर्तव्य होता है, उसे हम नहीं जानते । जो काम उठाया उसे करना चाहिए – यह गुण हम भूल गये । किसी को किसी पर विश्वास नहीं रह गया है । खाने की दावत हो तो न मेजबान को यह विश्वास कि मेहमान समय से आवेंगे, न मेहमान को विश्वास कि समय पर जाने से खाना मिल जाएगा । न गृहस्थ को विश्वास कि धोबी और दरजी वायदे पर कपड़े दे जायेंगे, न धोबी और दरजी को विश्वास है कि हमें समय से

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दाम मिल जायेंगे । रेलगाड़ी पर चढ़नेवालों को यह विश्वास नहीं कि पहले से बैठे मुसाफिर उन्हें स्थान देंगे, पहले से बैठनेवालों को यह विश्वास नहीं कि नया मुसाफिर धीरे से आकर उचित स्थान लेगा और व्यर्थ का शोर न मचायेगा, न और प्रकार से तंग करेगा । सड़क पर चलनेवालों का यह विश्वास नहीं कि आगे चलनेवाला अपना छाता इस तरह से खोलेगा कि उस की नोक से मेरी आँख न फूट जायगी, या पीछे चलनेवाला मुझे व्यर्थ धक्का न देगा । किसी को किसी पर यह विश्वास नहीं कि केले, नारंगी का छिलका या सूई, पिन आदि इस तरह वह न छोड़ेगा, जिससे दूसरों को कष्ट न पहुँचे । माँगी चीज ठीक हालत में वापिस करेगा, इत्यादि, इत्यादि । हम केवल अपनी तात्कालिक सुविधा देखते हैं, सारे संसार को अपने आराम के लिए बना समझते हैं । दूसरों के प्रति अपने कर्तव्यों का अनुभव नहीं करते । इसी कारण हम सब एक-दूसरे के प्रति अविश्वसनीय और अस्पृश्य हो गये हैं । हम अपना धार्मिक आदर्श भूल गये – 'आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।', 'हम अपनी जिम्मेदारी नहीं समझते ।'

तीसरा व्यक्ति एक स्त्री है । सात-आठ वर्षों से अपने को भारतीय बनाकर बड़े प्रेम और श्रद्धा से, बड़ी तत्परता से वे भारत की सेवा कर रही हैं । असहयोग-आंदोलन में वे जेल भी जा चुकी हैं । कई कारणों से भारतीयों का निकटतम अनुभव उन्हें कई कार्यक्षेत्रों में हुआ है । उनको भी मैंने घेरा । उनका उत्तर था – 'तुम लोग बड़े आलसी हो ।' अर्थात् हम लोगों ने श्रम का महत्त्व ही नहीं पहचाना है । मेहनत करना तो हमने मरभुक्खों का काम समझ रखा है । बड़े लोगों का काम को केवल बैठे रहना है । हम भूल गये कि संसार में जो बड़े हुए हैं, वे सब अथक परिश्रमी रहे हैं । जब हम परिश्रम ही न करेंगे, तो सफलता कैसे पावेंगे ? आरंभशूर तो हम हैं, पर हममें लगन नहीं है । इसी कारण न हम अपने रोजगार में और न अपने गृहस्थी संबंधी या सार्वजनिक कार्य में सफल होते हैं । रोने, पीटने, झींकने में जितना समय हम बिताते हैं, उतना यदि काम में बितायें तो हम देश की और अपनी काया पलट सकते हैं । 'हम लोग बड़े आलसी हैं ।'

चौथा व्यक्ति एक बड़ी वृद्धा स्त्री थी । वे संसार में प्रसिद्ध थीं । मेरे कुल से उनका बड़ा प्रेम था । मेरी पितामही तुल्य थीं । उनको भी मैंने तंग किया – 'आपने तो अपने 40 वर्ष हमारे देश की विविध सेवाओं में लगा दिये हैं । आपको बतलाना ही होगा कि हमारा क्या दोष है, जिससे हमारी उन्नति नहीं होती ?' थोड़े में उनका उत्तर था – 'तुम लोगों में उदारता नहीं है । विस्तार से उदाहरण दे-देकर उन्होंने बतलाया कि भारत में लोग दूसरों को आगे नहीं बढ़ाते । स्वयं को ही आगे रहना चाहते हैं ।' गुणी नवयुवकों को अपनी योग्यता दिखलाने का मौका नहीं देते । उनके मरने के बाद उनका काम ही खराब हो जाता है । वास्तव में वृद्धा की बातें ठीक थीं । अंत तक पिता पुत्र को घर का काम नहीं बतलाता । कितने ही कुटुंब इसके कारण नष्ट हो गये । बड़े-बड़े गुणी अपनी विद्या साथे लेकर मर गए । इस कारण कितने ही वैज्ञानिक आविष्कार, औषधियाँ आदि लुप्त हो गईं । पेशों में इतनी प्रतिद्वंद्विता हो गई है कि बड़ा छोटे को काम नहीं सिखलाता । सार्वजनिक जीवन में तो इतनी बीभत्स दीख पड़ती है कि चित्त व्याकुल हो जाता है । कितना काम बिगड़ता है, इसकी तरफ ध्यान नहीं दिया जाता ।

सारांश यह है कि ठीक समय से उपयुक्त काम न उठाकर और अपने काम में गर्व न रखकर, उसके करने में दूसरों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को न अनुभव कर, अपने काम की एक-एक तफसील को समझकर, उसमें दत्तचित्त होकर परिश्रम के साथ उसे स्वयं न कर और उदाहरता के साथ उसे दूसरों को न सिखाकर हम अपना नाश कर रहे हैं । चारों मित्रों ने एक-एक अंश हमारे दोषों का बतलाया । उन सबको मिलाकर मैंने उत्तर पूर्ण कर दिया । यदि और भी सूत्रवत् सत्य कोई जानना चाहे तो मैं कहूँगा कि हम नागरिक कर्तव्यों और अधिकारों को भूल गये हैं । बड़े-से-बड़े नेता के होते हुए भी हम साधारण-जन उनसे कोई लाभ नहीं उठा रहे हैं । हम उनकी मूर्ति की स्थापना करते हैं, उनका जय जयकार पुकारते हैं और इसी में अपने धर्म की इतिश्री समझते हैं । हम उनके कहे अनुसार चलते नहीं; आदेशों के अनुरूप अपने जीवन का संगठन नहीं करते । यही कारण है कि हम वहीं के वहीं है । संसार वेग से चला जा रहा है, हम तटस्थ हैं, सामने सब कुछ है, जो आकर हमारा काम कर दे । दूसरा क्या कर सकता है, जब हम खुद कुछ नहीं करना चाहते ? यदि हम ख्याल रखें कि देश-भक्ति केवल व्याख्यान देने में नहीं है, किन्तु ठीक तरह से काम करने में है, यदि हम यह अनुभव कर सकें कि हम कर्तव्य ठीक प्रकार करते हैं तो हम किसी भी देश-भक्त से कम नहीं हैं – और बहुत से बड़े लोग हैं जो इस नाम से प्रसिद्ध किये गये हैं – यद्यपि हमारा कार्यक्षेत्र संकुचित ही क्यों न हो, हम केवल धोबी, दरजी, किसान, मजदूर, दुकानदार, पहरेदार, गाँव-शिक्षक ही क्यों न हों – तो हमारा देश एकदम जाग उठेगा, उसके एक-एक अंग में जान आ जायेगी । हमारे व्यक्तिगत जीवन के संगठित होते ही सारा देश और मनुष्य-समाज स्वत: संगठित हो जायेगा । देश को केवल उपयुक्त नागरिकों की आवश्यकता है, किसी दूसरे प्रकार के मनुष्य या वस्तु की नहीं है, नहीं है, नहीं है ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

खब्त धुन **बाध्य** विवश **दरखास्त** आवेदन, प्रस्ताव **दासता** गुलामी **दावत** भोज का आमंत्रण, निमंत्रण **मेजबान** यजमान **इतिश्री** समाप्ति **मरभुक्खा** ज्यादा भूखा, जो भूख से मर रहा है ।

मुहावरा

नाक में दम करना जीना हराम कर देना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) प्रत्येक नागरिक को पूर्णत: लगन एवं निष्ठा के साथ कार्य करना चाहिए ।

(अ) ईमानदारी (ब) बेईमानी (क) जल्दबाजी (ड) धीरे-धीरे

(2) वृद्ध ईसाई पादरी ने कहा -

(अ) तुम बड़े आलसी हो । (ब) तुम भिखारी हो ।

(क) तुम ईमानदार बनो । (ड) तुम लोग अपने काम में गर्व नहीं लेते ।

(3) भगवान की मूर्ति की स्थापना करने के बाद -

(अ) उनके कहे अनुसार चलना चाहिए । (ब) मूर्ति की पूजा करनी चाहिए ।

(क) प्रचार-प्रसार करना चाहिए । (ड) पुजारीजी के आदेश का पालन करना चाहिए ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) लेखक को किस बात की खब्त है ?

(2) कुटुंब व्यवस्था किस प्रकार नष्ट हो गई ?

(3) हम किसकी जय जयकार करते हैं ?

(4) सच्चा देशभक्त कौन हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) हमारे देश में किस प्रकार जागृति आ सकती है ?

(2) मनुष्य समाज को संगठित करने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

(3) 'तुम लोगों में उदारता नहीं हैं' - कथन का आशय स्पष्ट कीजिए ।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) ईसाई पादरी ने लेखक के प्रश्न का उत्तर किस प्रकार दिया ?

(2) वृद्ध सरकारी कर्मचारी ने लेखक के प्रश्न का उत्तर किन-किन उदाहरणों से समझाया ?

(3) एक बड़ी वृद्धा स्त्री ने प्रश्न का उत्तर किस प्रकार दिया ?

(4) देश को कैसे नागरिकों की आवश्यकता है और क्यों ?

योग्यता-विस्तार

- अपना देश किस प्रकार उन्नति कर सकता है ? - इस विषय पर कक्षा में अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'हम नागरिक के मूल कर्तव्यों और अधिकारों को भूल गए हैं ।' - इस विषय पर चर्चासभा का आयोजन कीजिए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5 मीरा के पद

मीराबाई

(जन्म : सन् 1498 ई., निधन : सन् 1563 ई.)

श्रीकृष्ण प्रेम की अनन्य गायिका मीरा का जन्म मेड़ता (जि. जोधपुर) के निकट 'कुड़की' नामक गाँव में राव रतनसिंह राठौर के यहाँ हुआ था । दो वर्ष की उम्र में उनके दादा दूदाराव उन्हें मेड़ता ले गए क्योंकि मीरा की माँ का देहावसान हो गया था । दूदाराव स्वयं वैष्णव भक्त थे । उस परिवेश के प्रभावस्वरूप मीरा बचपन से ही कृष्ण-भक्ति की ओर उन्मुख हो गईं । इनका ब्याह राणा सांगा के जयेष्ठ पुत्र कुँवर भोजराज के साथ हुआ था । विवाह के सात वर्ष बाद भोजराज का स्वर्गवास हो गया । अब वे अपना अधिकांश समय सत्संग एवं पूजा पाठ में बिताने लगीं । पारिवारिक यातनाओं से व्यथित होकर विरक्त हुई मीरा तथा पहले वृंदावन और बाद में द्वारिका चली गई, जहाँ जीवन के अंतिम समय तक रहीं । मीरा रचित पद 'मीरा पदावली' के नाम से प्रकाशित रूप में प्राप्त हैं । अपने आराध्य 'गिरिधर गोपाल' की विलक्षण रूपछटा के प्रति उनकी अनन्य आसक्ति अनेक भावधाराओं में बह चली है ।

यहाँ संकलित पहले पद में कृष्ण प्रेम दीवानी मीरा समग्र संसार को छोड़कर साधु-संतों के साथ रहकर कृष्ण-भक्ति में लीन हो जाती है और लौकिक मोह का त्याग करके अपने आराध्य श्रीकृष्ण के अनन्य भक्तिभाव में डूब जाती है । दूसरे पद में मीरा ने श्रीकृष्ण नामरूपी रत्न की प्राप्ति से उत्पन्न असीम आनंद को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है और सत्गुरु को पाकर भवसागर पार उतरने का आनंद कवयित्री को भाव-विभोर कर देता है । तीसरे पद में कृष्ण -भक्ति में मतवाली मीरा ने संसार त्याग की चरमसीमा पर पहुँचकर 'गिरधरनागर' की शरणागति को स्वीकार किया है ।

---

(1)

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई ।
दूसरा न कोई साधो सकल लोक जोई ॥
भाई छोड्या बंधु छोड्या छोड्या सगा सोई ।
साधुसंग बैठि-बैठि लोकलाज खोई ॥
भगत देख राजी हुई जगत देखि रोई ।
अँसुवन जल सींच-सींच प्रेम बेलि बोई ॥
दधि मथि घृत काढ़ि लियो डार दई छोई ।
राणा विष को प्यालो भेज्यो पीय मगन होई ॥
अब तो बात फैल गई जाणे सब कोई ।
'मीरा' रामलगन लागी होणी होइ सो होई ।

(2)

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सत्गुरु कर किरपा अपणायो ।
जनम-जनम की पूँजी पाई जग में सबै खोवायो ।
खरचै नहिं, कोई चोर न लेवै दिन-दिन बढ़त सवायो ।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु भवसागर तरि आयो ।
मीरा के प्रभु गिरिधरनागर हरखि-हरखि जस गायो ।

(3)

पग घुँघरू बांध मीरा नाची रे, पग घुँघरू....
लोग कहैं मीरा भई बावरी, सास कहै कुलनासी रे ।
जहर का प्याला राणाजी ने भेजा, पीवत मीरा हाँसी रे ।
मैं तो अपने नारायण की, हो गई आपहि दासी रे ।
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, बेग मिलो अविनासी रे ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

गिरधर गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले **गोपाल** गायों के पालक – श्रीकृष्ण **दधि** दही **घृत** घी **राम रतन धन** राम रूपी रत्न का धन **अमोलक** अमूल्य **अपणायो** अपनाया **खेवटिया** नाव चलानेवाला, नाविक **हरख-हरख** प्रसन्न होकर **बावरी** पागल **कुलनासी** कुल का नाश करनेवाली **छोई** छाछ **पूँजी** धन, संपत्ति

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) मीराबाई किसकी भक्ति करती थी ?

(2) मीराबाई को कौन-सा धन मिल गया है ?

(3) पैरों मे घुँघरू देखकर मीरा की सास ने उन्हें क्या कहा ?

(4) मीरा को विष का प्याला किसने भेजा ?

(5) किसकी कृपा से मीरा ने 'राम रतन धन' पाया है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) गिरधर गोपाल की भक्ति करते हुए मीराबाई ने किस-किसका त्याग किया ?

(2) मीरा के 'राम रतन धन' की क्या विशेषताएँ हैं ?

(3) मीरा इस भवसागर को किस प्रकार पार करना चाहती हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) भक्ति के मार्ग में कौन-सा संकट आया ? उससे वह कैसे पार हुईं ?

(2) मीरा के पदों के आधार पर सत्गुरु की महिमा का वर्णन कीजिए ।

(3) भक्ति में लीन मीरा को लोग क्या-क्या कहते थे ? और क्यों ?

4. उचित जोड़े बनाइए :

'अ'	'ब'
(1) भगत देख राजी हुई	(1) किरपा कर अपणायो ।
(2) मीरा के प्रभु गिरधरनागर	(2) जगत देखि रोई ।
(3) वस्तु अमोलक दी मेरे सत्गुरु	(3) हरखि हरखि जस गायो ।
	(4) भवसागर तरि आयो ।

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) जनम-जनम की पूँजी पाई जग में सबै खोवायौ ।

(2) सत् की नाव खेवटिया सत्गुरु भवसागर तरि आयौ ।

योग्यता-विस्तार

- 'पायोजी मैंने राम रतन धन पायो' पद कंठस्थ कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- गुजरात में मीरा के लोकप्रिय भजनों की ओड़ियो या विड़ियो कैसेट कक्षा में सुनाइए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6 कालिदास का प्राणीप्रेम

मोहन राकेश

(जन्म : सन् 1925 ई., निधन : सन् 1972 ई.)

मोहन राकेश का जन्म पंजाब के अमृतसर में हुआ था । इनका असली नाम तो मदन मोहन गुगलानी था । उनकी दीदी ने मदन मोहन राकेश नाम रखा था । बाद में मोहन राकेश नाम स्थायी हुआ । मोहन राकेश हिन्दी साहित्य के अच्छे नाट्यकार, उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में अपना नाम अमर कर गये हैं । इन्होंने डायरी, संस्मरण, जीवनी, निबंध, पत्रकारिता तथा अनुवाद के क्षेत्र में भी ठोस योगदान दिया है । नाटक में 'आषाढ़ का एक दिन' बहुत ही विख्यात और चर्चित नाटक रहा है ।

नाटक : 'आधे अधूरे', 'लहरों के राजहंस', 'आषाढ़ का एक दिन', **एकांकी :** 'अंडे के छिलके', 'बीज नाटक', 'आईने के सामने' एवं 'सारा आकाश', 'आखरी चट्टान तक' उनकी गद्य रचनाएँ हैं ।

यहाँ पर 'आषाढ़ का एक दिन' से केवल एक अंश ही 'कालिदास का प्राणी प्रेम' शीर्षक से प्रस्तुत किया गया है । नाटक के दो प्रमुख पात्र हैं, मल्लिका और कालिदास । कालिदास बाण से घायल हरिणशावक को बचा लेता है । नाट्यकार ने यह कहना चाहा है कि अगर हम प्राण दे नहीं सकते तो किसी का प्राण लेने का अधिकार भी हमें नहीं है । 'मारने वाले से बचानेवाला महान है ।' वस्तुत: दन्तुल ने शिशु हरिणशावक को घायल कर दिया है इसीलिए इस प्रकार का व्यंग-बाण लेखक उस पर ही चलाते हैं । अत: यहाँ पर जीवदया की बात बताकर कालिदास का प्राणीप्रेम प्रकट किया है । पशु-पक्षी हमारे मित्र हैं । अत: उनका हनन नहीं होना चाहिए ।

पर्यावरण की रक्षा के लिए पशु-पक्षियों का अनन्य महत्त्व है । मानव जीवन विकास में प्राणियों का बड़ा योगदान है । प्राणी मानव के साथी हैं इसीलिए हमें उनका रक्षण करना चाहिए ।

(कालिदास एक हरिणशावक को बाँहों मे लिये पुचकारता हुआ आता है । हरिणशावक के शरीर से लहू टपक रहा है ।)

कालिदास : हम जिएँगे हरिणशावक ! जिएँगे न ? एक बाण से आहत होकर हम प्राण नहीं देंगे । हमारा शरीर कोमल है तो क्या हुआ ? हम पीड़ा सह सकते हैं । एक बाण प्राण ले सकता है तो उँगलियों का कोमल स्पर्श प्राण दे भी सकता है । हमें नये प्राण मिल जाएँगे । हम कोमल आस्तरण पर विश्राम करेंगे । हमारे अंगों पर घृत का लेप होगा । कल हम फिर वनस्थली में घूमेंगे । कोमल दूर्वा खाएँगे न ? खाएँगे न ?

(मल्लिका अपने को सहेजकर द्वार की ओर जाती है ।)

मल्लिका : यह आहत हरिणशावक ?... यहाँ ऐसा कौन व्यक्ति है जिसने इसे आहत किया ? क्या दक्षिण की तरह यहाँ भी... ?

कालिदास : आज गाँव-प्रदेश में कई नयी आकृतियाँ देख रहा हूँ ।

(झरोखे के पास जाकर आसन पर बैठ जाता है ।)

राज्य के कुछ कर्मचारी आये हैं ।

(हरिणशावक को वक्ष से सटाकर थपथपाने लगता है ।)

हम सोएँगे ? हाँ, हम थोड़ी देर सो लेंगे तो हमारी पीड़ा दूर हो जाएगी । परंतु उससे पहले हमें थोड़ा दूध पी लेना है । मल्लिका थोड़ा दूध हो तो किसी भाजन में ले आओ ।

मल्लिका : माँ ने दूध औटाकर रखा है । देखती हूँ ।

(चूल्हे के निकट रखे बरतनों के पास जाकर देखने लगती है ।)

अभी-अभी दो-तीन राज कर्मचारियों को हमने घोड़े पर जाते देखा है । माँ कहती है कि जब भी ये लोग आते हैं, कोई न कोई अनिष्ट होता है । वर्षा के रोमांच के बाद मुझे यह सब बहुत विचित्र लगा ।

(दूध का बरतन उठाकर दूध खुले बरतन में उड़ेलने लगती है ।)

माँ आज बहुत रुष्ट है ।

(कालिदास हरिणशावक को बाँहों से झुलाने लगता है ।)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कालिदास : हम पहले से सुखी हैं । हमारी पीड़ा धीरे-धीरे दूर हो रही है । हम स्वस्थ हो रहे हैं । न जाने इसके रूई जैसे कोमल शरीर पर उससे बाण छोड़ते बना कैसे ? वह कुलांच भरता मेरी गोदी में आ गया । मैंने कहा, तुझे वहाँ ले चलता हूँ जहाँ तुझे अपनी माँ की-सी आँखें और उसका-सा ही स्नेह मिलेगा ।
(मल्लिका की ओर देखता है । मल्लिका दूध लिए पास आ जाती है ।)

मल्लिका : सच, माँ आज बहुत रुष्ट हैं । माँ को अनुमान हो गया कि वर्षा में मैं तुम्हारे साथ थी, नहीं तो इस तरह भीगकर न आती । माँ को अपवाद की बहुत चिंता रहती है ।

कालिदास : दूध मुझे दे दो और इसे बाँहों में ले लो ।
(दूध का भाजन उसके हाथ से ले लेता है । मल्लिका हरिणशावक को बाँहों में लेकर उसका मुँह दूध के निकट ले जाती है । कालिदास भाजन को उसके और निकट कर देता है ।) हम दूध नहीं पीएँगे ? नहीं हम ऐसा हठ नहीं करेंगे । हम दूध अवश्य पीएँगे ।
(राजपुरुष दन्तुल ड्योढ़ी से आकर द्वार के पास रुक जाता है । क्षणभर वह उन्हें देखता रहता है । कालिदास हरिण को मुँह से दूध पिला देता है ।)
ऐसे...ऐसे ।
(दन्तुल बढ़कर उनके निकट आता है ।)

दन्तुल : दूध पिलाकर इसके कोमल मांस को और कोमल कर लेना चाहते हो ?
(कालिदास और मल्लिका चौंककर उसे देखते हैं । मल्लिका हरिणशावक को लिये थोड़ा पीछे हट जाती है । कालिदास दूध का भाजन आसन पर रख देता है ।)

कालिदास : जहाँ तक मैं जानता हूँ हम लोग परिचित नहीं हैं । तुम्हारा एक अपरिचित घर में आने का साहस कैसे हुआ ?
(दन्तुल एक बार मल्लिका की ओर देखता है फिर कालिदास की ओर ।)

दन्तुल : कैसी आकस्मिक बात है कि ऐसा ही प्रश्न मैं तुमसे पूछना चाहता था । हमारा कभी का परिचय नहीं फिर भी मेरे बाण से आहत हरिण को उठा ले आने में तुम्हें संकोच नहीं हुआ ? यह तो कहो कि द्वार तक रक्त बिन्दुओं के चिह्न बने हैं, अन्यथा इन बादलों से घिरे दिनों में मैं तुम्हारा अनुसरण कर पाता ?

कालिदास : देख रहा हूँ कि तुम इस प्रदेश के निवासी नहीं हो ।
(दन्तुल व्यंग्यात्मक हँसी हँसता है ।)

दन्तुल : मैं तुम्हारी दृष्टि की प्रशंसा करता हूँ । मेरी वेश-भूषा ही इस बात का परिचय देती है कि मैं यहाँ का निवासी नहीं हूँ ।

कालिदास : मैं तुम्हारी वेश-भूषा को देखकर नहीं कह रहा ।

दन्तुल : तो क्या मेरे ललाट की रेखाओं को देखकर ? जान पड़ता है चोरी के अतिरिक्त सामुद्रिक का भी अभ्यास करते हो ।
(मल्लिका चोट खायी-सी कुछ आगे आती है ।)

मल्लिका : तुम्हें ऐसा लांछन लगाते लज्जा नहीं आती ?

दन्तुल : क्षमा चाहता हूँ देवि ! परंतु यह हरिणशावक, जिसे बाँहों में लिये हैं, मेरे बाण से आहत हुआ है । इसलिए यह मेरी संपत्ति है । मेरी संपत्ति मुझे लौटा तो देंगी ?

कालिदास : इस प्रदेश में हरिणों का आखेट नहीं होता राजपुरुष । तुम बाहर से आये हो, इसलिए इतना ही पर्याप्त है कि हम इसके लिए तुम्हें अपराधी न मानें ।

दन्तुल : तो राजपुरुष के अपराध का निर्णय गाँववासी करेंगे । ग्रामीण युवक, अपराध और न्याय का शब्दार्थ भी जानते हो ।

कालिदास : शब्द और अर्थ राजपुरुषों की संपत्ति है, जानकर आश्चर्य हुआ ।

दन्तुल : समझदार व्यक्ति जान पड़ते हो । फिर भी नहीं जानते कि राजपुरुषों के अधिकार बहुत दूर तक आते हैं । मुझे देर हो रही है । यह हरिणशावक मुझे दे दो ।

कालिदास : यह हरिणशावक इस पार्वत्य-भूमि की संपत्ति है, राज-पुरुष ! और इसी पार्वत्य भूमि के निवासी हम इसके सजातीय हैं । तुम यह सोचकर भूलकर रहे हो कि हम इसे तुम्हारे हाथ में सौंप देंगे । मल्लिका, इसे अंदर ले जाकर तल्प पर या किसी आस्तरण पर...(अम्बिका सहसा अंदर से आती है ।)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अम्बिका : इस घर के तल्प और आस्तरण हरिणशावकों के लिए नहीं है ।

मल्लिका : तुम देख रही हो माँ...!

अम्बिका : हाँ, देख रही हूँ । इसलिए तो कह रही हूँ । तल्प और आस्तरण मनुष्यों के सोने के लिए हैं, पशुओं के लिए नहीं ।

कालिदास : इसे मुझे दे दो, मल्लिका !

(दूध का भाजन नीचे रख देता है और बढ़कर हरिणशावक को अपनी बाँहों में ले लेता है ।) इसके लिए मेरी बाँहों का आस्तरण ही पर्याप्त होगा । मैं इसे घर ले जाऊँगा । (द्वार की ओर चल देता है ।)

दन्तुल : और राजपुरुष दन्तुल तुम्हें ले जाते देखता रहेगा ।

कालिदास : यह राजपुरुष की रुचि पर निर्भर करता है ।

(बिना उसकी ओर देखे ड्योढ़ी में चला जाता है ।)

दन्तुल : राजपुरुष की रुचि-अरुचि क्या होती है, संभवत: इसका परिचय तुम्हें देना आवश्यक होगा ।

(कालिदास बाहर चला जाता है । केवल उसका शब्द ही सुनाई देता है ।)

कालिदास : संभवत: ।

दन्तुल : संभवत: ?

(तलवार की मूठ पर हाथ रखे उसके पीछे जाना चाहता है । मल्लिका शीघ्रता से द्वार के सामने खड़ी हो जाती है ।)

मल्लिका : ठहरो राजपुरुष ! हरिणशावक के लिए हठ मत करो । तुम्हारे लिए प्रश्न अधिकार का है, उनके लिए संवेदना का । कालिदास नि:शस्त्र होते हुए भी तुम्हारे शस्त्र की चिंता नहीं करेंगे ।

दन्तुल : कालिदास ? तुम्हारा अर्थ है कि मैं जिनसे हरिणशावक के लिए तर्क कर रहा था वे कवि कालिदास हैं ?

मल्लिका : हाँ-हाँ । परंतु तुम यह कैसे जानते हो कि कालिदास कवि हैं ?

दन्तुल : कैसे जानता हूँ ! उज्जयिनी की राज्यसभा का प्रत्येक व्यक्ति 'ऋतुसंहार' के लेखक कवि कालिदास को जानता है ।

मल्लिका : उज्जयिनी की राज्यसभा का प्रत्येक व्यक्ति उन्हें जानता है ?

दन्तुल : सम्राट ने स्वयं ऋतुसंहार पढ़ा और उसकी प्रशंसा की है । इसलिए आज उज्जयिनी का राज्य 'ऋतुसंहार' के लेखक का सम्मान करना और उन्हें राजकवि का सम्मान देना चाहता है । आचार्य वररुचि इसी उद्देश्य से उज्जयिनी से यहाँ आए हैं ।

(मल्लिका सुनकर स्तम्भित-सी हो रहती है ।)

मल्लिका : उज्जयिनी का राज्य उन्हें सम्मान देना चाहता है ? राजकवि का आसन.... ?

दन्तुल : मुझे खेद है मैंने उनके साथ अशिष्टता का व्यवहार किया । मुझे जाकर उनसे क्षमा माँगनी चाहिए ।

शब्दार्थ

हरिणशावक हिरण का बच्चा, मृगछौना **आस्तरण** बिछौना, गद्दा **कुलांच** चौकड़ी भरना **घृत:** घी **भाजन** पात्र, बरतन **अनुसरण** पीछे-पीछे चलना **सामुद्रिक** हस्तरेखा विद्या, ज्योतिष **आखेट** शिकार **पार्वत्य** पर्वतीय **अपवाद** निंदा **व्यथित** दु:खी **तल्प** शय्या, अटारी

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) हरिणशावक इनमें से किसके बाणों से घायल हुआ था ?

(अ) कालिदास (ब) मल्लिका (क) दन्तुल (ड) अम्बिका

(2) कालिदास हरिणशावक के अंगों पर .... का लेप लगाना चाहता है ।

(अ) हवाई (ब) तेल (क) मरहम (ड) घृत

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(3) 'मेरी वेश-भूषा ही इस बात का परिचय देती है कि मैं यहाँ का निवासी नहीं हूँ ।' - यह वाक्य कौन किस से कहता है ?

(अ) कालिदास दन्तुल से (ब) दन्तुल कालिदास से (क) मल्लिका दन्तुल से (ड) दन्तुल मल्लिका से

(4) उज्जयिनी की राज्यसभा का प्रत्येक व्यक्ति कालिदास को किसलिए जानता है ?

(अ) 'ऋतुसंहार' के लिए (ब) 'गीतसंहार' के लिए

(क) 'संगीतसंहार' के लिए (ड) 'नाट्यसंहार' के लिए

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कालिदास कौन थे ?

(2) हिरणशावक किसके बाणों से घायल हुआ था ?

(3) कालिदास हिरण को कहाँ ले गये ?

(4) अंत में दन्तुल ने कालिदास को कैसे पहचाना ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) माँ के रुष्ट होने के पीछे मल्लिका क्या अनुमान करती है ?

(2) दन्तुल कौन था ? वह मल्लिका के घर कैसे पहुँचा ?

(3) मल्लिका ने दन्तुल को हरिणशावक के लिए हठ न करने के लिए क्यों कहा ?

(4) कालिदास दन्तुल को अपराधी न मानने के लिए क्या तर्क देता है ?

(5) उज्जयिनी की राजसभा कवि कालिदास का सम्मान किस तरह करना चाहती है ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) घायल हरिणशावक को बचाने के लिए कालिदास ने क्या-क्या किया ?

(2) कालिदास हरिणशावक को क्यों बचाना चाहते थे ?

(3) हरिणशावक के लिए कालिदास और दन्तुल के बीच में हुए संवाद को अपने शब्दों में लिखिए ?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) तुम्हारे लिए प्रश्न अधिकार का है, उनके लिए संवेदना का।

(2) यह हरिणशावक पार्वत्य-भूमि की संपत्ति है, राजपुरुष और इसी पार्वत्य-भूमि के निवासी हम इसके सजातीय हैं ।

6. शब्द का अर्थ बताकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

आस्तरण, रुष्ट, दूर्वा, आखेट

7. विशेषण बनाइए :

शरीर, गाँव, प्रदेश, दिन, पीड़ा

8. भाववाचक संज्ञा बनाइए :

कोमल, बहुत, रुष्ट

9. दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए :

लहू, हरिण, ऋतु, दूध

10. सविग्रह समास भेद बताइए :

अनुसरण, हिरण शावक, प्रतिदिन, नि:शस्त्र

योग्यता विस्तार

- 'जीवदया' पर निबंध लिखिए ।
- इस नाट्यांश का वर्गखंड में मंचन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- कालिदास के नाटकों में से किसी एक नाटक की जानकारी विद्यार्थियों को दें ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7 जन्मभूमि

सुमित्रानंदन पंत
(जन्म : सन् 1900 ई., निधन : सन् 1977 ई.)

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत का जन्म उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के कौसानी गाँव में हुआ था । उनकी प्रारंभिक शिक्षा कौसानी और अल्मोड़ा में हुई । मैट्रिक उत्तीर्ण करके आगे की पढ़ाई के लिए पहले वाराणसी फिर प्रयाग गये । सन् 1921 के गाँधीजी के असहयोग आंदोलन के कारण पढ़ाई छोड़ दी । सन् 1943-44 ई. में उदयशंकर के नृत्यकेन्द्र से संबंध और 'कल्पना' चित्र के निर्माण में सहयोग, सन् 1950 से 1957 तक 'आकाशवाणी' में हिन्दी सलाहकार रहे । छायावाद के शलाका-पुरुष, प्रकृति सौंदर्य के अनुपम चित्रकार, काव्यभाषा के समर्थ शिल्पी प्रौढ़ विचारक-कवि को इनके 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी से 'लोकायतन' पर सोवियत भूमि नेहरू पारितोषिक समिति से और 'चिदंबरा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिले हैं । इनकी कविता छायावाद मार्क्सवाद, अरविंददर्शन, वैदिक चिंतन के सोपानों से बढ़ती हुई विश्वचेतना तक पहुँचती है । उन्हें पद्मविभूषण भी मिला है । 'वीणा', 'ग्रंथि', 'पल्लव', 'गुंजन', 'युगान्त युगवाणी', 'मधुज्वाल', 'ग्राम्या', 'युगपथ', 'कला' और 'बूढ़ा चाँद' आदि प्रमुख काव्य लिखे हैं । इनके अलावा नाटक, नीतिनाट्य, कहानी और उपन्यास भी लिखे हैं ।

जन्मभूमि काव्य में जन्मभूमि का महत्त्व बताते हुए पंतजी ने प्रकृति का गौरव गान किया है । भारत का वैभवशाली इतिहास, प्रकृति, महापुरुषों का वर्णन किया है । हमारे नारीरत्नों की बात बताते हुए पंतजी ने वसुधैव कुटुंबकम् की भावना साकार की है ।

जननी जन्मभूमि प्रिय अपनी, जो स्वर्गादपि चिर गरीयसी
जिसका गौरव भाल हिमाचल,
स्वर्ण धरा हँसती चिर श्यामल,
ज्योतिग्रथित गंगा यमुना जल,
वह जन जन के हृदय में बसी !

जिसे राम लक्ष्मण औ सीता
बना गए पद धूलि पुनीता,
जहाँ कृष्ण ने गाई गीता
बजा अमर प्राणों में वंशी !

सावित्री राधा-सी नारी
उतरीं आभादेही प्यारी,
शिला बनी तापस सुकुमारी
जड़ता बनी चेतना सरसी !

शांति निकेतन जहाँ तपोवन
ध्यानावस्थित हो ऋषि मुनि गण,
चिद् नभ में करते थे विचरण
जहाँ सत्य की किरणें बरसीं !

आज युद्धजर्जर जगजीवन
पुन: करेगा मंत्रोच्चारण,
वह वसुधैव बना कुटुंबकम्
उसके मुख पर ज्योति नवल-सी !
जननी जन्मभूमि प्रिय अपनी, जो स्वर्गादपि चिर गरीयसी ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

गरीयसी श्रेष्ठ **ज्योतिग्रथित** ज्योति से गुँथा हुआ **आभा** प्रकाश **जर्जर** जीर्णशील **वसुधा** पृथ्वी **स्वर्गादपि** स्वर्ग से भी **चिद्** चेतना, ज्ञान

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) जननी जन्मभूमि .... से महान है ।

(अ) पृथ्वी (ब) आकाश (क) स्वर्ग (ड) नर्क

(2) 'भारत का भाल' .... है ।

(अ) हिमाचल (ब) विंध्याचल (क) माउन्ट आबू (ड) गिरनार

(3) गीता का गान करनेवाले .... थे ।

(अ) वाल्मिकी (ब) द्रोणाचार्य (क) अर्जुन (ड) कृष्ण

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) जन-जन के हृदय में कौन-सी नदियाँ बसी हैं ?

(2) कृष्ण ने किस ग्रंथ की रचना की ?

(3) 'जन्मभूमि' में भारत की किन नारियों की बात बताई गई है ?

(4) शांतिनिकेतन क्या है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) हिमालय के बारे में जन्मभूमि कविता में क्या कहा है ?

(2) कवि ने धरती के गुनगान कैसे गाये हैं ?

(3) शांति, सत्य, अहिंसा का प्रचार करनेवाले 'भारतीय महापुरुषों' के नाम बताइए ।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने जन्मभूमि को स्वर्ग से महान क्यों बताया है ?

(2) 'जन्मभूमि' में भारत भूमि की क्या-क्या विशेषताएँ बताई गई है ?

(3) कविता के आधार पर भारतीय नारी की महानता का वर्णन कीजिए ।

(4) भारत 'विश्व शांतिदूत' क्यों कहलाता है ?

5. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) जिसका गौरव भाल हिमाचल ।

(2) जड़ता बनी चेतना सरसी !

(3) वह वसुधैव बना कुटुंबकम् ।

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द दीजिए :

जननी, ज्योति, शिला, विचरण, गौरव, पुनीत

योग्यता-विस्तार

- इस गीत का सहगान कीजिए ।
- बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय रचित 'वंदेमातरम्' गीत याद कीजिए और उनकी तुलना इस काव्य से कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'अनेकता में एकता' विषय पर छात्रों को बताइए ।
- भारत के विभिन्न प्रदेशों के नृत्य पर आधारित एक कार्यक्रम का आयोजन कीजिए ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8 सुधामूर्ति

संकलित

सुधामूर्ति महिलाओं के लिए प्रेरणा मूर्ति है । इस पाठ में सुधामूर्ति ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि स्त्रियों के लिए कोई कार्य असंभव नहीं है । उन्होंने इंजीनियर के रूप में कार्य किया बाद में संशोधन तकनीकी क्षेत्र, चिकित्सा, लेखन के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया । महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में आपका योगदान महत्त्वपूर्ण है ।

इस पाठ में स्त्रियों के लिए कार्यक्षेत्रों की कोई सीमा नहीं है तथा वे हर कार्य में कुशलता प्राप्त कर सकती हैं, इस बात पर ज्यादा जोर दिया है । इस कृति का यह संदेश है कि जाति और लिंग के बीच कोई भेदभाव न रखा जाय ।

अप्रैल 1974 की बात है । बेंगलुरु में गरमी पड़ने लगी थी । भारतीय विज्ञान संस्थान के परिसर में गुलमोहर के बड़े-बड़े वृक्ष लाल रंग का फूलों से लदे झूम रहे थे । कम्प्यूटर विज्ञान की कक्षा समाप्त कर एक छात्रा होस्टल की ओर जा रही थी कि उसकी दृष्टि नोटिस बोर्ड पर लगे एक विज्ञापन पर पड़ी । यह विज्ञापन प्रसिद्ध ओटोमोबाइल कंपनी टेल्को (टाटा) की ओर से नौकरी के इच्छुकों के लिए था । कंपनी को योग्य और परिश्रमी इंजीनियरों की आवश्यकता थी । चौंकानेवाली बात थी छोटे अक्षरों में लिखी अंतिम पंक्ति - महिला उम्मीदवार आवेदन न भेजें ।

उसने एक बार नहीं, दो बार पढ़ा । हाँ, यही तो लिखा था । उसे नौकरी की कोई आवश्यकता नहीं थी क्योंकि उसे विदेश से स्नातकोत्तर परीक्षा के बाद रिसर्च की डिग्री के लिए छात्रवृत्ति मिलने की पेशकश हो चुकी थी । वह स्वयं भी विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहती थी । परंतु यहाँ यह भेदभाव ! स्त्री-पुरुष में इतनी असमानता ! बात उसे कुछ पची नहीं ।

वह अपनी कक्षा में हमेशा प्रथम स्थान पाती आई थी और कम्प्यूटर विज्ञान की कक्षा में पुरुष सहपाठियों में अकेली लड़की थी । योग्य थी, परिश्रमी थी। नहीं, उसे कुछ तो करना ही होगा । इस भेदभाव को सहना उसके बस की बात नहीं । वह इसका विरोध करेगी और डटकर करेगी ।

उसने अपनी डायरी में आवश्यक सूचनाएँ लिखीं और तेजी से होस्टल की ओर चल दी । उसने निश्चय किया कि वह टेल्को कंपनी के सर्वोच्च अधिकारी को सूचित करेगी कि उनकी कंपनी इस प्रकार का अन्याय कर रही है । उसे उस सर्वोच्च अधिकारी का नाम मालूम तो नहीं था, केवल इतना पता था कि टाटा समूह के प्रमुख जे.आर.डी. टाटा हैं ।

उसने एक पोस्टकार्ड लिया और जे.आर.डी. टाटा को संबोधित करते हुए लिखा - आपने भारत में लोहा-इस्पात, रासायनिक पदार्थ, कपड़ा, मशीनों के बड़े-बड़े उद्योग लगाए हुए हैं । भारतीय विज्ञान संस्थान की स्थापना में बढ़-चढ़कर अपना योगदान दिया है । सौभाग्य से मैं उसी संस्थान में पढ़ रही हूँ । मैं हैरान हूँ कि टेल्को जैसी कंपनी स्त्री-पुरुष के बीच ऐसा भेदभाव कैसे कर सकती है ।

दस ही दिन में कंपनी ने उसे तार भेजा - कंपनी के खर्चे पर पूना शहर में साक्षात्कार के लिए उपस्थित हों । आवश्यक तैयारियों के साथ वह लड़की पूना पहुँची । साक्षात्कार आरंभ हुआ । काफ़ी तकनीकी प्रश्न पूछे गए जिनके वह सही-सही उत्तर देती गई । तभी एक बुजुर्ग सज्जन ने स्नेहमयी वाणी में कहा, "तुम जानती हो कि हमने 'महिला उम्मीदवार आवेदन न भेजें' क्यों लिखा था ? क्योंकि यहाँ फैक्टरी में मुख्य कार्य-स्थल पर किसी महिला की नियुक्ति नहीं होती । तुम्हारी जैसी मेधावी लड़कियों को अनुसंधान-शालाओं में जाकर कार्य करना चाहिए ।"

'लेकिन हमें कहीं से तो शुरुआत करनी होगी । नहीं तो कभी भी कोई महिला आपकी फैक्टरी में कार्य नहीं कर पाएगी ।' उसने दृढ़ता से कहा ।

एक लंबे साक्षात्कार के बाद, अंत में, उस वृद्ध सज्जन ने मुस्कराते हुए कहा, 'ठीक है, यह शुरुआत तुमसे ही की जाती है । बधाई !'

टेल्को (टाटा) में इंजीनियर के पद पर नियुक्त यह प्रथम महिला इंजीनियर थी - सुधा कुलकर्णी । सुधा कुलकर्णी का विवाह टेल्को में ही कार्यरत श्री नारायण मूर्ति के साथ हुआ । आठ वर्ष तक टेल्को को अपनी सेवाएँ देने के बाद सन् 1982 में उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और बेंगलुरु में अपने पति श्री नारायण मूर्ति के साथ इन्फ़ोसिस कंपनी खोली ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दोनों की मेहनत और लगन से इन्फ़ोसिस ने दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति की । सुधामूर्ति 1996 में इन्फ़ोसिस फाउंडेशन की चेयरपर्सन बनीं । इस फाउंडेशन के माध्यम से वे सामाजिक विकास के अनेक कार्य कर रही हैं । उन्होंने कर्नाटक राज्य के सभी सरकारी स्कूलों में एक-एक कम्प्यूटर और लाइब्रेरी की योजना बनाई और उसे कार्यरूप दिया ।

सुधामूर्ति ने स्वयं को अब पूर्णरूप से समाजसुधार के लिए समर्पित कर दिया । बेल्लारी, बीजापुर, हुबली आदि के अस्पतालों को उच्च तकनीकी चिकित्सा उपकरण उपलब्ध करवाए । कांची में कैंसर अस्पताल, औरंगाबाद, बेल्लारी, गुलबर्ग, पट्टुमडाई, बेंगलुरु आदि में चिकित्सा सहायता तथा उस्मानाबाद जिला, उड़ीसा के कालाहांडी और आंध्रप्रदेश के सूखापीड़ित क्षेत्र में राहत कार्य करवाए ।

उनके अथक प्रयास से कर्नाटक के आठ सौ से अधिक गाँवों में कम्प्यूटर शिक्षा पर एक करोड़ रुपया लगाया गया और तीन हज़ार से अधिक पुस्तकालय खोले गए । उन्होंने गरीब बच्चों को सहायता दी, स्कूलों की इमारतों का निर्माण करवाया, अधिकतम अंक लानेवाले बच्चों को छात्रवृत्ति दी और गाँवों में लगभग तीन सौ कम्प्यूटर वितरित किए ।

तेरह पुस्तकों की लेखिका सुधामूर्ति को उनके कार्यों के लिए अनेक पुरस्कार दिए गए । जिनमें से प्रमुख हैं – कर्नाटक राज्योत्सव पुरस्कार, ओजस्विनी पुरस्कार, मिलेनियम महिला शिरोमणि पुरस्कार, वुमेन ऑफ द ईयर 2002 (एफ. एम. रेडियो द्वारा), राजलक्ष्मी पुरस्कार आदि ।

सुधामूर्ति ने अपनी उपलब्धियों से महिलाओं का मार्ग प्रशस्त किया । आज इंजीनियरिंग महाविद्यालयों में पढ़नेवाले छात्रों में से पचास प्रतिशत संख्या लड़कियों की है । अनेक उद्योगों में मशीनों के बीच लड़कियाँ कुशलता से कार्य कर रही हैं । जिस मार्ग पर चलकर सुधामूर्ति ने अपनी प्रतिभा, लगन और परिश्रम से सफलता की ऊँचाइयों को छुआ, उस मार्ग पर नई पीढ़ी को आगे बढ़ता देखकर वे खुशी से फूली नहीं समातीं । महिलाओं की सफलता पर वे कह उठती हैं – हमारा मार्ग कठिन अवश्य है किंतु चलना जरूरी है ।

शब्दार्थ

परिसर प्रांगण, आँगन **विज्ञापन** इश्तहार (जाहेरात गुज.), **पेशकश** प्रस्ताव **साक्षात्कार** मुलाकात, इंटरव्यू **आवेदन** अरजी **त्यागपत्र** राजीनामा, पद त्याग का पत्र **मेधावी** तेजस्वी

मुहावरे

बात न पचना अविश्वसनीय होना, बात गले न उतरना, बात समझ न पाना **फूला न समाना** अत्यंत प्रसन्न होना **बस की बात न होना** असमर्थ होना, बूते के बाहर

कहावत

दिन दूनी रात चौगुनी बहुत तेजी से

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) सुधा कुलकर्णी ने अपनी पढ़ाई किस क्षेत्र में की थी ?
(अ) कम्प्यूटर विज्ञान (ब) ऑटोमोबाइल विज्ञान
(क) सिविल इंजीनियरिंग (ड) इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग

(2) किस कंपनी के विज्ञापन में लिखा था कि महिला उम्मीदवार आवेदन न करें ?
(अ) टेल्को (ब) इन्फ़ोसिस (क) वीडियोकोन (ड) सेमसंग

(3) विज्ञापन से किस प्रकार का भेदभाव स्पष्ट होता था ?
(अ) अमीर-गरीब का (ब) महिला-पुरुष का
(क) ऊँच-नीच जाति का (ड) कुशलता-अकुशलता का

(4) सुधा कुलकर्णी को साक्षात्कार के लिए कहाँ बुलाया गया ?
(अ) मुंबई (ब) पूना (क) कलकत्ता (ड) अहमदाबाद

(5) लेखिका सुधामूर्ति को 2002 में 'वुमन ऑफ द इयर' का पुरस्कार किसने दिया ?
(अ) कर्णाटक राज्य सरकार (ब) उड़ीसा सरकार
(क) एफ. एम. रेडियो (ड) इन्फ़ोसिस फाउंडेशन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) टेल्को कंपनी का विज्ञापन किस पद के लिए था ?
(2) विदेश जाकर सुधा किस क्षेत्र में पढ़ाई करना चाहती थी ?
(3) विज्ञापन की अंतिम पंक्ति पढ़कर सुधा के मन में क्या विचार आये ?
(4) वृद्ध सज्जन ने स्नेहमयी वाणी में साक्षात्कार के समय सुधा से क्या कहा ?
(5) सुधा कुलकर्णी ने किससे शादी की ?
(6) इन्फ़ोसिस फाउंडे्शन ने कर्णाटक के सरकारी स्कूलों के लिए क्या किया ?
(7) सुधामूर्ति महिलाओं की सफलता पर क्या कह उठी ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) टेल्को विज्ञापन में चौंकानेवाली क्या बात थी ?
(2) सुधा ने स्त्री-पुरुष के भेदभाव के लिए क्या निश्चय किया ?
(3) सुधा और नारायण मूर्ति ने इन्फ़ोसिस फाउंडेशन द्वारा क्या-क्या कार्य किये ?
(4) कर्णाटक सरकार तथा अन्य संस्थाओं द्वारा सुधा को किन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) साक्षात्कार में सुधा ने अपनी दृढ़ता का परिचय कैसे कराया ?
(2) सुधा के स्थान पर आप होते तो क्या करते ?
(3) सुधामूर्ति महिलाओं के लिए किस प्रकार प्रेरणा मूर्ति है ?

5. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द दीजिए :

परिसर, शुरुआत, मेहनत, सूखा, अनुसंधान, पुरस्कार

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द दीजिए :

आवश्यक, सौभाग्य, उपस्थित, सज्जन, अपना, उच्च, अधिकतम

7. निम्नलिखित शब्दों की भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए :

अधिक, सफल, आवश्यक, असमान, पुरुष, स्त्री

8. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ देकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

फूला न समाना, बात न पचना

9. निम्नलिखित कहावत का अर्थ समझाइए :

दिन दूनी रात चौगुनी

योग्यता-विस्तार

- स्त्री सशक्तिकरण विषय पर निबंध लिखिए ।
- 'सुधामूर्ति प्रेरणा की साक्षात् मूर्ति है ।' कैसे ? 30-40 शब्दों में लिखिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- किसी कंपनी की स्त्री प्रबंधक से मुलाकात लीजिए ।
- प्रमुख पदों पर स्थित महिलाओं को पाठशाला में निमंत्रण देकर व्याख्यान का आयोजन कीजिए ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9 कुत्ते की सीख

रामधारी सिंह 'दिनकर'
(जन्म : सन् 1908 ई., निधन : सन् 1974 ई.)

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी का जन्म बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ था । शिक्षा जगत में आप आचार्य, उपनिदेशक, कालेज के विभाग अध्यक्ष, विश्वविद्यालय के कुलपति तक की यात्रा सफलता के साथ की है । आप राज्यसभा के सदस्य भी रहे है । इनकी कविताएँ राष्ट्रप्रेम, मानवप्रेम की परिचायक है । वे गाँधी विचारधारा से प्रभावित थे । वे प्रगतिशील सामाजिक चेतना के कवि थे । आपको भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सन्मानित किया गया ।

रेणुका, हुंकार, रसवंती इनके काव्यसंग्रह हैं । कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, जैसे प्रबंध काव्य लिखे हैं । अर्धनारीश्वर, मिट्टी की ओर तथा रेती के फूल इनके चिंतनात्मक निबंध हैं । संस्कृति के चार अध्याय इनकी प्रमुख गद्य रचना है ।

प्रस्तुत काव्य बच्चों के लिए लिखा गया है । कुत्ता और खरहे – की कहानी को काव्य के रूप में प्रस्तुत किया है । वे इस कथा में यह बताना चाहते है कि छोटा या बड़ा, ताकतवर या कमजोर जब अपने प्राणों पर आ जाते है, तब उनमें विशेष शक्ति का संचार होता है । ईश्वर ने ऐसी शक्ति सबको दी है ।

वन में एक घनी झुरमुट थी जिसके भीतर जाकर,
खरहा एक रहा करता था सबकी आँख बचाकर ।

फुदक-फुदक फुनगियाँ घास की चुन-चुनकर खाता था,
देख दूर से लोगों को झुरमुट मे छिप जाता था ।

एक रोज आया उस वन में, कुत्ता एक शिकारी,
लगा छानने सूंघ-सूंघकर वन की झाड़ी-झाड़ी ।

आखिर वह झुरमुट भी आई, जो खरहे का घर थी,
मगर खैर उस बेचारे की लंबी अभी उमर थी ।

कुत्ते की जो लगी सांस, खरहा सोते से जागा,
देख पीठ पर खड़ा काल को जान लिये वह भागा ।

झपटा पंजा तान मगर, खरहे को पकड़ न पाकर,
पीछे-पीछे दौड़ पड़ा कुत्ता भी जोर लगाकर ।

चार मिनट तक खुले खेत में रही दौड़ यह जारी,
इतने में आ गई सामने घनी कंटीली झाड़ी ।

भरकर एक छलांग गया छिप खरहा बीहड़ वन में,
इधर-उधर कुछ सूंघ, फिरा कुत्ता निराश हो मन में ।

एक लोमड़ी देख रही थी, यह सब खड़ी किनारे,
कुत्ते से बोली : मामा ! तुम हो खरहे से हारे ।

इतनी मोटी देह लिए हो, फिर भी थक जाते हो,
वन के छोटे जीवजन्तु को भी न पकड़ पाते हो ।

कुत्ता हँसा : अरी दीवानी ! तू नाहक बकती है,
इसमें है जो भेद उसे तू समझ नहीं सकती है ।

मैं तो दौड़ रहा था केवल दिन का भोजन पाने,
लेकिन खरहा भाग रहा था अपनी जान बचाने ।

कहते हैं सब शास्त्र कमाओ रोटी जान बचाकर,
पर संकट में प्राण बचाओ, सारी शक्ति लगाकर ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

झुरमुट वृक्षों-झाड़ियों का समूह, झाड़ी, **खरहा** जंगली खरगोश **फुदकना** उछलना **कंटीली** काँटों वाली **बीहड़** भयानक घना **दीवानी** पगली

मुहावरे

आँख बचा के रहना नजर से दूर रहकर या छिपकर जीना, **पीठ पर काल होना** सिर पर मौत होना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) सब की नजर बचाकर खरहा कहाँ रहता था ?
(अ) अपने बिल में (ब) झाड़ के तने में (क) झाड़ी में (ड) जंगल में

(2) खरहा क्यों भागा ?
(अ) शिकारी कुत्ता पीछे पड़ा था । (ब) खाना खत्म हो गया था उसकी तलाश में ।
(क) लोमड़ी उसके पीछे भाग रही थी । (ड) जंगल में आग लगी थी ।

(3) कुत्ता खरहे को क्यों न पकड़ पाया ?
(अ) कुत्ता खरहे के लिए भाग रहा था । (ब) खरहा अपनी जान बचाने के लिए भाग रहा था ।
(क) कुत्ते में खरहे को पकड़ने की शक्ति न थी । (ड) खरह बड़ा चालाक था ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) खरहा कहाँ रहता था ?
(2) खरहा नींद से क्यों जाग गया ?
(3) कुत्ते और खरहे के बीच दौड़ कहाँ और कब तक चली ?
(4) लोमड़ी क्या देख रही थी ?
(5) रोटी कमाने के विषय में शास्त्रों में क्या बताया है ? इस काव्य के आधार पर बताइए ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) खरहा कहाँ और कैसे रहता था ?
(2) खरहा झाड़ी से क्यों भागा ?
(3) कुत्ता निराश क्यों हो गया ?
(4) इस घटना को देखनेवाली लोमड़ी ने कुत्ते से क्या कहा ?
(5) कुत्ते ने लोमड़ी को क्या उत्तर दिया ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) 'कुत्ते की सीख' काव्य से क्या बोध मिलता है ?
(2) 'कुत्ते की सीख' को कहानी के रूप में लिखें ।

5. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

कहते हैं सब शास्त्र कमाओ, रोटी जान बचाकर,
पर संकट में प्राण बचाओ, सारी शक्ति लगाकर ।

6. निम्नलिखित के पर्यायवाची शब्द दीजिए :

खरहा, झुरमुट, शिकारी, कंटीली, बीहड़, देह, दीवानी, शक्ति ।

7. निम्नलिखित के विरोधी शब्द दीजिए :

दूर, आखिर, पीछे, निराश, मोटी, कमाना

योग्यता-विस्तार

- इस कथा का नाट्य रूपांतर करके कक्षा में प्रस्तुत कीजिए ।
- अन्य संवाद काव्यों तथा कथा काव्यों का संग्रह कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- अपने जीवन की चिरस्मरणीय घटना का वर्णन कक्षा में कीजिए ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10 जीने की कला

मौलाना अबुल कलाम 'आज़ाद'
(जन्म : सन् 1885 ई., निधन : सन् 1958 ई.)

जानेमाने शिक्षाविद्, चिंतक मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, आज़ाद स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षामंत्री थे । वे प्रखर विद्वान एवं अरबी-फारसी के ज्ञाता थे । साहित्य के क्षेत्र में आप ललित और चिंतनात्मक निबंध लेखक के रूप में जाने जाते हैं । आपकी दृष्टि से मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है जिसे अन्य सजीवों से अलग तरह से रहना चाहिए ।

जीने की कला एक आवश्यक कला है । व्यक्ति को इस कला से भलीभाँति परिचित होना चाहिए । उसे चाहिए कि जीवन को भलीभाँति जीए । मरते-मरते नहीं जीना चाहिए और मृत्यु के बारे में कभी सोचना ही नहीं चाहिए । हमारे जीवन में हरियाली की आवश्यकता है, सूखेपन या बंजरता की नहीं । खिले हुए पुष्प, बहते झरने, गाते पंछी और बहती हवा आदि को देख मनुष्य प्रसन्नता का अनुभव कर सकता है ।

वस्तुत: हमारे धर्म, दर्शन और अध्यात्म के गहन दर्शन ने मनुष्य की अनावश्यक गंभीर और कृत्रिम बना दिया है । उसे सहज नहीं रहने दिया है । जीवन का लक्ष्य आनंद की प्राप्ति करना होता है, जिसे सिद्ध करने में ही लगे रहना चाहिए ।

लोग सदा इस खोज में लगे रहते हैं कि जीवन को बड़े-बड़े कामों के लिये काम में लाएँ । मगर वे यह नहीं जानते, कि यहाँ सबसे बड़ा काम खुद जीवन है, अर्थात् जीवन को हँसी-खुशी में काट देना । यहाँ इससे ज्यादा सरल काम कोई नहीं है कि मर जाइए और इससे ज्यादा विकट काम कोई नही है कि जीते रहिए । जिसने यह मुश्किल हल कर ली, उसने जीवन की सबसे बड़ी गुत्थी सुलझा ली ।

मेरा ख्याल है, प्राचीन चीनियों ने जीवन की समस्या को ठीक समझा था । एक प्राचीन चीनी वाक्य में पूछा गया है - दुनियाँ में सबसे बुद्धिमान आदमी कौन है ? फिर जवाब दिया है - जो सबसे ज्यादा खुश रहता है । इससे हम चीनियों का जीवन-संबंधी दृष्टिकोण समझ सकते हैं ।

अगर आपने संसार की हर स्थिति में प्रसन्न रहने की कला सीख ली है, तो विश्वास कीजिए, कि आपने जीवन का सबसे महान काम सीख लिया है । अब इसके बाद इस सवाल की जरूरत ही नहीं रही, आपने और क्या-क्या सीखा है ? खुद भी खुश रहिए और दूसरों से भी कहते रहिए, कि अपने चेहरे उदास न होने दें ।

आजकल के एक फ्रांसीसी लेखक आंद्री गीद (Andre Gide) की एक बात मुझे बहुत भाई, जो उसने अपनी आप-बीती में लिखी है - 'खुश रहना केवल एक जरूरत नहीं है, यह एक नैतिक उत्तरदायित्व भी है ।' मतलब यह कि हमारे व्यक्तिगत जीवन का प्रभाव हमीं तक सीमित नहीं रहता, वह दूसरों को भी पकड़ता है । या यूँ कहिए कि हमारे सुख-दु:ख की छूत दूसरों को भी लगती है । इसलिए हमारा कर्तव्य है कि न आप उदास हों, न दूसरों को उदास करें ।

हमारा जीवन एक शीशाघर है । यहाँ हर चेहरे का प्रतिबिंब एक ही समय में सैकड़ों शीशों पर पड़ता है । अगर एक चेहरे पर भी छाया आ गई, तो वह छाया सैकड़ों चेहरों पर छा जायगी । हममें से किसी आदमी का जीवन उसकी अपनी व्यक्तिगत जायदाद नहीं है । हर आदमी पूर्ण संग्रह का अंश है । दरिया में एक लहर अकेली उठती है, मगर उस एक ही लहर से अनगिनत लहरें बन जाती हैं । यहाँ हमारी कोई बात भी सिर्फ हमारी नहीं है, हम जो कुछ अपने लिए करते हैं, उसमें भी दूसरों का भाग होता है । हमारी कोई खुशी भी हमें खुश नहीं कर सकेगी, अगर हमारे चारों तरफ उदास चेहरे जमा हो जाएँ । हम खुद खुश रहकर दूसरों को खुश करते हैं और दूसरों को देखकर खुद-खुश होने लगते हैं ।

यह अजीब बात है कि धर्म, फिलासफी और सदाचार तीनों ने जीवन की समस्या हल करनी चाही और तीनों में खुद जीवन के विरुद्ध भाव उत्पन्न हो गया । इसीलिए लोग समझते हैं कि कोई आदमी जितना ज्यादा बुझा दिल और सूखा चेहरा लेकर फिरे, वह उतना ही ज्यादा धार्मिक, फिलासफर और सदाचारी है । मानो ज्ञान और पवित्रता दोनों के लिए दु:ख का जीवन अनिवार्य हो गया ।

यह माना, कि जिन गुत्थियों को दुनिया सैकड़ों वर्षों के सोच-विचार से भी नहीं सुलझा सकी, आज हम उन्हें हँसी-ठट्ठे के चार शब्दों से हल नहीं कर सकते । मगर यह तो मानना पड़ेगा, कि यहाँ सत्य की ओर से आँखें बंद नहीं की जा सकतीं । एक भक्त, एक साधु, एक फिलासफर का सूखा चेहरा बनाकर हम उस चित्र में नहीं खप सकते, जो प्रकृति के विश्वकर्मा हाथों ने यहाँ खींच दिया है । जिस चित्र में सूरज का चमकता हुआ मस्तक, चाँद का हँसता हुआ चेहरा, तारों की झलमलाती हुई आँखें, पेड़ों का नृत्य, पंछियों का संगीत, बहते हुए पानी की तरंगें, खिलते हुए

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

फूलों की बहारें अपनी शोभा दिखा रही हैं, वहाँ हम एक बुझे-हुए दिल और सूखे हुए चेहरे के साथ स्थान नहीं पा सकते । प्रकृति की इस रूप-सभा में तो वही जीवन सज सकता है, जो अपने वक्ष में दमकता हुआ दिल और चेहरे पर चमकती हुई आँखें रखता हो और जो चांदनी में चाँद की तरह निखरकर, तारों की छाँह मे तारों की तरह चमककर, फूलों की क्यारी में फूलों की तरह खिलकर अपना स्थान ले सकता हो ।

शब्दार्थ

गुत्थी उलझन, समस्या **उत्तरदायित्व** जिम्मेदारी **शीशाघर** ऐसा कक्ष जिसमें दीवारें शीशे की बनी हो, वह घर जिसकी दीवारों तथा छत पर शीशे लगे हों **जायदाद** संपत्ति **हँसी-ठट्ठे** हँसी-मजाक **विकट** मुश्किल **फिलासफी** दर्शनशास्त्र **झलमलाती** प्रकाशित, चमकती **बुझे हुए** मुरझाये हुए **वक्ष** छाती

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) मनुष्य जीवन को किस काम में लाया जाना चाहिए ?

(अ) जीवन को समझने (ब) हँसी-खुशी मे बिताने (क) सरल काम करने (ड) विकट काम करने

(2) आदमी ज्यादा धार्मिक, फिलासाफर और सदाचारी लगता है, ऐसा लोग कब समझते हैं ?

(अ) जब वह बुझेदिल हो । (ब) जब वह प्रसन्न हो ।
(क) जब वह धर्म की बात करते हो । (ड) जब वह पवित्र हो ।

(3) लेखक के मतानुसार जीवन की समस्याओं को किस प्रजा ने ठीक से समझा था ?

(अ) प्राचीन भारतीय (ब) अमेरिकन (क) चीनी (ड) आधुनिक भारतीय

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) जीवन की सबसे बड़ी गुत्थी कैसे सुलझायी जाय ?
(2) जीवन की समस्या किसने ठीक समझा था ?
(3) दुनिया में सबसे बड़ा बुद्धिमान कौन है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) प्रसन्न रहने की कला क्या है ?
(2) 'खुश रहना केवल एक जरूरत नहीं, यह एक नैतिक उत्तरदायित्व भी है'- कैसे ?
(3) हमारी खुशी हमें कब खुश नहीं कर सकती ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) आदमी का जीवन उसकी अपनी व्यक्तिगत जायदाद क्यों नहीं है ?
(2) हम बुझे हुए दिल और सूखे हुए चेहरे के साथ कहाँ स्थान नहीं प्राप्त कर सकते ?

5. निम्नलिखित शब्दों से कर्तृवाचक संज्ञा बनाइए :

कला, नीति, बात, दिल, सदाचार, संगीत, नृत्य

6. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए :

संसार, विश्वास, प्रतिबिंब, प्रकृति, समय, अंश

7. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए :

प्रसन्न, सरल, बड़ा, खुश, उदास, बहुत, आदमी

योग्यता-विस्तार

- 'जीवन जीने की कला' विषय पर वक्तृत्व स्पर्धा का आयोजन कीजिए ।
- 'जीवन में आनंद का महत्त्व' विषय पर लेखन कार्य करवाइए ।
- 'आनंद' फिल्म दर्शाने का आयोजन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'प्रसन्नता ईश्वर का दूसरा स्वरूप है ।' इस विषय पर कक्षा कक्ष में चर्चा का आयोजन कीजिए ।
- प्रसन्नता, जीवन जीने की कला, सदाचार, धर्म, दर्शन... आदि शीर्षक अंतर्गत विद्वानों के विचार, सूक्तियाँ एवं लेखों का संकलन करने का कार्य छात्रों को दीजिए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

11 भारतवर्ष हमारा है

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
(जन्म : सन् 1897 ई., निधन : सन् 1960 ई.)

बालकृष्ण शर्मा का जन्म मध्य प्रदेश के शाजापुर परगने के मदाना गाँव में हुआ था । ग्यारह वर्ष की आयु में इनकी शिक्षा आरंभ हुई । ये उच्च शिक्षा के लिए कानपुर आये किन्तु गाँधीजी के आह्वान पर वे कॉलेज छोड़कर राजनीति में सक्रिय हुए । स्वतंत्रता आंदोलन का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा । इसीलिए राष्ट्रभक्ति और अन्याय के प्रति विद्रोह की चिनगारी उनके भीतर प्रकट हुई । अपने लंबे राजनीतिक जीवन के दौरान इन्हें कई बार जेल जाना पड़ा । ये लोकसभा और राज्यसभा के सदस्य भी रह चुके हैं । कुछ समय तक इन्होंने 'प्रभा' और 'प्रताप' पत्रों का संपादन भी किया । भारत सरकार द्वारा इन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया ।

'कुंकुम', 'रश्मिरेखा', 'उर्मिला' तथा 'हम विष-पायी जनम के' आदि इनकी सुप्रसिद्ध रचनाएँ हैं ।

'भारतवर्ष हमारा है' काव्य राष्ट्रप्रेम से भरपूर है । स्वतंत्रता की लहर से भारत के नवनिर्माण के लिए कवि ने आह्वान किया है । कवि ने यहाँ जनमन के उत्साह को व्यक्त किया है ।

कोटि-कोटि कंठों से निकली आज यही स्वरधारा है,
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है ।

जिस दिन सबसे पहिले जागे, नव सिरजन के स्वप्न घने,
जिस दिन देश-काल के दो-दो, विस्तृत विमल वितान तने,
जिस दिन नभ के तारे छिटके, जिस दिन सूरज-चाँद बने ।

तब से है यह देश हमारा, यह अभिमान हमारा है,
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है ।

जब कि घटाओं ने सीखा था, सबसे पहले घहराना,
पहिले-पहल हवाओं ने जब सीखा था, कुछ हहराना,
जब कि जलधि सब सीख रहे थे, सबसे पहिले लहराना,

उसी अनादि-आदि क्षण से यह जन्मस्थान हमारा है,
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है ।

गरज उठे ब्यालीस कोटिजन, सुन ये वचन उछाह-भरे,
काँप उठे प्रतिपक्षी जन-गण, उनके अंतस्तल सिहरे,
आज नये युग के नयनों से ज्वलित अग्नि के पुंज भरे ।

कौन सामने आयेगा, यह देश महान् हमारा है
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है ।

शब्दार्थ

कोटि करोड़ **सिरजन** सृजन, रचना **घहराना** उमड़ना **हहराना** हवा के तेज चलने से होनेवाली आवाज़ **अनादि** अनंत काल से, अति प्राचीन **उछाह** उत्साह, उल्लास **प्रतिपक्षी** विरोधी **अंतस्तल** हृदय **सिहरना** काँपना **पुंज** समूह

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) करोड़ों कंठों से क्या आवाज़ उठी ?

(2) हिन्दुस्तान के प्रति जनता का अभिमान कब से है ?

(3) नवयुग के नयनों में क्या भरा है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) 'भारतवर्ष हमारा है' यह स्वरधारा किसकी है ?

(2) नवसर्जन के स्वप्न कब से जागे ?

(3) भारतवर्ष हमारा जन्मस्थान कब से है ?

(4) करोड़ों लोगों के उत्साह भरे वचन क्या थे ?

(5) कवि भारत का प्रतिपक्षी किसे मानते हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) हिन्दुस्तान हमारा है – स्वरधारा किसकी और कब से है ?

(2) कवि बालकृष्ण 'नवीन' – भारत के लिए क्या कहते हैं ?

4. निम्नलिखित का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

गरज उठे ब्यालीस कोटिजन, सुन ये............
.... हिन्दुस्तान हमारा है ।

योग्यता-विस्तार

- 'मेरा भारत' विषय पर निबंध लिखिए ।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के विकास की जानकारी प्राप्त करें ।
- 'भारतवर्ष हमारा है' कविता को कंठस्थ कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- राष्ट्रभक्ति के गीतों का हस्तलिखित ग्रंथ तैयार करवाइए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

12 एक नई शुरुआत

जाकिर अली 'रजनीश'
(जन्म : सन् 1975 ई.)

जाकिर अली 'रजनीश' एक जाने-माने सुप्रसिद्ध लेखक है । जिनकी वैज्ञानिक विषय लेखन में सविशेष रुचि रही है । उनके चार वैज्ञानिक उपन्यास, तीन बाल उपन्यास, अठारह बाल कहानी संग्रह सहित कुल त्रैसठ पुस्तकें प्रकाशित हैं । इनमें 'चमत्कार', 'सपनों का गाँव', 'विज्ञान की कथाएँ' आदि मुख्य हैं । 'गिनीपिग', 'समय के पार' इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं । उत्कृष्ट लेखन के लिए 'विज्ञान-कथा भूषण सम्मान', 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार', सर्जना पुरस्कार सहित अनके सम्मान प्राप्त हुए हैं ।

एक नई शुरुआत वैज्ञानिक संशोधन विषयक कृति है । इस कृति में मानवदेह को तरंगों में रूपांतरित करके अन्य स्थान पर भेजने की अत्याधुनिक टेकनीक और तत्संबंधी किए जानेवाले प्रयोगों का हैरतअंगेज वर्णन रोमांचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है । यहाँ दो वैज्ञानिकों की अद्‌भुत सिद्धि का वर्णन प्रस्तुत है ।

प्रोफेसर रामिश और उनके सहायक माधवन के जीवन के वे अद्‌भुत क्षण थे । उनके जीवन में आज वह होने वाला था, जो अद्‌भुत ही नहीं, असंभव भी था । मानवता के इतिहास में आज पहली बार मानव प्रक्षेपण यंत्र का परीक्षण संपन्न होने जा रहा था ।

दो अति शक्तिशाली कम्प्यूटरों और द्रव्य विश्लेषण यंत्रों द्वारा निर्मित वह मानव प्रक्षेपण यंत्र दो खंडों में विभक्त था । यंत्र का एक भाग प्रोफेसर की प्रयोगशाला में तथा दूसरा भाग वहाँ से पाँच सौ मीटर दूर स्थित माधवन के घर में स्थापित किया गया था । प्रोफेसर रामिश ने कम्प्यूटर पर अंतिम कमांड देने के बाद गर्व से स्क्रीन की ओर देखा । उनका चेहरा एक विशेष प्रकार की आभा से दमक रहा था ।

कुछ ही पलों में कम्प्यूटर ने प्रोसेस रेडी का सिग्नल दिया । प्रो. रामिश ने अपने सहयोगी माधवन को फोन पर अलर्ट किया और धड़कते दिले के साथ कम्प्यूटर चालित चैंबर में प्रविष्ट हो गए और अगले ही क्षण मानव प्रक्षेपण यंत्र अपनी जटिल प्रक्रिया को संपादित करने में व्यस्त हो गया ।

दूसरे छोर पर बैठा हुआ माधवन दम साधे कम्प्यूटर स्क्रीन पर आँखें गड़ाए हुए था । प्रोफेसर का शरीर अपने मूल तत्त्वों में विभक्त होना प्रारंभ हो गया था । बस अब कुछ ही क्षणों की बात थी । लेकिन इस समय माधवन को एक-एक क्षण एक साल के बराबर लग रहा था और इसी अंतराल के बीच सहसा उसके दिमाग में वह घटना कौंध गई, जब वह प्रोफेसर रामिश से पहली बार मिला था ।

वह ऐसा ही एक गरम दिन था । जब वह प्रोफेसर रामिश के जिगरी दोस्त आनंद मेहता का सिफारिशी पत्र लेकर पहली बार उनकी लैब में पहुँचा, उस समय वे अपने कम्प्यूटर पर झुके हुए थे । माधवन का परिचय जानने के बाद प्रोफेसर रामिश ने सहर्ष उसे अपने साथ काम करने की अनुमति प्रदान कर दी । माधवन ने एक नजर प्रोफेसर के कम्प्यूटर पर डाली, पर जब उसे कुछ समझ में नहीं आया, तो उसने पूछ ही लिया, 'सर, आनंद सर ने बताया था कि आप किसी विशेष प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं ?'

प्रो. रामिश ने माधवन के चेहरे की ओर देखा । जैसे वे यकीन कर लेना चाहते हों कि माधवन से अपने प्रोजेक्ट की बातें शेयर की जा सकती हैं अथवा नहीं । हलाँकि माधवन के साथ आनंद की संस्तुति थी, लेकिन फिर भी उन्होंने माधवन की आँखों में झाँककर उसे परख लेना उचित समझा ।

उन्होंने एक लंबी साँस ली और फिर अपने ड्रीम प्रोजेक्ट 'मानव प्रक्षेपण यंत्र' के बारे में माधवन को बताने लगे । प्रोफेसर की बातें सुनकर माधवन का मुँह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया । आखिर जब उससे रहा न गया, तो वह पूछ ही बैठा, 'सर, क्या वास्तव में ऐसा संभव है ?'

प्रोफेसर रामिश ने माधवन की ओर ऐसा देखा, जैसे कोई दस साल का बच्चा हो । वे बोले, 'क्यों नहीं भेजा जा सकता ?'

कहते हुए प्रोफेसर रामिश एक क्षण के लिए रुके । पर माधवन की ओर से कोई प्रतिक्रिया व्यक्त न होने पर वे रुके नहीं । उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ाई, 'अरे भई, ये तो तुमने पाँचवीं क्लास में ही पढ़ा होगा कि प्रत्येक वस्तु एक विशेष प्रकार के अणुओं से मिलकर बनती है । अणु परमाणुओं से मिलकर बनते हैं और किसी भी परमाणु को आकार मिलता है उसके अपने भीतर मौजूद इलेक्ट्रोन, प्रोटान, न्यूट्रान के कारण ।'

'हाँ, ये तो बहुत सामान्य सी बातें हैं ।' माधवन ने उनकी बात का समर्थन किया ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'यदि हमें किसी वस्तु की संरचना को समझना हो तो हम क्या करेंगे । हम उस वस्तु के अणुओं, परमाणुओं का अध्ययन करेंगे ।' प्रोफेसर ने बातों का सिलसिला आगे बढ़ाया, 'यह ठीक वैसा ही है जैसे किसी मशीन के अंदर के कलपुर्जों की बनावट और उनके कार्य करने की विधि ।'

माधवन मूर्तिवत् प्रोफेसर रामिश की बात सुन रहा था । प्रोफेसर का वक्तव्य जारी था, 'यह तो रही बनावट की बात । अब आती है किसी वस्तु को तरंगों के माध्यम से कहीं भेजने की बात । तुम्हें तो मालूम ही है कि ऊर्जा कभी नष्ट नहीं होती है । हाँ, उसका स्वरूप परिवर्तित किया जा सकता है, जैसे विद्युत ऊर्जा को यांत्रिक ऊर्जा में, आणविक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में । अब हम आणविक ऊर्जा को उदाहरण के रूप में लेते हैं । यह ऊर्जा यूरेनियम, थोरियम आदि तत्त्वों को तोड़कर प्राप्त की जाती है । इस काम के लिए परमाणु रिएक्टर काम में लाए जाते हैं । इससे हम यह आसानी से समझ सकते हैं कि किसी भी वस्तु को उसके मूल तत्त्वों में तोड़ा जा सकता है और अगर किसी वस्तु को उसके मूल तत्त्वों में विभक्त किया जा सकता है, तो उन मूल तत्त्वों को आपस में जोड़कर उस तत्त्व को दुबारा भी मूल रूप में प्राप्त किया जा सकता है ।'

'हाँ, यह तो है ।' माधवन ने उसकी बात का समर्थन किया ।

प्रोफेसर रामिश ने अपनी बात आगे बढ़ाई, 'और तुम्हें यह भी मालूम है कि हमारा शरीर भी विभिन्न प्रकार के तत्त्वों से मिलकर बना है । हालाँकि किसी वस्तु और जीवित प्राणी की संरचना में काफी अंतर होता है, लेकिन जो बातें किसी वस्तु के बारे में लागू होती हैं, वही बातें जीवित प्राणियों के बारे में भी लागू होती हैं । अर्थात् हम यह कह सकते हैं कि जिस प्रकार किसी वस्तु को उसके मूल तत्त्वों में विभक्त और वापस उन तत्त्वों को जोड़कर उसके मूल रूप में पाया जा सकता है, उसी प्रकार जीवित प्राणी के साथ भी यह प्रक्रिया अपनाई जा सकती है । लेकिन यह दूसरी प्रक्रिया पहली के मुकाबले काफी जटिल और श्रमसाध्य होगी ।' कहते हुए प्रोफेसर रामिश ने एक लंबी साँस ली ।

प्रोफेसर की बात सुनकर माधवन सम्मोहन की अवस्था में आ गया । एक क्षण के लिए वह कुछ सोच ही न पाया कि प्रोफेसर के इस लेक्चर को सुनने के बाद वह प्रसन्नता व्यक्त करे अथवा शंका । लेकिन अगले ही क्षण उसके दिमाग में एक सवाल कौंधा और वह बोले बिना रह न सका, 'सर, माना कि यह सारी प्रक्रिया संभव है, पर इससे यह कैसे सिद्ध होता है कि हम किसी भी व्यक्ति को बिना किसी साधन के दूसरी जगह भेज सकते हैं ?'

माधवन की बात सुनकर प्रोफेसर के चेहरे पर हलकी सी मुसकान दौड़ गई । वे बोले, 'मैंने कब कहा कि बिना किसी साधन के हम किसी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेज सकते हैं । मैं तो सिर्फ यह कह रहा हूँ कि जिस प्रकार किसी फिल्म को एक खास प्रकार की तरंगों में परिवर्तित करके उसे एक स्थान अर्थात् टीवी स्टेशन से प्रक्षेपित कर दूसरे स्थान यानी कि टीवी सेट पर प्राप्त कर लेते हैं । उसी प्रकार हम पहले किसी वस्तु अथवा व्यक्ति को पहले उसके मूल तत्त्वों में विभक्त करेंगे, फिर उन तत्त्वों को एक विशेष प्रकार की तरंगों में परिवर्तित कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजेंगे । जहाँ पर इन तरंगों को ग्रहण किया जाएगा, वहाँ तरंगों को वापस मूल तत्त्वों में परिवर्तित करके उसके मूल रूप में पुन: बदल लिया जाएगा ।'

और तभी अचानक माधवन की तंद्रा भंग हो गई । कारण था मानव प्रक्षेपण यंत्र से जुड़े पावर सप्लाई बॉक्स से उठने वाला धुआँ । यह देखकर माधवन हक्का-बक्का रह गया । उसने मोनीटर पर एक उड़ती-सी नजर डाली । प्रोफेसर रामिश का शरीर तरंगों में परिवर्तित होकर प्रक्षेपण यंत्र के रिसीवर की ओर चल पड़ा था । लेकिन अचानक हुई यह दुर्घटना ।

माधवन का शरीर पसीने से नहा उठा । इससे पहले कि वह कुछ करता, कमरे की पावर सप्लाई ऑफ हो गई । माधवन के हाथ-पैर फूल गए । उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या करे, क्या नहीं ? उस समय सिर्फ यंत्र की रडार प्रणाली और उससे जुड़ा कम्प्यूटर ही काम कर रहा था । प्रक्षेपण यंत्र का नियंत्रण कक्ष फेल हो जाने के कारण प्रोफेसर रामिश का तरंग रूप में परिवर्तित शरीर प्रक्षेपण यंत्र की रिसीविंग प्रणाली के नियंत्रण से बाहर जा चुका था । लेकिन सुकून की बात यह थी कि तरंगों में परिवर्तित प्रोफेसर के शरीर की स्थिति कम्प्यूटर पर प्रदर्शित हो रही थी ।

मानव प्रक्षेपण यंत्र की दूसरी इकाई ठप्प हो जाने के कारण प्रो. रामिश का तरंगस्वरूप अपनी गति खो बैठा और वह हवा के बहाव के साथ प्रयोगशाला के पीछे बहनेवाले नाले की ओर उड़ चला ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नाले के किनारे बनी झुग्गियों के बाहर काफी चहल-पहल थी । वहाँ पर अभी-अभी शराब पीकर आए दो लोग आपस में गाली-गलौज कर रहे थे । पास में चेचक के दो मरीज लेटे हुए थे । उनसे थोड़ी दूरी पर बैठे बच्चे खाना खाने की जिद कर रहे थे । उनकी माँ पास में जल रहे चूल्हे की गीली लकड़ियों से जूझते हुए अपने बच्चों को बुरी तरह से डाँट रही थी ।

उधर माधवन की दशा देखने लायक थी । उसका दिमाग काम नहीं कर रहा था । कभी वह फायरब्रिगेडवालों को फोन कर रहा था, कभी बिजली के मिस्त्री को और कभी अपने आप से बातें करने लग जा रहा था । उस उपक्रमों में 15 मिनट का समय कब व्यतीत हो गया, यह पता ही नहीं चला ।

सहसा माधवन के दिमाग में एक विचार कौंधा । उसने प्रक्षेपण यंत्र के स्विच को पावर बॉक्स से निकाला और सीधे बिजली के स्विच से जोड़ दिया । देखते-ही-देखते कमरा रोशनी से भर गया । मानव प्रक्षेपण यंत्र फिर से सक्रिय हो उठा ।

संयोग की बात यह थी कि प्रोफेसर का शरीर अभी भी नियंत्रण कक्ष की सीमा में था । मशीन की कार्यप्रणाली ऑन होते ही वे तरंगें रिसीवर की ओर घूम गईं ।

कुछ ही क्षणों में वे तरंगें प्रक्षेपण यंत्र द्वारा रिसीव कर ली गईं और उसकी कार्यप्रणाली पुन: उन तरंगों को अपने मूल स्वरूप में परिवर्तित करने लगीं । माधवन जल्दी से रिसीवर के चैंबर के पास पहुँचा और उसमें लगे बटनों को दबाने लगा ।

चंद क्षणों के अंतराल के पश्चात् रिसीवर ने सारी प्रक्रियाएँ सफलतापूर्वक संपन्न कर लेने का संकेत दिया । उसी क्षण रिसीवर के चैंबर में हलचल हुई और प्रोफेसर रामिश बाहर आ गए । माधवन अपनी उत्तेजना को सँभाल नहीं सका । वह लपककर प्रोफेसर के पास पहुँचा और उन्हें अपनी बाँहों में भींच लिया । लेकिन अगले ही क्षण प्रोफेसर का अचेत शरीर माधवन की बाँहों में था । माधवन ने प्रोफेसर को बगल के कमरे में लिटा दिया और बिना कोई समय गँवाए डॉक्टर को बुलाने के लिए फोन मिलाने लगा ।

डॉक्टर ने आते ही प्रोफेसर का चेकअप किया । उन्होंने प्रो. रामिश को एक इंजेक्शन लगाया और फिर दिशा-निर्देश देकर चले गए ।

लगभग आधे घंटे के बाद प्रो. रामिश को होश आया । यह देखकर माधवन की जान में जान आई । वह बोला, 'बधाई हो सर, आपका प्रयोग... ।'

प्रोफेसर रामिश के मस्तिष्क में काफी उथल-पुथल मची हुई थी । एक ओर थी उनकी वर्षों की मेहनत, उनका महान आविष्कार, जो उन्हें भारतवर्ष ही नहीं, संपूर्ण विश्व में प्रसिद्धि दिलानेवाला था । दूसरी ओर था उनका कुछ क्षणों का वह अनुभव, जिससे वे अभी थोड़ी देर पहले ही दो-चार हुए थे । नाले के सड़ाँध मारते पानी के किनारे बजबजाती हुई मानवीयता ने उन्हें हिलाकर रख दिया था । उन्हें अपना संपूर्ण व्यक्तित्व ही खोखला नजर आने लगा था ।

और ठीक उसी क्षण माधवन की बात उनके कानों तक पहुँची । उन्होंने रामिश की बात बीच में ही काट दी, 'प्रयोग ? कैसा प्रयोग ? अभी तो मुझे अपना काम शुरू करना है । इस देश के लाखों नागरिकों को कुपोषण से बचाना है, उनको जीवन की न्यूनतम सुविधाएँ उपलब्ध करवानी हैं । यह बहुत बड़ा काम है और अभी तो इसकी शुरुआत होनी भी शेष है ।' कहते हुए प्रो. रामिश खड़े हुए और कमरे से बाहर निकल गए ।

माधवन हैरान-परेशान उनके पीछे भागा । वह यह समझ भी कैसे सकता था कि इस दुर्घटना के दौरान प्रो. रामिश पर क्या बीती थी और किन हालात में वे इतना बड़ा फैसला लेने में सक्षम हुए थे ।

शब्दार्थ

प्रक्षेपण फेंकना, ऊपर से मिलाना **दमक** चमक, प्रभा **छोर** सिरा, सीमा, किनारा **कलपुर्जा** मशीन के पुर्जे **जटिल** पेचीदा, कठिन **सिफारिश** संस्तुति, खुशामद **आणविक** अणुसंबंधी **झुग्गियाँ** मलिन या गंदी बस्ती

मुहावरे

दम साधे बैठना चिंता के साथ प्रतीक्षा करना **बाँहों में भींच लेना** आलिंगन देना **हाथ-पैर फूल जाना** घबरा जाना **हक्का-बक्का रह जाना** आश्चर्य चकित हो जाना **दिमाग में विचार कौंधना** अचानक विचार आना **दो-चार होना** रूबरू होना, सामना होना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) परमाणु में क्या नहीं होता है ?

(अ) अणु (ब) इलेक्ट्रॉन (क) प्रोटान (ड) न्यूट्रॉन

(2) माधवन कौन थे ?

(अ) साहित्यकार (ब) राजनेता (क) वैज्ञानिक (ड) अभिनेता

(3) प्रोफेसर रामिश का ड्रीम प्रोजेक्ट क्या था ?

(अ) दवाइयाँ बनाना (ब) कैन्सर का टीका ढूँढ़ना

(क) मानव प्रक्षेषण यंत्र बनाना (ड) कृत्रिम मनुष्य बनाना

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) 'एक नई शुरुआत' के दोनों वैज्ञानिकों के नाम दीजिए ।

(2) मानव प्रक्षषण यंत्र किसे कहते है ?

(3) प्रो. माधवन को पसीना क्यों आ गया ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) प्रोफेसर रामिश के प्रयोग का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

(2) परमाणु विघटन और संगठन के बारे में बताइए ।

(3) अणु तथा परमाणु किसे कहते हैं ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) ऊर्जा के बारे में संक्षेप में बताइए ।

(2) लेखक की दृष्टि से मनुष्य को एक स्थान से दूसरे स्थान पर कैसे भेजा जा सकता है ?

(3) प्रा. रामिश के साथ प्रा. माधवन की पहली मुलाकात कब और कैसे हुई थी ?

(4) 'मानव प्रक्षषण प्रयोग' से संबंधित जानकारी दीजिए ।

5. सूचनानुसार उत्तर दीजिए :

(1) **विरोधी शब्द बनाइए :** सामान्य, शुरुआत, असंभव, शक्तिशाली, आनंद, जटिल

(2) **भाववाचक संज्ञा बनाइए :** मानव, अपना, बच्चा

(3) **कर्तृवाचक संज्ञा बनाइए :** विज्ञान, इतिहास, विश्लेषण, कमांड

(4) **विशेषण बनाइए :** शरीर, क्षण, आनंद, वास्तव

योग्यता-विस्तार

- 'वैज्ञानिक क्षेत्र में हो रहे आधुनिक प्रयोग' विषय पर छात्रों को विचारभिव्यक्ति का अवसर दें ।
- महान वैज्ञानिकों के चित्र एकत्रित कर कक्षा में छात्र चिपकायें ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'उपग्रह प्रक्षेषण यंत्र' की छात्रों को जानकारी दें ।
- वैज्ञानिक प्रयोग करते समय बरतने योग्य सतर्कता के बारे में बताइए ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

13 साधूपदेश

काका हाथरसी

(जन्म : 1906 ई., निधन : 1995 ई.)

'काका हाथरसी' हिन्दी के जानेमाने हास्य-व्यंग्यकार थे । आपने हिन्दी जगत में एक विशेष पहचान बनायी है । मूल नाम प्रभुलाल गर्ग था, पर हाथरस में एक नाट्यमंचन के दौरान आपने 'काका' की भूमिका निभायी थी तभी से आपने स्वयं अपना तखल्लुस काक हाथरसी रख लिया । हिन्दी के हास्य कवियों को मंच देने का श्रेय आपको जाता है । जहाँ कहीं भी हास्य कवि संमेलन आयोजित होते थे वहाँ काका की अनिवार्य अनुपस्थिति होती थी ।

हिन्दी की सुविख्यात पत्र-पत्रिकाएँ यथा 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'वीणा' आदि में आपकी रचनाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होती रहती थीं । कुल मिलाकर आपके नाम 42 संकलन मिलते हैं । व्यंग्य-हास्य के क्षेत्र में आपके सुपुत्र निर्भय हाथरसी का नाम भी प्रसिद्ध है ।

1985 में आपको भारत सरकार द्वारा प्रतिष्ठित 'पद्मश्री' से सम्मानित दिया गया । हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा प्रति वर्ष काका हाथरसी पुरस्कार दिया जाता है ।

प्रस्तुत रचना में ढोंगी धूर्त बाबाओं की लीला का चित्रण किया गया है । 'साधूपदेश' शीर्षक से तो लगता है साधु अर्थात् सज्जन का उपदेश होगा पर कवि ने व्यंग्य शैली अपनाकर ऐसे साधु, ढोंगी बाबा आदि के प्रति अपना आक्रोश प्रकट किया है । पोथी पढ़ने और माला फेरने से कुछ नहीं होता । एक ओर हम 'रामनाम' जपते हैं । गोमुखी में हाथ डाल माला के दाने को फेरते हैं, तो दूसरी ओर मीठी छुरी भी चलाते है । ये तथाकथित साधु-बाबा न तो ज्यादा पढ़े लिखे होते हैं, न ज्ञानी इसलिए भक्तों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर न देने पड़ें इस हेतु 'मौनी बाबा' का स्वांग रचाये बैठे रहते हैं । वे मौन रहकर जीव-जगत और माया संबंधी असंगत बातें, मनगढ़ंत बातें किये जाते है ।

आइये प्रिय भक्तगण !
उपदेश कुछ सुन लीजिये
पढ़ चुके हैं बहुत पोथी
आज कुछ गुन लीजिये ।
हाथ में हो गोमुखी
माला सदा हिलती रहे
नम्र ऊपर से बनें
भीतर छुरी चलती रहे ।

नगर से बाहर बगीचे में
बना लें झोंपड़ी
दीप जैसी देह चमके
सीप जैसी खोपड़ी
तर्क करने के लिये
आ जाए कोई सामने
खुल न जाए पोल इस
भय से लगें मत काँपने ।
जीव क्या है ब्रह्म क्या ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तू कौन है, मैं कौन हूँ ?
स्लेट पर लिख दो महोदय
आजकल मैं मौन हूँ,
धर्मसंकट शीघ्र ही
इस युक्ति से कट जाएँगे ।
सामने से तार्किक विद्वान
सब हट जाएँगे ।

किये जा निष्काम सेवा
सब फलेच्छा छोड़कर
याद फल की जब सताए,
खा पपीता तोड़कर
स्वर्ग का झगड़ा गया
भय भी नरक का छोड़ दे
पाप-घट भर जाए तो
काशी पहुँच कर फोड़ दे ।

शब्दार्थ

पोथी पुस्तक **गोमुखी** ऐसी थैली जिसमें माला रखकर नामस्मरण किया जाता है **तर्क** दलील, **पोल** रहस्य, दोष **धर्मसंकट** मुश्किल **निष्काम** निरपेक्ष बिना किसी कामना के, नि:स्वार्थ

मुहावरा

पोल खोलना रहस्य प्रगट करना, दोष बता देना

कहावत

मुख में राम बगल में छुरी कथनी और करनी में अंतर होना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) कवि भक्तगण को कौन-से गुण ग्रहण करने की बात करते हुए व्यंग्य करते हैं ?
(अ) पोथी पढ़कर ज्ञानी बनना (ब) हाथ में गोमुखी लेकर ईश्वर स्मरण करना
(क) मुख में राम बगल में छुरी चलाना (ड) उपदेश सुनना

(2) आजकल के साधु के सामने कोई तर्क करने आये तो वे क्या युक्ति करेंगे ?
(अ) अपने को ही ज्ञानि सिद्ध करेंगे (ब) डर के मारे वाद-विवाद ही नहीं करेंगे
(क) अपनी झोंपड़ी में प्रवेश ही नहीं करने देंगे (ड) अपनी पोल खुल न जाए इसके लिए मौन रहेंगे

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) दिखावा करते हुए साधु कैसा व्यवहार करता है ?
(2) साधु उपदेश देने के लिए झोंपड़ी कहाँ बनाते हैं ?
(3) दंभी साधुओं को किस बात का भय सताता है ?
(4) साधु मौन धारण क्यों करते है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) ढोंगी साधु भक्तजनों को क्या उपदेश देते हैं ?

(2) ढोंगी साधु मौनव्रत क्यों धारण करते है ?

(3) 'साधूपदेश' काव्य में काका हाथरसी ने किस पर व्यंग्य किया है ?

4. निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

पोल खोलना

5. निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द दीजिए :

प्रिय, नम्र, भीतर, भय, मौन

6. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण बनाइए :

स्वर्ग, चमक, तर्क, धर्म, देह, नगर

7. निम्नलिखित शब्दों की भाववाचक संज्ञा बनाइए :

नम्र, काँपना, गुणी, भयभीत

8. निम्नलिखित शब्दों का कर्तृवाचक संज्ञा बनाइए :

उपदेश, धर्म, झगड़ा

योग्यता-विस्तार

- किसी पत्रिका में प्रकाशित हास्य और व्यंग्य की रचना को वर्ग में सुनाइए ।
- समाचारपत्रों के प्रकाशित ढोंगी साधुओं के समाचारों को काटकर संग्रह कीजिए और बुलेटिन बोर्ड पर प्रस्तुत कीजिए ।

शिक्षण-प्रवृत्ति

- ढोंगी साधुओं की करतूतों से बचने के लिए उपायों और सावधानियों की सूची तैयार कीजिए ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

14 मेरी माँ

रामप्रसाद बिस्मिल
(जन्म : 1887 ई., निधन : 1927 ई.)

रामप्रसाद का जन्म शाहजहाँपुर (उत्तरप्रदेश) में एक साधारण परिवार में हुआ था । उनके जन्म के कुछ वर्ष पहले ही उनके पितामह रोजी-रोटी की तलाश में ग्वालियर के अपने गाँव से आकर यहाँ बसे थे । पिता साधारण पढ़े-लिखे थे । कचहरी में सरकारी स्टाम्प बेचकर परिवार का पालन किया तथा बच्चों को शिक्षा दिलाई । उर्दू मिडिल की परीक्षा में दो बार असफल होने पर अंग्रेजी मिडिल की पढ़ाई की । स्वाध्याय से बांग्ला भाषा सीखी । आरंभ में आर्यसमाज की प्रवृत्तियों से जुड़े बाद में क्रांतिकारी संगठन में सक्रिय हुए । 'काकोरी रेल डकैती' कांड का मुख्य अभियुक्त मानकर इन्हें फाँसी की सजा हुई और वे शहीद हो गए ।

आरंभ में 'राम' तथा 'अज्ञात' नाम से पत्र-पत्रिकाओं में लिखते रहे । बांग्ला से हिन्दी में अनुवाद भी किए । 'आत्मकथा' फाँसी के दो दिन पहले जेल में पूरी करके उन्होंने किसी तरह बाहर भिजवाई । जिसके कुछ अंश श्री गणेशशंकर विद्यार्थी के संपादन में 'काकोरी के शहीद' नाम से छपे ।

माँ केवल जन्म ही नहीं देती, व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है । अपनी आत्मकथा के इन अंशों में प्रसिद्ध क्रांतिकारी रामप्रसाद 'बिस्मिल' अपने जीवन-निर्माण में अपनी माँ के अवर्णनीय योगदान के प्रति नतमस्तक होते हैं और जन्म-जन्मांतर में उनके ऋण से उऋण होने की कोई संभावना नहीं दिखाई देती ।

लखनऊ कांग्रेस में जाने के लिए मेरी बड़ी इच्छा थी । दादीजी और पिताजी तो विरोध करते रहे, किंतु माताजी ने मुझे खर्च दे ही दिया । उसी समय शाहजहाँपुर में सेवा-समिति का आरंभ हुआ था । मैं बड़े उत्साह के साथ सेवा-समिति में सहयोग देता था । पिताजी और दादीजी को मेरे इस प्रकार के कार्य अच्छे न लगते थे, किंतु माताजी मेरा उत्साह भंग न होने देती थीं, जिसके कारण उन्हें अक्सर पिताजी की डाँट-फटकार तथा दंड सहन करना पड़ता था । वास्तव में, मेरी माताजी देवी है । मुझ में जो कुछ जीवन तथा साहस आया, वह मेरी माताजी तथा गुरूदेव श्री सोमदेव जी की कृपाओं का ही परिणाम है । दादीजी और पिताजी मेरे विवाह के लिए बहुत अनुरोध करते, किंतु माताजी यह कहतीं कि शिक्षा पा चुकने के बाद ही विवाह करना उचित होगा । माताजी के प्रोत्साहन तथा सद्व्यवहार ने मेरे जीवन में वह दृढ़ता उत्पन्न की कि किसी आपत्ति तथा संकट के आने पर भी मैंने अपने संकल्प को न त्यागा ।

एक समय मेरे पिताजी दीवानी मुकदमे में किसी पर दावा करके वकील से कह गए थे कि जो काम हो वह मुझसे करा लें । कुछ आवश्यकता पड़ने पर वकील साहब ने मुझे बुला भेजा और कहा कि मैं पिताजी के हस्ताक्षर वकालतनामे पर कर दूँ । मैंने तुरंत उत्तर दिया कि यह तो धर्म विरुद्ध होगा, इस प्रकार का पाप मैं कदापि नहीं कर सकता । वकील साहब ने बहुत समझाया कि मुकदमा खारिज हो जाएगा । किंतु मुझ पर कुछ भी प्रभाव न हुआ, न मैंने हस्ताक्षर किए । अपने जीवन में हमेंशा सत्य का आचरण करता था, चाहे कुछ हो जाए, सत्य बात कह देता था ।

ग्यारह वर्ष की उम्र में माताजी विवाह कर शाहजहाँपुर आई थीं । उस समय वह नितांत अशिक्षित एक ग्रामीण कन्या के समान थीं । शाहजहाँपुर आने के थोड़े दिनों बाद दादीजी ने अपनी छोटी बहन को बुला लिया । उन्होंने माताजी को गृहकार्य की शिक्षा दी । थोड़े दिनों में माताजी ने घर के सब काम-काज को समझ लिया और भोजनादि का ठीक-ठीक प्रबंध करने लगीं । मेरे जन्म होने के पाँच या सात वर्ष बाद उन्होंने हिन्दी पढ़ना आरंभ किया । पढ़ने का शौक उन्हें खुद ही पैदा हुआ था । मुहल्ले की सखी-सहेली जो घर पर आया करती थीं, उन्हीं में जो शिक्षित थीं, माताजी उनसे अक्षर-बोध करतीं । इस प्रकार घर का सब काम कर चुकने के बाद जो कुछ समय मिल जाता, उसमें पढ़ना-लिखना करतीं । परिश्रम के बल से थोड़े दिनों में ही वह देवनागरी पुस्तकों का अध्ययन करने लगीं । मेरी बहनों को छोटी आयु में माताजी ही शिक्षा दिया करती थीं । जब से मैंने आर्यसमाज में प्रवेश किया, माताजी से खूब वार्तालाप होता । उस समय की अपेक्षा अब उनके विचार भी कुछ उदार हो गए हैं । यदि मुझे ऐसी माता न मिलतीं तो मैं भी अति साधारण मनुष्यों की भाँति संसार-चक्र में फँसकर जीवन निर्वाह करता । शिक्षादि के अतिरिक्त क्रांतिकारी जीवन में भी उन्होंने मेरी वैसी ही सहायता

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

की है, जैसी मेजिनी को उनकी माता ने की थी । माताजी का सबसे बड़ा आदेश मेरे लिए यही था कि किसी की प्राणहानि न हो । उनका कहना था कि अपने शत्रु को भी कभी प्राणदंड न देना । उनके इस आदेश की पूर्ति करने के लिए मुझे मजबूरन दो-एक बार अपनी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ी थी ।

जन्मदात्री जननी ! इस जीवन में तो तुम्हारा ऋण उतारने का प्रयत्न करने का भी अवसर न मिला । इस जन्म में तो क्या यदि मैं अनेक जन्मों में भी सारे जीवन प्रयत्न करूँ तो भी तुमसे उऋण नहीं हो सकता । जिस प्रेम तथा दृढ़ता के साथ तुमने इस तुच्छ जीवन का सुधार किया है, वह अवर्णनीय है । मुझे जीवन की प्रत्येक घटना का स्मरण है कि तुमने जिस प्रकार अपनी देववाणी का उपदेश करके मेरा सुधार किया है । तुम्हारी दया से ही मैं देशसेवा में संलग्न हो सका । धार्मिक जीवन में भी तुम्हारे ही प्रोत्साहन ने सहायता दी । जो कुछ शिक्षा मैंने ग्रहण की उसका भी श्रेय तुम्हीं को है । जिस मनोहर रूप से तुम मुझे उपदेश करती थीं, उसका स्मरण कर तुम्हारी मंगलमयी मूर्ति का ध्यान आ जाता है और मस्तक झुक जाता है । तुम्हें यदि मुझे ताड़ना भी देनी हुई, तो बड़े स्नेह से हर बात को समझा दिया । यदि मैंने धृष्टतापूर्ण उत्तर दिया तब तुमने प्रेम भरे शब्दों में यही कहा कि तुम्हें जो अच्छा लगे, वह करो, किंतु ऐसा करना ठीक नहीं, इसका परिणाम अच्छा न होगा । जीवनदात्री ! तुमने इस शरीर को जन्म देकर केवल पालन-पोषण ही नहीं किया बल्कि आत्मिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति में तुम्हीं मेरी सदैव सहायक रहीं । जन्म-जन्मांतर परमात्मा ऐसी ही माता दे ।

महान से महान संकट में भी तुमने मुझे अधीर नहीं होने दिया । सदैव अपनी प्रेम भरी वाणी को सुनाते हुए मुझे सांत्वना देती रहीं । तुम्हारी दया की छाया में मैंने अपने जीवन-भर में कोई कष्ट अनुभव न किया । इस संसार में मेरी किसी भी भोग-विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं । केवल एक इच्छा है, वह यह कि एक बार श्रद्धापूर्वक तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना लेता । किंतु यह इच्छा पूर्ण होती नहीं दिखाई देती और तुम्हें मेरी मृत्यु की दुःखभरी खबर सुनाई जाएगी । माँ ! मुझे विश्वास है कि तुम यह समझ कर धैर्य धारण करोगी कि तुम्हारा पुत्र माताओं की माता - भारत माता की सेवा में अपने जीवन को बलि-देवी की भेंट कर गया और उसने तुम्हारी कोख कलंकित न की, अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहा । जब स्वाधीन भारत का इतिहास लिखा जाएगा, तो उसके किसी पृष्ठ पर उज्वल अक्षरों में तुम्हारा भी नाम लिखा जाएगा । गुरु गोबिंद सिंह जी की धर्मपत्नी ने जब अपने पुत्रों की मृत्यु की खबर सुनी तो बहुत प्रसन्न हुई थीं और गुरु के नाम पर धर्म-रक्षार्थ अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाई बाँटी थीं । जन्मदात्री ! वर दो कि अंतिम समय भी मेरा हृदय किसी प्रकार विचलित न हो और तुम्हारे चरण-कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर-त्याग करूँ ।

शब्दार्थ

प्रोत्साहन उत्साह बढ़ाना, हिम्मत बँधाना **सद्व्यवहार** अच्छा व्यवहार, अच्छी चाल-चलन **संकल्प** दृढ़ निश्चय **वकालतनामा** अदालत में पैरवी करने का अधिकार पत्र **नितांत** बिलकुल, पूरी तरह **जीवन निर्वाह** जीवन व्यतीत करना, जीवन जीना **मेजिनी** - मेजिनी (1805-1875) का जन्म इटली में हुआ था । वह लोकतंत्र का प्रबल समर्थक, परम देशभक्त, सक्रिय और निर्भीक नेता था । अनेक भागों में बँटे इटली को एक करने में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी । वह ऑस्ट्रियन शासन से इटली को मुक्त कराने के लिए जीवन भर लड़ता रहा **जन्मदात्री** जन्म देने वाली, माता, माँ **अवर्णनीय** जिसका वर्णन न हो सके **धृष्टता** उद्दंडता, ढिठाई, दुस्साहस **आत्मिक** आत्मा से संबंधित **जन्म-जन्मांतर** अनेक जन्मों तक **सांत्वना** तसल्ली देना, ढाढ़स बँधाना **धर्म-रक्षार्थ** धर्म की रक्षा के लिए **विचलित** अस्थिर, डिगा हुआ, चंचल

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) बिस्मिल की माताजी का सबसे बड़ा आदेश क्या था ?

(2) बिस्मिल की एक मात्र इच्छा क्या थी ?

(3) बिस्मिल ने वकालत नामे में हस्ताक्षर क्यों नहीं किए ?

(4) बिस्मिल की माताजी के विचार पहले की अपेक्षा अधिक उदार कब हो गए थे ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) बिस्मिल को अपनी एकमात्र इच्छा क्यों पूरी होती दिखाई नहीं दे रही थी ?

(2) अंतिम समय के लिए बिस्मिल अपनी माँ से क्या वर माँगते हैं ?

(3) गुरु गोबिन्द सिंह की पत्नी ने अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाई क्यों बाँटी ?

(4) बिस्मिल की माँ ने शिक्षा प्राप्त करने के लिए क्या-क्या प्रयत्न किए ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) बिस्मिल की आत्मिक, धार्मिक और सामाजिक उन्नति में उनकी माँ का क्या योगदान रहा ?

(2) बिस्मिल की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ?

(3) आपको बिस्मिल की माता के किन गुणों ने सबसे अधिक प्रभावित किया और क्यों ?

4. निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

विरोध, खर्च, आरंभ, उत्साह, सद्‌व्यवहार, उत्तर

5. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

माँ, संकट, सत्य, ऋण, परमात्मा

6. अर्थ की दृष्टि से वाक्य के प्रकार बताइए :

(1) मैं बड़े उत्साह के साथ सेवा समिति में सहयोग देता था ।

(2) अब मैं तुमसे नहीं मिल सकूँगा ।

(3) परमात्मा जन्म-जन्मान्तर ऐसी ही माता दे ।

(4) क्या मैं कभी तुम्हारा कर्ज चुका सकूँगा ।

योग्यता-विस्तार

- 'बच्चे माँ-बाप की विशेष सम्पत्ति हैं ।' इस विषय पर वक्तृत्व स्पर्धा का आयोजन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'अपने जीवन में माता-पिता की भूमिका' विषय पर छात्रों को मौखिक अभिव्यक्ति का अवसर दें ।
- स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने वाले किन्हीं दो क्रांतिकारियों के जीवन-कार्य के बारे में विद्यार्थियों को बतलाएँ ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

15 हे जनशक्ति महान !

रांगेय राघव
(जन्म : सन् 1923 ई., निधन : सन् 1962 ई.)

रांगेयजी कवि, उपन्यासकार, विचारक तथा कहानीकार हैं । उनके द्वारा लिखा गया साहित्य मात्रा की दृष्टि से ही नहीं, गुणवत्ता की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है ।

रांगेय राघव ने इतिहास, समाज और व्यक्ति की मनोवृत्ति का चित्रण करते हुए अनेक उपन्यास तथा कहानियाँ लिखी हैं । इनमें मुख्य हैं – 'रामानुज', 'घरौंदा', 'विषादमठ', 'लोई का ताना', 'पक्षी और आकाश', 'कब तक पुकारूँ', 'राई का पर्वत', 'पथ का पाप', 'मुर्दों का टीला' आदि । 'मेधावी' उनका प्रबंध काव्य है तथा 'पिघलते पत्थर', 'राह के दीपक' में उनकी कविताएँ संकलित हैं ।

प्रस्तुत गीत में कवि रांगेयजी ने भारत की जनशक्ति को जगाने का आह्वान किया है । ये इस विराट 'जनशक्ति' की चेतना द्वारा भारत में महाक्रांति लाना चाहते हैं जिसके द्वारा एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं जहाँ लोग अमन-चैन से रह सकें । कवि ने भारतीय जनशक्ति को नवयुग का अग्रदूत बताया है ।

हे जनशक्ति महान !
जागो और जगाओ ।
हम पृथ्वी पर स्वर्ग बनायेंगे
हम दुनिया नयी बसायेंगे
हम महाजागरण गर्जन कर
अविराम चेतना लायेंगे
हे मजदूर किसान !
जागो और जगाओ ।
हम जलती आग बुझायेंगे
मानव संतोष जगायेंगे
हम ज्योति लिये उन्नति-पथ पर
अविरत बढ़ते ही जायेंगे
हे जन गौरव प्राण !
जागो और जगाओ ।
हम श्रम का वंदन करते हैं
मेधा का गायन करते हैं
हम मानव का निर्माण अमर
लख कर सुख गर्जन करते हैं
हे जीवन अभिमान !
जागो और जगाओ ।
हम हैं नवयुग के अग्रदूत
हम काल-जलधि-नाविक अभूत
हम साम्य-दीप के नव प्रकाश
हम विजयोन्मादी क्रान्ति पूत
हे प्रदीप्त गतिमान !
जागो और जगाओ ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

अविराम निरंतर **चेतना** जागृति होश, बुद्धि, समझ **ज्योति** प्रकाश **उन्नति** प्रगति **पथ** रास्ता **मेधा** बुद्धि **अग्रदूत** अग्रणी **जलधि** सागर **नाविक** मल्लाह **अभूत** जो हुआ न हो **पूत** पुत्र **प्रदीप्त** प्रकाशित

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर खाली जगह भरिए :

(1) जनशक्ति की चेतना द्वारा भारत में .... लाना चाहिए ।

(अ) नवचेतना (ब) परिवर्तन (क) महाक्रांति (ड) नवयुग

(2) हम हैं नवयुग के .... ।

(अ) निर्माता (ब) वाहक (क) अग्रदूत (ड) पहरेदार

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने जनशक्ति को संबोधित करते हुए क्या कहा है ?

(2) महाजागरण गर्जन से किसकी प्राप्ति होगी ?

(3) हम नवयुग के अग्रदूत कैसे बन सकते हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने मजदूर एवं किसान को क्या प्रेरणा दी है ?

(2) 'हे जनशक्ति महान' गीत के माध्यम से कवि ने जनमानस को क्या संदेश दिया है ?

4. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

अविराम, मेधा, अभिमान, जलधि

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

संतोष, निर्माण, प्रकाश, विजय

6. निम्नलिखित शब्दों की संधि-विच्छेद कीजिए :

उन्नति, नाविक, विजयोन्मादी

योग्यता-विस्तार

- 'आधुनिक हिन्दी कविता' प्राप्त करते उसमें से 'कर्मवीर' (हरिऔध), 'मेरा जीवन' (सुभद्राकुमारी चौहान), पढ़िए और इन काव्यों से उनकी तुलना कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- इस प्रकार की अन्य प्रेरक रचनाएँ छात्रों के सामने प्रस्तुत कीजिए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

16 चोरी

यशपाल जैन

(जन्म : सन् 1912 ई., मृत्यु : सन् 2000 ई.)

आपका जन्म अलीगढ़ जिले के विजयगढ़ कस्बे में हुआ था । बालसाहित्य पर आपने अपनी लेखनी चलाई । बाल मनोविज्ञान पर उन्होंने अनेक कहानियाँ लिखी हैं । सन् 1990 में उनको भारत सरकार का प्रतिष्ठित पुरस्कार 'पद्मश्री' प्राप्त हुआ था ।

'अजन्ता इलोरा', 'अहिंसा' और 'भारत के यात्री' उनकी ख्यातनाम कृतियाँ हैं ।

नौकर हमारे परिवार का अंग होना चाहिए । हमें उसके साथ आत्मीय व्यवहार करते हुए स्वीकार करना चाहिए । हम जो खाते हैं वह नौकर को भी मिलना चाहिए ताकि मानवीय और सौहार्दपूर्ण वातावरण से घर में सुख-शांति और आनंद बना रहे । इस संदेश के साथ एक परिवार की कहानी यहाँ सुंदर ढ़ंग से प्रस्तुत की गई है ।

कमरे को साफ कर झाड़ू पर कूड़ा रखे जब बिन्दू कमरे से बाहर निकला, तब बराण्डे में बैठी मालती का ध्यान उसकी ओर अनायास ही चला गया । उसने देखा कि एक हाथ में झाड़ू है; पर दूसरे हाथ की मुट्ठी बँधी है और कुछ पीछे की ओर जानबूझकर आड़ में कर ली गई है । मालती को लगा, हो न हो, कमरे से बिन्दू कुछ लाया है । उसने कहा, 'बिन्दू !'

दो कदम पर बिन्दू, पर उसने मानो मालती की आवाज सुनी ही न हो ! वह चलता ही गया; बल्कि मालती ने देखा कि उसकी पुकार पर बिन्दू की चाल में कुछ तेजी आ गई है । गुस्से में भरकर उसने कहा, 'बिन्दू ! ओ बिन्दू ! ठहर, कहाँ जाता है ?'

इतना कहना था कि बिन्दू तो दौड़ने लगा और वह गया, वह गया । मालती के संदेह की पुष्टि के लिए यह सब काफ़ी था । उसने तेजी के साथ कहा, 'सुनते हो जी, देखो, बिन्दू कुछ लिये जा रहा है । जल्दी आओ ।'

नंदन अपने कमरे में बैठा अपने पत्र के लिए कुछ लिख रहा था । मालती का यों चिल्लाना उसे अच्छा नहीं लगा और उसने चाहा कि टाल दे; पर मालती माने तब न ! एक सपाटे में वह कमरे में आ गई और बोली, 'झटपट उठो । देखो, बिन्दू मुट्ठी में दबाये कुछ ले गया है ।'

नंदन ने कलम एक ओर रख दी और जैसे किसी ने जबरदस्ती पकड़कर उठा लिया हो, वह उठा । कमरे से बाहर आया तो देखता क्या है कि बिन्दू लौटकर आ रहा है । एक हाथ में झाड़ू है, दूसरा रीता है और नीचे लटका है । उसे देखते ही मालती उबल पड़ी, 'क्यों रे बिन्दू के बच्चे, मैं गला फाड़ती रही और तू रुका तक नहीं ! बोल हाथ में क्या ले गया था ?'

बिन्दू का चेहरा फक ! बोला, 'कुछ नहीं, बीबीजी !'

'झूठा कहीं का ! क्यों रे, तेरे हाथ में कुछ नहीं था, तो मेरे पुकारने पर फिर तू रुका क्यों नहीं ?' मालती ने रोषपूर्ण स्वर में पूछा ।

बिन्दू से बोला नहीं जा रहा था । कहे, तो क्या कहे ! तब नंदन आगे बढ़ा । बोला, 'घबराओ नहीं ! सच बताओ कि क्या ले गये थे ?'

'सच, बाबूजी, मेरे हाथ में झाड़ू थी और कूड़ा था ।'

'फिर वही झूठ !' मालती ने चिढ़कर कहा । 'इसे पुलिस में दे दो । लातों के देव कहीं बातों से मानते हैं ? इस बेईमान के ऊपर घर छोड़ रखा है, तो इसीलिए कि चीज उठा-उठाकर ले जाए और ऊपर से झूठ बोले !'

नंदन ने मालती को शान्त कर कहा, 'असली बात जानने का यह तरीका नहीं है ।' फिर बिन्दू को उसने प्यार से समझाया और कहा, 'मैं तुम से कुछ कहूँगा नहीं । ठीक-ठीक बताओ कि क्या ले गये थे ।' किन्तु बिन्दू घबराया-सा, खोया-सा, धरती की ओर देखता रहा और नंदन का बहुत आग्रह हुआ तो उसने इतना ही कहा 'मैंने कुछ लिया है ।'

नंदन फिर भी खीझा नहीं । बोला, 'अच्छा चल, देखूँ, तू कूड़ा कहाँ फेंक आया है ?'

बिन्दू पहले तो कुछ ठिठका, अनन्तर मुड़कर चुपचाप आगे हो लिया । नंदन और मालती ने वह जगह देखी, पर कुछ दिखा नहीं । नंदन ने कहा, 'बिन्दू, यो हैरान करने से क्या होगा ? बता क्यों नहीं देता कि क्या लाया था ?'

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बिन्दू के होठ खुले, जैसे कुछ कहना चाहता हो; पर फिर बंद हो गये ।

'हाँ कहो, रुक क्यों गये ?' नंदन ने शान्त स्वर में कहा ।

'बाबूजी...' बिन्दू फिर चुप ।

'शाबाश, कहो-कहो ।'

'बाबू...जी, थोड़ी-सी मेवा नीचे पड़ी थी । मैं उठा लाया ।' बिन्दू कह तो गया; पर जैसे वह अनुभव कर रहा हो कि दुनिया का जाने कितना गहरा पाप उसने कर डाला है ।

'मैं कहती थी न !' मालती बोल उठी, 'कि यह कुछ-न-कुछ ले जरूर आया है । देखा, मेरी बात सच निकली न !'

'मेवा का तुमने क्या किया, बिन्दू ?'

'खा ली ।'

'इतनी जल्दी ? बिन्दू, झूठ मत बोलो ! सच बता दो ।'

'इधर फेंक दी ।'

नंदन और मालती ने देखा कि उसकी बताई जगह पर थोड़े से काजू और कुछ किसमिशें पड़ी हैं । नंदन ने बिन्दू के कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'मेरे साथ आओ ।'

बिन्दू चुपचाप मालिक के साथ चल दिया । नंदन उसे लेकर कमरे की ओर गया । मालती ने कहा, 'आज इसने मेवा ली है, कल को और कुछ उठा ले जाएगा । एक बार जो नीयत बिगड़ी, तो क्या फिर हाथ रुकता है ?'

नंदन ने पत्नी की बात सुनी-अनसुनी कर दी । बिन्दू को साथ लेकर कमरे में गया और कनस्तर खोलकर उसमें से एक मुट्ठी मेवा उसके हाथ में देते हुए बोला, 'बिन्दू, लो, खा लो !'

पति के इस नरमी के व्यवहार से मालती आग-बबूला हो गई । बोली, 'ऐसे ही तो नौकर बिगड़ते हैं । उसे कुछ कहना तो दूर, उलटे उसकी खुशामद कर रहे हो !'

नंदन मुस्कराया । बोला, 'मालती, चोर बिन्दू नहीं है, हम हैं । हम क्यों ऐसी चीजें खाएँ जो सबको नहीं मिलती ? इसीसे तो चोरी की भावना को जन्म मिलता है । हम लोग रोज मेवा खाते है । एक दिन इस बेचारे का मन चल आया और थोड़ी-सी ले ली, तो क्या हो गया ?'

'मैं कब कहती हूँ कि कुछ हो गया ! बात मेवा की नहीं है, नीयत की है । इसका जी चला था तो माँग लेता । मैं न देती तब कहता । घर में पचासों चीजें रहती हैं । यों तो जिस पर मन आएगा, उठाकर ले जाएगा और एक दिन यहीं होना है । वह न करेगा तो तुम करवाओगे ।'

'मालती, यह बात नाराज होने की नहीं है, सोचने की है । जब तक सब चीजें सबको नहीं मिलती, चोरी बंद नहीं हो सकती । चोरी अच्छी नहीं है, पर आज की स्थिति बड़ी लाचारी की हो गई है ।' नंदन ने समझाते हुए कहा ।

'देख लेना, एक दिन यही बिन्दू घर में से ट्रंक उठाकर न ले जाए तो मेरा नाम मालती नहीं ।'

इतना कहकर मालती रसोई में चली गई और नंदन पुन: अपनी कुर्सी पर आ बैठा । पर मन उसका दूसरी ही दिशा में चल रहा था । थोड़ी देर वह सोचता रहा । फिर उसने विचारों को समेटा और लेख पूरा करने में लग गया ।

लेख पूरा हुआ तो काफ़ी देर हो चुकी थी । वह उठा और सीधा रसोई में पहुँचा । देखता क्या है कि मालती सिल पर चटनी पीस रही है । नंदन ने कहा, 'बिन्दू कहाँ है ?'

'मैं क्या जानूँ ? तुम जानो और तुम्हारा लाडला बिन्दू जाने ।'

'उसे निकाल दिया ?'

'निकालनेवाली मैं कौन होती हूँ ?'

'कब से नहीं हैं ?'

'तभी चला गया था ।'

नंदन थोड़ा हैरानी में पड़ा । मालती ने पुन: कहा, 'तुम यहाँ के नौकरों को जानते नहीं । अपने घर में भी उनका हाथ रुकता नहीं । कुन्दन के यहाँ कितना अनाज भरा है ! फिर भी एक दिन आँख बच गई तो काका के यहाँ से गेहूँ ले ही गया ।'

नंदन जानता था कि बहस का अंत नहीं । उसने बात आगे नहीं बढ़ाई और तौलिया उठाकर स्नान करने चला गया । स्नान करने के बाद उसने भोजन किया ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दोपहर बीती और शाम होने को आई । फिर भी जब बिन्दू न लौटा तो मालती के मन को अच्छा नहीं लगा । चौके में अब भी बिन्दू का खाना पड़ा था ।

'झूठ बोला तो क्या, आखिर बालक ही तो है । बेचारा, भूखा जाने कहाँ भटक रहा होगा ।'

कई बार कमरे से बाहर आ-आकर मालती ने बिन्दू को देखा, फिर बगीचे का एक चक्कर लगाया कि कहीं पेड़ के नीचे पड़ा सो न रहा हो । पर बिन्दू वहाँ कहाँ था जो मिलता ! मालती आकर पलंग पर पड़ गई और अपने को कोसने लगी कि जरा-सी बात को इतना तूल क्यों दिया । थोड़ी-सी मेवा ले गया था, तो क्या गज़ब हो गया था ?

सोचते-सोचते देर हो गई तो वह उठी और सहन में टहलने लगी । इतने में कुन्दन उधर से निकला तो मालती ने उत्सुकता से पूछा, 'कुन्दन, तुमने बिन्दू को देखा है क्या ?'

'बिन्दू ?' कुन्दन बोला, 'अरे, वह तो नदीवाली कोठरी में पड़ा है ?'

मालती तत्काल पैरों में चप्पल डालकर बाहर हो गई ।

लौटी तो बिन्दू उसके साथ था । बाँह पकड़कर नंदन के कमरे में ले गई और बोली, 'देखी तुमने इसकी बात ! यहाँ से गया है, तब से वहाँ कोठरी में पड़ा है ।'

नंदन ने कहा, 'क्यों रे, वहाँ क्या कर रहा था ?'

बिन्दू चूप ।

'मैं पूछता हूँ, वहाँ क्या कर रहा था ?'

फिर चुप ।

'अरे, बोलता क्यों नहीं ? मुँह में जबान नहीं है ?'

बिन्दू की आँखें डबडबा आई ।

मालती ने कहा, 'इसका पागलपन देखो । सबेरे से कुछ नहीं खाया और भूखा-प्यासा वहाँ पड़ा है । चल, खाना खा ।'

नंदन ने कुछ कहने से पहले ही वह उसे चौके में ले गई और स्वयं परोसकर उसे खिलाने लगी । बोली, 'भर-पेट खा लेना । भूखा मत रहना ।'

नंदन ने पत्नी की बात सुनी और एक प्रसन्नताभरी मुस्कुराहट उसके चेहरे पर दौड़ गई ।

शब्दार्थ

अनायास अचानक, बिना प्रयत्न के **सन्देह** शक **रीता** खाली **कनस्तर** डिब्बा **नीयत** दानत **बहस** चर्चा

मुहावरे

गला फाड़ना जोरों से चिल्लाना **आग बबूला हो जाना** बहुत गुस्सा आना

कहावत

लातों के देव बातों से नहीं मानते (जैसा व्यक्ति वैसा व्यवहार) बुरे लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने से वे नहीं मानते हैं ।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) मालती की आवाज सुनकर बिन्दू की चाल में ……… ।
(अ) रुकावट आ गई । (ब) तेजी आ गई । (क) बदल गई । (ड) सुधार आ गई ।

(2) 'असली बात जानने का यह तरीका नहीं है ?' यह कौन कहता है ?
(अ) मालती (ब) बिन्दू (क) नंदन (ड) नयन

(3) 'देख लेना, एक दिन यही बिन्दू घर में से ……… उठाकर न ले जाए तो मेरा नाम मालती नहीं ।'
(अ) संदूक (ब) अनाज (क) ट्रंक (ड) सामान

(4) 'अरे, वह तो नदीवाली कोठरी में पड़ा है ।' यह वाक्य कौन कहता है ?
(अ) कुन्दन (ब) नंदन (क) मालती (ड) बिन्दू

(5) नंदन ने पत्नी की बात सुनी तो उसके चहेरे पर ……… आ गई ।
(अ) चिंता की रेखा (ब) प्रसन्नता भरी मुस्कुराहट
(क) प्रसन्नता (ड) मुस्कुराहट

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) मालती के मन में बिन्दू के प्रति क्या आशंका हुई ?

(2) मालती को शांत करते हुए नंदन ने क्या कहा ?

(3) कूड़ा फेंकने की जगह पर नंदन और मालती को क्या दिखा ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) नंदन ने बिन्दू से चोरी की बात किस प्रकार मालूम की ?

(2) बिन्दू ने अपने दोष का किस प्रकार पश्चाताप किया ?

(3) बिन्दू के न दिखने पर मालती को क्या चिंता हुई ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) नौकर के संबंध में नंदन और मालती के विचारों में क्या अंतर था ?

(2) चोरी का पता लग जाने पर नंदन ने बिन्दू के साथ कैसा व्यवहार किया ? क्यों ?

(3) बिन्दू के प्रति सहानुभूति जगने पर मालती ने क्या किया ?

5. उचित जोड़ मिलाइए :

(1) बिन्दू
नंदन 'बिन्दू ! ओ बिन्दू ! ठहर, कहाँ जाता है ?'
मालती

(2) नंदन
मालती 'सच बाबूजी, मेरे हाथ में झाड़ू थी और कूड़ा था ।'
बिन्दू

(3) मालती
बिन्दू 'असली बात जानने का यह तरीका नहीं है ।'
नंदन

(4) नंदन
बिन्दू 'अरे, बोलता क्यों नहीं ? मुँह में जबान नहीं है ?'
मालती

(5) मालती
कुन्दन 'अरे, वह तो नदीवाली कोठरी में पड़ा है ।'
नंदन

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द दीजिए :

बेइमान, मालिक, असली, झूठ

7. निम्नलिखित शब्दों की भाववाचक संज्ञा बनाइए :

बच्चा, मुस्कुराना, लड़का, प्रसन्न, बूढ़ा, पागल, चोर

8. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) 'लातों के देव बातों से नहीं मानते हैं ।'

(2) हम क्यों ऐसी चीजें खायें जो सबको नहीं मिलती, इसीसे तो चोरी की भावना को जन्म मिलता है ।

योग्यता-विस्तार

- 'चोरी' कहानी के आधार पर 'मालती की ममता' पर एक अनुच्छेद लिखिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- बच्चे सच बोलना सीखें ऐसी अन्य कहानी या प्रेरक प्रसंग कक्षा में सुनाइए ।
- छात्रों से प्रेरक कथाओं का संकलन करवाइए ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

17 कश्मीर

वीरेन्द्र मिश्र

(जन्म : 1933 ई., निधन : 1999 ई.)

वीरेन्द्र मिश्रजी का जन्म मरैन (मध्य प्रदेश) में हुआ था । ये आकाशवाणी के मानद प्रोड्यूसर रहे थे । ये नवगीत विधा के गीतकार थे और फिल्मों के लिए भी गीत लिखते थे । इनके मुख्य काव्य संग्रह हैं गीतम, अविराम, अचल, मधुवंती, लेखनी बेला, झुलसा है छाया नट-धूप में, काले मेघा पानी दे तथा शांति गन्धर्व । इन्हें देव पुरस्कार एवं निराला पुरस्कार प्राप्त हुए हैं ।

कश्मीर काव्य में कश्मीर के सौंदर्य एवं संस्कृति का परिचय कराया है ।

जहाँ बर्फ़ की राजकुमारी खोयी है स्वर-लहरी में
चलो चलें फूलों की घाटी में, नावों की नगरी में

सन सन सन सन सनन सनन, गाता फिरता गीत पवन
उड़ते हैं पंछी सैलानी, खिलता शालीमार चमन
भ्रमर बजाते शहनाई, किरनों की मालिन आई
झील किनारे वह डलिया भर धूप बिखेरे बजरी में

जंगल-जंगल होड़ लगी है तितली और टिटिहरी है
कभी हवा आ जाती है, नयी ग़ज़ल गा जाती है
तब मखमली गलीचों पर कुछ मस्ती-सी छा जाती है
मौसम कभी बदलता है, सपना कभी मचलता है
चरवाहे की वंशी छिड़ती, नील गगन की छतरी में

पलछिन किसी बहाने से, गुजरे हुए जमाने से
बस्ती करती बात जहाँ है, दूर खड़े वीराने से
चश्मे जहाँ हिमानी हैं, फूल जहाँ रूमानी हैं
हिल-हिलकर कहते पत्तों से चाँद छुपा है बदली में

जल में खिलीं रुबाइयाँ, बजरों की अँगड़ाइयाँ
चले शिकारे, संग में चल दीं बागों की परछाइयाँ
प्रेम कथाएँ विल्हण की, कौन कहे गाथा मन की
झेलम सोयी तारोंवाले नभ की नील मसहरी में

'अमरनाथ' की राहों में 'शेषनाग' की बाँहों में
पश्मीना ध्वज फहर रहा है देवदारु की छाँहों में
मन जिसका गंभीर है, वह अपना कश्मीर है
दाग लगे ना देखो भारत की बर्फ़ीली पगड़ी में

चलो चलें फूलों की घाटी में, नावों की नगरी में !

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

सैलानी सहेलगाह पर आये हुए यात्री, पर्यटक **चमन** बाग **भ्रमर** भौरा **झील** बड़ा तालाब, सरोवर **डलिया** बाँस का छोटा पात्र **बजरी** कंटीली घास **आलम** दुनिया **सुरमई** सुरमे के रंग का, हल्का नीला रंग **मल्लाह** नाविक **टिटिहरी** एक पक्षी विशेष का नाम **पलछिन** पल क्षण **विराना** निर्जन **हिमानी** शीतल **रूमानी** मुलायम **विल्हण** प्रेमी का नाम **मसहरी** मच्छरदानी, पलंग **पश्मीना** बर्फीली कश्मीरी भेड़ विशेष के ऊन का नाम **चश्मा** झरना **शबनम** ओस **रुबाइयाँ** फारसी काव्य का एक प्रकार **कल्हण** मूल नाम कल्याण है जो कश्मीरी कवि हैं जिसने राजतरंगिणी काव्य की रचना की है, जिसमें कश्मीर के आरंभकाल से रचनाकाल तक के इतिहास का वर्णन है ।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कविने नावों की नगरी किसे कहा है ?

(2) कश्मीरी हवा क्या गाती है ?

(3) जंगल में किन-किन के बीच होड़ लगी है ?

(4) कवि को चश्मे और फूल कैसे लगते हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कश्मीर में सुबह किस तरह होती है ?

(2) कश्मीर की रक्षा के लिए कवि क्या कहते हैं ?

(3) कश्मीर में हवा चलने पर वातावरण कैसा होता है ?

(4) पश्मीना ध्वज से कवि का क्या तात्पर्य है ?

(5) कवि ने कश्मीर को नावों की नगरी क्यों कहा है ?

3. निम्नलिखित प्रश्न का पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि कश्मीर दर्शन के लिए आह्वान देते हुए कश्मीर का कैसा चित्र प्रस्तुत करते हैं ?

4. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पवन, पंछी, चमन, आलम, मल्लाह, मौसम, मसहरी, शबनम

5. निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द लिखिए :

घाटी, स्वर्ग, श्याम, मीठी, दूर

6. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण बनाइए :

बर्फ, हिम, मखमल, स्वर्ग

योग्यता-विस्तार

- कश्मीर के दर्शनीय स्थानों के चित्रों का अलबम बनाइए ।
- कश्मीरी लोक कथाओं का संकलन पढ़िए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को कश्मीर की तरह भारत के अन्य दर्शनीय स्थानों के बारे में जानकारी दी ।
- 'कलापी' का कश्मीर दर्शन यात्रा वर्णन पढ़िए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

18 रचना

रघुवीर चौधरी
(जन्म : सन् 1938 ई.)

सर्जक, चिंतक, कर्मशील रघुवीर चौधरी का जन्म बापूपुरा (जिला गांधीनगर) उत्तर गुजरात में हुआ । स्कूली शिक्षा माणसा तथा उच्च शिक्षा अहमदाबाद सेंट जेवियर्स कॉलेज से, हिन्दी का अध्यापन भाषा-साहित्य भवन, गुजरात यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर पद से निवृत्त हुए और नई तालीम की संस्थाओं के सूत्रधार बने ।

रघुवीरभाई ने गुजराती भाषा में लगभग सभी विधाओं पर साधिकार लेखन किया है । कथा साहित्य, नाटक, कविता, रेखाचित्र आदि में उल्लेकनीय योगदान दिया है । अमृता, उपरवास कथात्रयी, वेणु-वत्सला, सोमतीर्थ, रुद्रमहालय आदि उपन्यास उनकी कीर्ति के स्तंभ हैं । गोकुल-मथुरा-द्वारका, अमृता तथा उपरवास कथात्रयी के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं । ग्रामीण जीवन के निकट संपर्क, शहरी अनुभवों की अभिव्यक्ति के साथ ही ऐतिहासिकता उनकी रचनाओं के प्रमुख आयाम है । मूल्यनिष्ठा उनका रचनाओं के प्रमुख स्वर हैं । उनकी लम्बी कविता 'बचावनामु' इस दृष्टि से उल्लेकनीय है । रघुवीरभाई को ऊपरवास कथात्रयी के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है । वे गुजराती के सभी प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं, इनमें रणजितराम सुवर्ण चंद्रक, क. मा. मुनशी स्वर्ण चंद्रक, गोवर्धनराम त्रिपाठी पुरस्कार आदि मुख्य हैं । इन्हें साहित्य अकादमी की मानद् फेलोशिप प्राप्त है । भारत का प्रतिष्ठित साहित्यिक सम्मान (2015) ज्ञानपीठ पुरस्कार से आपको सम्मानित किया गया है ।

(शाम का समय है । ग्राम-पंचायत के कार्यालय के बंद दरवाजे के पास बैठा चौकीदार जम्हाई ले रहा है । दूर बैठे रमेश, निमेष और नरेश गंभीरता से बात करते दिखाई देते हैं । गोपी प्रवेश करती है ।)

गोपी : (दोनों ओर देख लेने के बाद) अविनाशजी यहाँ नहीं आए ?

निमेष : अरे गोपी तुम ! क्या कोई काम था अविनाश का ?

गोपी : खास तो नहीं पर कल उन्होंने वादा किया था कि आज इसी समय वे मुझे प्रसादजी की कविता समझाएँगे ।

रमेश : कविता समझने से कोई फायदा नहीं होगा गोपी, कोई ठोस काम करो या अविनाश को करने दो ।

गोपी : आप भी कैसा मजाक कर रहे हैं, रमेश भाई ! कविता तो आत्मा की कला है, संवेदना का सौंदर्य है ।

निमेष : पर आत्मा या संवेदना हो तभी न ?

गोपी : क्या निमेषभाई के आत्मा नहीं है ?

निमेष : कभी थी, आज नहीं है, हम सब आज निर्णय कर चुके हैं कि ये जो हमारे हाथ हैं, वे ही पर्याप्त हैं ।

गोपी : हाथ तो सभी के होते हैं ।

नरेश : पर हम आज इन हाथों का कमाल दिखाएँगे ।

गोपी : मैं समझी नहीं, नरेशभाई !

नरेश : हम इन हाथों का सदुपयोग करेंगे ।

गोपी : यह तो आपने और भी मुश्किल बात कही ।

रमेश : तुम अभी बच्ची हो, जाओ कविता पढ़ो ।

गोपी : सो तो आपकी सलाह के बिना भी पढ़ूँगी । लेकिन, सचमुच आप अपने हाथों का सदुपयोग करने जा रहे हैं, तो इच्छा होती है कि मैं भी साथ क्यों न दूँ ?

रमेश : तुम्हारे हाथ अभी कोमल हैं, बहिन ! जाओ, अविनाश से में कहूँगा कि तुम आई थीं । जाओ । मगर हाँ, उसका इंतजार मत करना । आज हम यहाँ से हटनेवाले नहीं है, न तो पंचायत के किसी सदस्य को हटने देंगे, जब तक वे हमारे सभी सवालों का जवाब न दे दें ।

गोपी : जवाब क्यों नहीं देंगे ? जो लंबा भाषण कर सकता है उसके लिए जवाब देना तो बड़ा आसान होता है ।

नरेश : आसान होता तो वे यहाँ आकर हमसे बात न करते ? (खड़ा होकर चौकीदार की ओर जाता है ।) देखो तो सही, दरवाजा बंद करके सभी भीतर बैठे हैं । नालायक, उल्लू के पट्ठे ।

निमेष : अपशब्दों के उपयोग पर अविनाश का प्रतिबंध है, याद रखो ।

नरेश : तभी तो हम अभी तक शांत हैं । कितनी बार तो हमने प्रार्थनापत्र दिए ? कितने दिन तक प्रतीक्षा की ? आखिर हारकर आज उपवास पर बैठे हैं ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रमेश : (नरेश की बात को आगे बढ़ाते हुए) ठीक दो घंटे पहले उनकी मीटिंग शुरू हुई थी । बीच में हमने बार-बार कहलवाया कि हमको अंदर बुलाओ या बाहर आकर हमसे बात करो । बस, जवाब ही नहीं दिया ।

नरेश : जैसे हमारी हस्ती ही उन्हें कुबूल नहीं ।

रमेश : ऐसा तो नहीं है, पर वे जानते हैं कि पिंजरापोल के मवेशियों की तरह ये कुछ नहीं कर सकते ।

नरेश : (ऊँची आवाज में) हम कुछ नहीं कर सकते ?

निमेष : जवाब-तलब कर सकते हैं ।

रमेश : (गोपी से) आखिर सदस्य साहबों ने कहलवाया कि तुम चाहो तो शिष्ट भाषा में आवेदन पत्र दे सकते हो ।

गोपी : बड़ी मेहरबानी की उन्होंने । पर क्या आप शिष्ट भाषा का उपयोग कर सकेंगे ?

नरेश : अविनाश कर सकता है । हमने कहा कि जाओ भाई एकांत में बैठकर संस्कृत प्रचुर भाषा में लिख लाओ । पर बड़ी देर की..... ।

रमेश : शिष्ट शब्द खोज रहा होगा !

गोपी : आप उनकी मदद करते तो अच्छा होता ।

नरेश : बस, हमने मैटर दे दिया है ।

गोपी : मैं जान सकती हूँ ?

नरेश : क्यों नहीं ? सारा गाँव जानता है । इन सदस्य महोदयों ने बेशर्म होकर भ्रष्टाचार के कई मामलों में जो सहयोग किया है.... ।

गोपी : चलिए एक क्षेत्र में तो सहकार की भावना फली ।

रमेश : गोपी, इस बात पर तुम भीतर जाकर इन लोगों को बधाई दो । मजा आएगा ।

निमेष : वे हमारा मजाक समझ पाएँ तभी न....।

नरेश : वे समझेंगे कि गोपी जैसी होनहार लड़की ने हमें बधाई दी है, तारीफ़ की है ।

गोपी : क्या सबके सब बुद्धू हैं ?

निमेष : हैं तो बड़े चालाक पर जरूरत पड़ने पर बुद्धू भी बन सकते हैं । अविनाश अभी क्यों नहीं आया ? जरा देखो तो सही गोपी, वह शायद दद्दा के घर बैठा हो ।

गोपी : आप लोगों को हर्ज न हो तो उनके साथ यहाँ आऊँ ।

रमेश : हर्ज तो शायद तुम्हारे बड़े भाई साहब को होगा ।

गोपी : यह आपकी गलतफ़हमी है । मैं आऊँगी । (जाती है)

(नरेश बंद दरवाजे के पास जाकर दरार से देखने की कोशिश करता है । चौकीदार हाथ पकड़कर उसे हटा देता है ।)

रमेश : क्या कुछ पता चला ?

नरेश : कैसे चले ? मुँह में मुँह डाले खुसुर-फुसुर कर रहे हैं सभी ।

अविनाश : (प्रवेश करते हुए) किसी का तिरस्कार मत करो नरेश । हम इस गाँव के पढ़े-लिखे युवक हैं, हमारी जिम्मेदारी कुछ ज्यादा है ।

रमेश : सो तो है ही । (अविनाश से आवेदनपत्र लेकर पढ़ता है ।)

निमेष : क्या लिखा ?

अविनाश : बस वही, उनके सभी घोटाले-पंचायत के घाटे के कारण, उर्वरकों के वितरण का प्रश्न, गरीबों के लिए आनेवाले रेशन को काला बाजार में बेचने की बात –

निमेष : वे तो कह देंगे कि रेशन वगैरह का काम तो सहकारी मंड़ली करती है ।

रमेश : मगर उस मंड़ली पर कुंड़ली मारकर तो वे ही बैठे हैं या कोई और ?

नरेश : ठीक है, ठीक है, जाओ दे आओ अविनाश !

अविनाश : आप दे आइए, रमेशभाई ।

निमेष : हाँ, आप बड़े हैं हम सबसे ।

रमेश : इससे क्या ? हमको जगाया तो है अविनाश ने ही ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अविनाश : छोड़िए इन फालतू बातों को । आप दे आइए और कहिए कि हमें आज ही जवाब चाहिए ।

नरेश : अभी ।

रमेश : अच्छा (चौकीदार के पास जाकर) दरवाजा खोल दो ! मैं कहता हूँ दरवाजा खोल दो ! क्या ? हुकुम नहीं है ? हुकुम की ऐसी-तैसी ! मैं कहता हूँ कि खोल दो, वरना तोड़कर भीतर जाऊँगा ।

अविनाश : अरे, रमेशभाई ! आप इस पर क्यों बिगड़ते हैं ? ऐसा कीजिए-पत्र इसे दीजिए । भीतर जाकर दे आएगा ।

रमेश : ठीक है, लो, जाओ दे आओ ।
(चौकीदार पत्र लेकर भीतर जाता है । अंदर से दरवाजा बंद कर देता है । रमेश कुछ देर वहाँ खड़ा रहकर लौट आता है ।) बड़ी प्यास लगी है ।

नरेश : मुझे तो भूख भी ऐसी लगी है कि....।

निमेष : मैं तो जीवन में पहली बार उपवास कर रहा हूँ ।

अविनाश : किसने कहा था कि....।

रमेश : मैंने । उपवास का कुछ अच्छा असर पड़ता है । पुलिस पकड़कर ले नहीं जाती ।

निमेष : पुलिस तो यहाँ है ही कहाँ ?

रमेश : यहाँ न हो, पड़ोस के गाँव में तो है ।

नरेश : तो क्या ?

अविनाश : कुछ नहीं । वह आएगी तो हम उसे बता देंगे कि तुम्हें कानून का भंग करनेवालों को पकड़ना है तो पकड़ो (दरवाजे की ओर निर्देश करके) उन लोगों को ।

नरेश : और वे आपकी बात मान लेंगे ?

अविनाश : आज नहीं तो कल ।

रमेश : तुम बड़े आशावादी हो, अविनाश !

अविनाश : हाँ, हूँ तभी तो इस काम में ..... लो चौकीदार आ गया ।
(सभी उत्सुकता से चौकीदार के पास जाते हैं । वह बिना बोले ही ताला लगाने लगता है । नरेश उसे रोककर भीतर झाँक लेता है, रमेश भी । चौकीदार निमेष को रोककर ताला लगाकर शांति से चला जाता है ।)

नरेश : लो, भाग गए सभी, उस दरवाजे से ।

अविनाश : (धैर्य तथा दृढ़ता से) भागकर जाएँगे कहाँ ? उन्हें हमारे प्रश्नों का जवाब देना ही पड़ेगा, आज नहीं तो कल.....।

रमेश : कल की आशा छोड़ो । अब तो हमारा आवेदन पत्र फाइल हो गया ।

निमेष : वे लोग अब खा-पीकर चैन से सोएँगे और हम यहाँ....।

नरेश : हम उन्हें चैन से सोने नहीं देंगे । उनकी नींद हराम कर देंगे ।

अविनाश : (चिंता से) क्या करोगे ?

रमेश : दरवाजा तोड़कर अपना वह पत्र खोज निकालेंगे । फिर जाएँगे उनके घर ।

नरेश : वहाँ तो उनके पालतू कुत्ते हमें रोकेंगे । मेरा ख्याल है कि (हाथ में पत्थर लेने का अभिनय करता है ।)

रमेश : ठीक है । पथराव की बात सुनकर सभी दौड़े आएँगे....(पत्थर उठाता है ।)

निमेष : चलिए, अविनाश भाई ! उठाइए पत्थर ।

अविनाश : मजाक छोड़ो ।

रमेश : इसे तुम अभी मजाक समझ रहे हो ? वाह रे पंडित ! चलो, उठाओ पत्थर, एक साथ वार करें ।

अविनाश : नहीं । यह असंभव है । हम इस मकान को तनिक भी नुकसान नहीं पहुँचा सकते । जो हमारा ही है उसे....

रमेश : अब भी इसी भ्रम में हो कि यह हमारा है ? चलो नरेश, निमेष, देर क्यों कर रहे हो ?
(तीनों कुछ कदम आगे बढ़कर पथराव करते हैं ।)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अविनाश : रुक जाओ, मैं कहता हूँ रुक जाओ । तुम नहीं जानते हो कि तुम क्या कर रहे हो । रुक जाओ वरना....

नरेश : वरना क्या ? तुम्हीं ने तो हमें इसके लिए भड़काया था ।

अविनाश : भड़काया नहीं था, जगाना चाहा था । शायद वह मेरी गलती थी। मुझे आपसे ऐसी उम्मीद नहीं थी । रमेशभाई, कम से कम आपसे तो....

रमेश : (रुककर) तुम यहाँ से जाओ, मैं जानता हूँ यह तोड़फोड़ देखकर तुम्हें दु:ख होगा । जाओ....

अविनाश : मैं इस प्रकार पलायन नहीं कर सकता ।

निमेष : तो हमें साथ दो ।

नरेश : हाँ, हमसे तो ज्यादा ताकतवर हो, आओ हाथ बँटाओ ।
(तीनों जोरों से पथराव शुरू कर देते हैं । टूटने-फूटने की आवाजें आने लगती हैं ।)

अविनाश : आप लोग मेरी बात सुनना नहीं चाहते ? जैसी आपकी मर्जी ।
(कार्यालय के दरवाजे के पास जाकर खड़ा रहता है ।) भले ही मुझको चोट लगे ।

रमेश : हम तुम्हें चोट नहीं पहुँचाएँगे । हम निशाना लगाना जानते हैं ।
(निमेष, नरेश, अविनाश को बचाकर पत्थर फेंकते हैं ।)

नरेश : हाँ, हाँ, वे थोड़े ही हमारे दुश्मन हैं ?
(पथराव चल रहा है, वहीं गोपी दौड़ती हुई आती है । अविनाश को सामने खड़ा देखकर चीख पड़ती है ।)

गोपी : ओह, यह क्या ? आप लोग अविनाश जी पर वार कर रहे हैं ?

रमेश : नहीं, मकान पर ।

नरेश : इन्हें समझाओ कि बीच से हट जाएँ ।

गोपी : वे नहीं हटेंगे ।

निमेष : तो हमारे पत्थर भी....

गोपी : इन्हें चोट पहुँची तो ?

रमेश : हम कब कहते हैं कि ये चोट खाएँ ? हम तो इन्हें बचाते रहेंगे पर हो सकता हैं कोई पत्थर छिटककर....

गोपी : हाँ, हो सकता है । अच्छा हो कि इसका लाभ मुझे भी मिले । आप तो सुशिक्षित हैं, बुद्धिमान हैं, रुक जाइए ।
(गोपी इन लोगों के आगे इधर-उधर चलती रहती है ताकि वे पत्थर फेंक न सकें । परंतु वे गोपी को बचाकर वार करने का मौका नहीं छोड़ते ।)

अविनाश : (ऊँची आवाज से) इन्हें रोको मत गोपी ! ये सुशिक्षित हैं, समझदार भी हैं परंतु अभी इन्होंने अपने हाथ से कुछ रचा नहीं है । मुझे इस मकान से लगाव है, क्योंकि जब इसकी नींव तैयार हो रही थी तब मैंने स्वेच्छा से हाथ बढ़ाया था ।

रमेश : (जैसे अविनाश की बात छू गई हो) रुक जाओ निमेष, नरेश ! (नरेश नहीं रुकता । रमेश इसका हाथ पकड़कर रोकना चाहता है, नरेश पत्थर फेंकते वक्त संतुलन गँवा देता है, अविनाश को चोट लगती है ।)

गोपी : ओह, आपने यह क्या किया ? (दौड़कर अविनाश के पास पहुँचती है । नरेश लज्जित होकर रुक जाता है ।)

अविनाश : यह तो कुछ भी नहीं है गोपी ! (दो कदम आगे आकर) सामने से आग के गोले आते तो भी मैं नहीं हटता । यदि निमेष का नरेश ने भी मेरी तरह इस मकान की रचना में हाथ बँटाया होता तो वे भी मेरे स्थान पर खड़े होते और अंत तक अडिग रहते । पर ये लोग तोड़ते है, क्योंकि इन्होंने रचा नहीं ।

रमेश : हमें माफ करो अविनाश ! तुमने आज हमें सही अर्थ में जगाया है, अपने प्राणों की बाजी लगाकर । हम संकल्प करते है कि तुम्हारी या किसी की रचना को तोड़ेंगे नहीं, प्रतीक्षा करेंगे, सहेंगे.... ।

गोपी : इसमें तो मैं भी आपका साथ दूँगी ।

निमेष : फिर प्रसादजी की कविता का क्या होगा ?

गोपी : हो सकता है किसी नए प्रसाद की रचना इस विद्रोह और प्रतीक्षा के बीच जन्म ले । (आगे आकर बैठती है, सभी उसका अनुसरण करते हैं ।)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

ग्राम-पंचायत गाँव की अगुआई (प्रशासन) करने वाली संस्था **जम्हाई** उवासी - ऊब जाने के बाद की शारीरिक प्रक्रिया **शिष्ट भाषा** मान्य भाषा **पलायन** गायब

मुहावरा

नींद हराम कर देना चैन से सोने नहीं देना ।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) गोपी को प्रसादजी की कविता कौन समझाने वाला था ?

(अ) निमेष (ब) नरेश (क) अविनाश (ड) रमेश

(2) 'तुम चाहो तो शिष्ट भाषा में आवेदन पत्र दे सकते हो ।' यह वाक्य कौन कहता है ?

(अ) रमेश (ब) निमेष (क) नरेश (ड) गोपी

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) 'कविता क्या है ?' इस प्रश्न का गोपी क्या उत्तर देती है ?

(2) रमेश और नरेश ग्राम-पंचायत के सदस्यों का विरोध क्यों करते थे ?

(3) अविनाश नरेश को किसी का तिरस्कार न करने के लिए क्यों कहता है ?

(4) रमेश ने अविनाश को आशावादी क्यों कहा ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) गाँव के युवक पंचायत के पदाधिकारियों से किस बात पर नाराज थे ?

(2) अपने असंतोष को व्यक्त करने के लिए उन्होंने किन-किन साधनों का उपयोग किया ?

(3) नरेश और उसके साथी अपने हाथों का कौन-सा कमाल दिखाना चाहते थे ?

(4) रमेश पथराव क्यों करना चाहता है ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) अविनाश पथराव का विरोध क्यों करता है ?

(2) 'रचना' एकांकी से हमें क्या सीख मिलती है ?

5. निम्नलिखित वाक्य किसने कहे हैं, लिखिए :

(1) ये सुशिक्षित हैं, समझदार भी हैं परंतु अभी इन्होंने अपने हाथ से कुछ रचा नहीं है ।

(2) कविता समझने से कोई फायदा नहीं होगा ।

(3) अपशब्दों के उपयोग पर अविनाश का प्रतिबंध है ।

(4) हो सकता है, किसी नए प्रसाद की रचना इस विद्रोह और प्रतीक्षा के बीच जन्म लें ।

6. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) कविता आत्मा की कला है, संवेदना का सौंदर्य है ।

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

फायदा, शिक्षित, कोमल, भ्रष्टाचार, सहयोग

योग्यता-विस्तार

- जयशंकर प्रसाद की कविता 'हिमाद्रि तुंग-शृंग से ढूँढ़कर पढ़िए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- प्रस्तुत एकांकी का कक्षा में अभिनय कीजिए ।
- क्या नवनिर्माण के लिए प्राचीन का विनाश जरूरी है ? इस विषय पर कक्षा में वाद-विवाद का आयोजन कीजिए ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

19 तोता और इन्द्र

नरेन्द्र मालवीय

नरेन्द्र मालवीय हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभाशाली साहित्यकार है । हिन्दी साहित्य में निबंध, कहानी, एकांकी एवं कविता में अपना योगदान दिया है । सरल और सहज भाषा उनके साहित्य की एक विशेषता रही है । मार्मिक भाषा में गहन बात को सरलता से पेश करते हैं ।

यह एक सरल और सुबोध रचना है । इस कविता को एक कहानी के आधार पर लिखा गया है । वह कहानी 'बुक ऑफ नॉलिज' से ली गई है । इसे विश्व का एक श्रेष्ठ संवाद-काव्य माना जाता है ।

सुनो भाइयो, तुम्हें सुनाते, आज एक प्राचीन कहानी ।
जो है अति सुंदर, अति अद्भुत, सचमुच कहानियों की रानी ॥
पुण्यभूमि काशी की महिमा, चारों दिशि में थी अति गुंजित ।
देवों सहित देवपति उसको, लखकर होते थे अति हर्षित ॥
गुजर रहे थे इन्द्र एक दिन, जब कि निकट के निर्जन वन से ।
देखा एक पेड़ अति भारी, सूखा, निर्जीवित-सा तन से ॥
उसके एक खोखले में था तोता एक बहुत ही सुंदर ।
हुआ इन्द्र को बेहद अचरज, उसको सूखे तरु पर लखकर ॥
पूछा तुरंत उन्होंने उससे – 'क्या न मूर्खता है यह भारी ।
इस सूखे तरु पर तू रहता बन करके अनजान, अनारी ॥
हरा-भरा तरु कहाँ नहीं है, क्या इस विस्तृत सुंदर वन में ?
भला यहीं रहने में तूने सोचा है क्या हित निज मन में ?'
तोता बोला – 'महाराज, यह तरु पहले था बेहद सुंदर ।
सारे वन में एकमात्र था सबसे अच्छा, सबसे मनहर ॥
जैसा था यह सबसे सुंदर, वैसा ही था यह बलशाली ।
यह ही था इस वन की शोभा, भाग्यवान, अति गौरवशाली ॥
चिड़िया, तोते, कोयल, मैना, सबको ही यह अति प्यारा था ।
महाराज, यह ही कुरूप तरु, शोभा में सबसे न्यारा था ॥
मैं जन्मा हूँ इस पर, जब इसकी शोभा थी नई-निराली ।
अत: मुझे प्राणों से भी प्यारी है इसकी डाली-डाली ॥
इसकी मोदमयी छाया में मैंने था निज होश सम्हाला ।
यह है मुझको गाना, मुसकाना, उड़ना सिखलानेवाला ॥
बचपन से ले करके अब तक इसने दी है मुझको छाया ।
मैंने हरदम इसको ही सुख-दुख का सच्चा साथी पाया ॥
किंतु आह, कुछ दिन पहले आया वन में एक शिकारी ।
उसके विष से बुझे बाण ने इस पर ढा दी आफत भारी ॥
विष के कारण सूख रहा है तब से यह तरुवर दिन-प्रतिदिन ।
अब तो इसके साथ-साथ ही मेरा भी होगा अंतिम क्षण ॥
बचपन के साथी को तजकर, भला कहीं मैं जा सकता हूँ ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यदि जाऊँ भी, तो क्या सुख, संतोष, शांति मैं पा सकता हूँ ?
इससे अच्छा है, मैं इसके दु:ख में थोड़ा हाथ बटाऊँ ।
और अंत में सुख से इसके संग-संग मैं भी मर जाऊँ ॥'
दंग रह गये इन्द्रदेव तोते की यह सब बातें सुनकर ।
फिर, तोते से बोले वे यों तुरंत अत्यधिक हर्षित होकर-
'मैं प्रसन्न हूँ तुझसे पंछी, सुफल हुआ है तेरा जीवन ।
माँग तुरंत वर कोई मुझसे, पूर्ण करूँगा मैं इस ही क्षण ॥'
तोता बोला-'देव, यही है अभिलाषा मेरे जीवन की ।
हरा-भरा कर दें यह तरुवर, जो है शोभा सारे वन की ॥'
कहा इन्द्र ने – 'एवमस्तु !' और तरु ने फिर नवजीवन पाया ।
शोभा नई, निराली सुंदरता लेकर वह फिर लहराया ॥

शब्दार्थ

प्राचीन पुरानी **पुण्यभूमि** पवित्रभूमि **दिशि** दिशा **निर्जन** विरान **खोखला** पोला, कमजोर **अचरज** आश्चर्य **तरु** वृक्ष **निज** अपना, स्वयं **कुरूप** बदसूरत **तजकर** त्याग करके **अभिलाषा** इच्छा **लखकर** देखकर

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) इन्द्र कहाँ से गुजर रहे थे ?

(2) इन्द्र ने खोखले वृक्ष में क्या देखा ?

(3) पेड़ क्यों सूख गया था ?

(4) पेड़ पर किसने आफ़त ढा दी थी ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) सूखे पेड़ पर तोते को देख इन्द्र को क्यों आश्चर्य हुआ ?

(2) तोते ने उस सूखे वृक्ष पर रहने का कारण क्या बतलाया ? क्या आप उसे ठीक समझते हो ?

(3) तोते के उत्तर का इन्द्रदेव पर क्या प्रभाव पड़ा ? और उसका फल क्या हुआ ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) तोते ने उस पेड़ से अपने अत्याधिक लगाव के क्या-क्या कारण बतलाए हैं ?

(2) तोता और इन्द्र का संवाद अपने शब्दों में लिखिए ।

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

विस्तृत, गौरवशाली, मोदमयी, एवमस्तु

5. शब्दसमूह के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

(1) जहाँ मनुष्य न हो

(2) जिसमें बल न हो

(3) देवों के अधिपति

(4) भू के पति

योग्यता-विस्तार

- इस कथा-काव्य का कहानी में रूपांतर कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- अन्य कथाकाव्य ढूँढ़कर छात्रों को सुनाइए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

20 अलबम

सुदर्शन
(जन्म : सन् 1896 ई., निधन : सन् 1976 ई.)

सुदर्शनजी का जन्म पश्चिमी पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) में सियालकोट नगर में हुआ था । इन्हें बचपन से ही कहानी लिखने का शौक था । इन्होंने प्रारंभ में उर्दू में लिखना शुरू किया था, बाद में हिन्दी में लिखने लगे । इनकी पहली कहानी 'सरस्वती' नामक पत्रिका में 1920 में छपी थी। हिन्दी कहानी क्षेत्र में प्रेमचंद के बाद सुदर्शनजी का नाम लिया जाता है । इन्होंने फिल्मों के लिए भी कहानियाँ लिखीं जिन पर सफल फिल्मों का निर्माण हुआ । सुदर्शन सुमन, पारस, पनघट इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं ।

प्रस्तुत कहानी में पंडित शादीराम और लाला सदानंद के बीच जो आर्थिक व्यवहार हुआ उसमें संबंधों को किस तरह बचाया गया, उसका मार्मिक वर्णन है । आजकल पैसों के कारण संबंधों में दरार पड़ जाती है । ऐसे समय में मानव मूल्यों का जतन करने की प्रेरणा इस कहानी से मिलती है ।

पंडित शादीराम ने ठंडी आह भरी और सोचने लगे – क्या यह ऋण कभी सिर से न उतरेगा ?

वे गरीब थे परंतु दिल के बुरे न थे । वे चाहते थे कि जिस तरह भी हो, अपने यजमान लाला सदानंद का रुपया अदा कर दें । उनके लिए एक-एक पैसा मोहर के बराबर था । अपना पेट काटकर बचाते मगर जब चार पैसे जमा हो जाते तो कोई न कोई ऐसा खर्च निकल आता था जिससे सारा रुपया उड़ जाता । शादीराम के हृदय पर बरछियाँ चल जाती थीं और वे कुछ कर न पाते थे ।

इसी तरह कई साल बीत गए । शादीराम ने पैसा-पैसा बचाकर अस्सी रुपए जोड़ लिए । उन्हें लाला सदानंद के पाँच सौ रुपये देने थे । इस अस्सी रूपए की रकम से ऋण उतारने का दिन आता प्रतीत हुआ । परंतु उनका लड़का लगातार चार महीने बीमार रहा । पैसा-पैसा करके बचाए हुए रुपए दवा-दारू में उड़ गए । पंडित शादीराम ने सिर पीट लिया । अब चारों ओर फिर अंधकार था उसमें प्रकाश की हलकी-सी किरण भी दिखाई न देती थी । उन्होंने ठंडी साँस भरी और सोचने लगे – क्या यह ऋण कभी सिर से न उतरेगा ?

लाला सदानंद अपने पुरोहित की विवशता को जानते थे । वे चाहते थे कि पंडितजी रुपये देने का प्रयत्न न करें । उन्हें इस रकम की जरा भी परवान न थी । उन्होंने इसके लिए कभी तगादा तक नहीं किया । इस बात से वे इतना डरते थे, मानो रुपए उन्हीं को देने हों ।

शादीराम के दिल में भी शांति न थी । वे सोचा करते कि ये कैसे भलेमानस हैं जो अपनी रकम के बारे में मुझसे बात तक नहीं करते ? खैर, ये कुछ नहीं कहते, सो तो ठीक है परंतु इसका तात्पर्य यह थोड़े ही है कि मैं भी निश्चित हो जाऊँ ? मेरी तरफ इनका रुपया निकलता है, मुझे देना ही चाहिए ।

उनमें लाला सदानंद के सामने सिर उठाने का साहस न था । यदि लाला सदानंद ऐसी सज्जनता न दिखलाते और शादीराम से बार-बार अपने पैसे माँगते तब शायद उनके दिल को ऐसा कष्ट न होता । हम अत्याचार का सामना सिर उठाकर कर सकते हैं परंतु भलमनसी के सामने आँखें नहीं उठतीं ।

एक दिन लाला सदानंद किसी काम से पंडित शादीराम के घर गए । वहाँ उनकी अलमारी में कई सौ बंगला, हिन्दी और अंग्रेजी की मासिक पत्रिकाएँ देखकर बोले, 'ये क्या हैं पंडितजी ?'

पंडित शादीराम ने उत्तर दिया, 'पुरानी पत्रिकाएँ हैं । बड़े भाई को पढ़ने का शौक था । वही ये पत्रिकाएँ मँगवाते थे । वे जब जीवित थे तो किसी को हाथ न लगाने देते थे । अब इन्हें कीड़े खा रहे हैं । कोई पूछता भी नहीं ।'

'रद्दी में क्यों नहीं बेच देते ?'

'इनमें चित्र हैं । जब कभी बच्चे रोने लगते हैं तो एक-आध निकालकर दे देता हूँ । इससे उनके आँसू थम जाते हैं इसलिए रद्दी में नहीं बेचता ।'

लाला सदानंद ने आगे बढ़कर कहा, 'दो-चार पत्रिकाएँ दिखाइए तो । जरा देखें, इनमें कैसे चित्र हैं ?'

पंडित शादीराम ने कुछ पत्रिकाएँ दिखाई । हर एक पत्रिका में कई सुंदर और रंगीन चित्र थे । लाला सदानंद

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कुछ देर तक उलट-पलटकर देखते रहे । सहसा उनके मन में एक विचार उठा । वे बोले, 'ये चित्रकला के बढ़िया नमूने हैं । अगर किसी शौकीन को पसंद आ जाएँ तो आप हजार-दो हजार रुपए बड़ी आसानी से कमा सकते हैं ।'

पंडित शादीराम ने एक ठंडी साँस भरकर कहा, 'ऐसे भाग्य होते तो यों धक्के न खाता फिरता !'

लाला सदानंद बोले, 'एक काम करें !'

'क्या ?'

'आज बैठकर जितनी अच्छी-अच्छी तसवीरें हैं, सबको अलग छाँट लें ।'

'बहुत अच्छा ।'

'जब यह कर चुकें तो मुझे कहलवा दें ।'

'आप क्या करेंगे ?'

'मैं एक अलबम बनाऊँगा और आपकी तरफ से विज्ञापन दे दूँगा । हो सकता है, यह विज्ञापन किसी शौकीन के हाथ पड़ जाए और आप दो-चार पैसे कमा लें । तसवीरें बहुत बढ़िया हैं ।'

पंडित शादीराम को यह आशा न थी कि कोयले की खान में हीरा मिल जाएगा । घोर निराशा ने आशा के सभी द्वार बंद कर दिए थे । वे उन हतभागे लोगों में से थे जो संसार में असफल और केवल असफल रहने के लिए पैदा होते हैं । वे सोने को हाथ लगाते थे तो वह भी मिट्टी हो जाता था । वे सीधी बात भी करते थे तो उलटी पड़ती थी । उनको पक्का विश्वास था कि यह प्रयत्न भी सफल न होगा परंतु लाला सदानंद के कहने से दिनभर बैठकर तसवीरें छाँटते रहे । न उनके मन लगन थी, न उनके हृदय में चाव था, न उनके सीने में उमंग था किंतु लाला सदानंद की बात को टाल न सके । शाम को देखा, दो सौ बढ़िया चित्र जमा हो गए हैं । उस समय वे उन्हें देखकर स्वयं उछल पड़े । उनके मुख पर आनंद की आभा नाचने लगी । वे उन चित्रों की ओर इस तरह देखते मानो उनमें से हर एक दस-दस के नोट हों । बच्चों को उधर देखने तक न देते थे । वे सफलता के विचार से ही प्रसन्न हो रहे थे । यद्यपि आशा कोसों दूर थी । लाला सदानंद की दी हुई आशा उनके मस्तिष्क में निश्चय का रूप धारण कर चुकी थी । वे खुशी से झूमने लगे ।

लाला सदानंद ने चित्रों को अलबम में लगवाया और समाचार पत्रों में विज्ञापन दे दिया । अब पंडित शादीराम हर समय डाकिये की प्रतीक्षा करते रहते थे । वे रोज सोचते थे कि आज कोई चिट्ठी आएगी । दिन बीत जाता, कोई चिट्ठी न आती थी । रात को आशा, सड़क की धूल की तरह बैठ जाती थी । मगर दूसरे दिन लाला सदानंद की बातों से टूटी हुई आशा फिर जुड़ जाती थी। आशा फिर अपना चमकता हुआ मुँह दिखाकर उन्हें दरवाजे पर ला खड़ा कर देती थी । डाक का समय होता, तो वे बाजार चल पड़ते और वहाँ से डाकखाने पहुँच जाते । इसी तरह एक महीना बीत गया, कोई पत्र न आया । पंडित शादीराम बिलकुल निराश हो गए । मगर फिर भी कभी-कभी सफलता का विचार आ जाता था, जैसे अँधेरे में जुगनू चमक जाता है । जुगनू की यह चमक निराश हृदयों के लिए कैसी जीवनदायिनी, कैसी हृदयहारिणी होती है । इसके सहारे भूले हुए मुसाफ़िर मंजिल पर पहुँचने का प्रयत्न करते हैं और कुछ देर के लिए अपना दु:ख भूल जाते हैं । इस झूठी आशा के अंदर सच्चा प्रकाश नहीं होता, यह दूर के संगीत के समान मनोहर जरूर होती है । इस वर्षा की कमी दूर हो न हो परंतु इससे काली घटा का जादू कौन छीन सकता है ? पंडित शादीराम ने आशा न छोड़ी । या यों कहिए, आशा ने पंडित शादीराम को न छोड़ा । दिन गुजरते गए ।

आखिर एक दिन शादीराम के भाग्य जागे । कलकत्ते के एक मारवाड़ी सेठ ने पत्र लिखा कि अलबम भेज दो । अगर पसंद आ गया तो खरीद लिया जाएगा । मूल्य की चिंता नहीं, चीज अच्छी होनी चाहिए । यह पत्र उस करवट के समान था जो सोया हुआ आदमी जागने से पहले बदलता है और उसके बाद उठ बैठता है । यह किसी आदमी की करवट न थी, यह भाग्य की करवट थी । पंडित शादीराम दौड़े हुए सदानंद के पास पहुँचे और उन्हें पत्र दिखाकर बोले, 'आखिर आज एक पत्र आ गया है । भेज दूँ अलबम ?'

छ: महीने बीत गए ।

लाला सदानंद बीमार थे । पंडित शादीराम उनके लिए दिन-रात माला फेरा करते थे । वे न वैद्य थे, न डॉक्टर और न ही हकीम । उनकी औषधि माला फेरना ही थी और वह काम वे अपनी आत्मा की पूरी शक्ति, अपने पूरे मन से कर रहे थे । उन्हें औषधि की अपेक्षा आशीर्वाद और प्रार्थना पर अधिक भरोसा था । सोचते थे, दवा से दुआ अच्छी है ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एक दिन लाला सदानंद चारपाई पर लेटे थे । उनके पास उनकी बूढ़ी माँ उनके दुर्बल और पीले मुँह को देख-देखकर अपनी आँखों के आँसू अंदर ही अंदर पी रही थी । थोड़ी दूरी पर एक कोने में, उनकी नवोढ़ा स्त्री घूँघट निकाले खड़ी थी और देख रही थी कि कोई काम ऐसा तो नहीं, जो रह गया हो । पास पड़ी चौकी पर पंडित शादीराम बैठे, रोगी को भगवद्‌गीता सुना रहे थे ।

एकाएक लाला सदानंद बेसुध हो गए । पंडितजी ने गीता छोड़ दी और उनके सिरहाने बैठ गए । स्त्री गरम दूध लाने के लिए अंदर दौड़ी और माँ घबराकर बेटे को आवाजें देने लगी । इस समय पंडितजी को लगा कि रोगी के सिरहाने के नीचे कोई चुभती हुई चीज रखी है । उन्होंने नीचे हाथ डालकर देखा तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही । वह सख्त चीज वही अलबम था, जिसे किसी सेठ ने नहीं बल्कि स्वयं लाला सदानंद ने खरीदा था ।

पंडित शादीराम इस विचार से बहुत प्रसन्न थे कि उन्होंने सदानंद का ऋण उतार दिया मगर यह जानकर उनके हृदय को चोट-सी लगी कि ऋण उतरा नहीं अपितु पहले से दुगुना हो गया है ।

उन्होंने बेसुध यजमान के पास बैठे-बैठे एक ठंडी साँस भरी और सोचने लगे - यह ऋण मेरे सिर से क्या कभी न उतरेगा !

कुछ देर बाद लाला सदानंद को होश आया । उन्होंने पंडितजी से अलबम छीन लिया और धीरे से कहा, 'यह अलबम अब मैंने सेठ साहब से मँगवा लिया है ।'

पंडित जी जानते थे कि यजमान झूठ बोल रहे हैं परंतु वे उन्हें पहले से भी अधिक सज्जन, अधिक उपकारी और ऊँचा समझने लगे थे । वे यह न कह सके कि आप झूठ बोल रहे हैं । उनमें यह हिम्मत न थी । वे चुपचाप माला फेरने लगे ।

शब्दार्थ

ऋण कर्ज, उधार **अदा करना** चुकाना **विवशता** मजबूरी **परवाह** चिंता **हतभागे** अभागे, भाग्यहीन **आभा** चमक, जीवनदायिनी, जीवन देनेवाली **हृदयहारिणी** मन को लुभानेवाली **चिरंजीवी** बहुत समय तक जीवित रहनेवाला, पुत्र **वैद्य** आयुर्वेदिक चिकित्सक **दुआ** प्रार्थना, विनती, आशिष **बेसुध** बेहोश

मुहावरे

ठंडी आह भरना दु:खी होना **पेट काटकर बचाना** थोड़े खर्च में काम चलाना **हृदय पर बर्छियाँ चलाना** अत्याधिक चुभनेवाली बात कहना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) पंडित शादीराम अपना ऋण क्यों नहीं उतार पाते थे ?
- (अ) वे अत्यंत गरीब थे ।
- (ब) बचे हुए पैसे किसी न किसी तरह खर्च हो जाते थे ।
- (क) रुपये देने की उनकी दानत ही नहीं थी ।
- (ड) पैसे देने जितनी रकम इकट्ठी ही नहीं होती थी ।

(2) शादीराम पुरानी पत्रिकाएँ बेचते नहीं थे क्योंकि .....
- (अ) उनकी कोई ज्यादा रकम नहीं मिल सकती थी ।
- (ब) उनके भाई की अमानत थी ।
- (क) उनके रोते हुए बच्चे उनमें के चित्रों को देखकर चुप हो जाते थे ।
- (ड) पत्रिकाएँ उन्हें बहुत प्रिय थीं ।

(3) सदानंद के कहने पर शादीराम ने पत्रिकाओं के चित्रों का क्या किया ?

(अ) बेच दिए (ब) अलबम बनाया (क) बच्चों को बाँट दिये (ड) दीवारों पर सजा दिये

(4) पंडित शादीराम को अलबम के कितने रुपये मिले ?

(अ) एक हजार (ब) दो सौ (क) दो हजार (ड) एक सौ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(5) सदानंद का मन प्रसन्नता से नाच उठा क्योंकि .....
(अ) उन्हें अपने पैसे वापस मिल गए ।
(ब) पंडित शादीराम की उदारता और सज्जनता के कारण ।
(क) परमात्मा ने उनकी बात स्वीकार कर ली । (ड) मारवाड़ी सेठ ने अलबम खरीद लिया था ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :
(1) पंडित शादीराम के बचाए हुए अस्सी रुपये किसमें खर्च हो गये ?
(2) पंडित शादीराम पुरानी पत्रिकाएँ क्यों नहीं बेच देते थे ?
(3) सदानंद ने शादीराम को पुरानी पत्रिकाओं से क्या करने की सलाह दी ?
(4) लाला सदानंद की बीमारी के समय पंडित शादीराम किस तरह सेवा करते थे ?
(5) 'अलबम सेठ से मैंने मँगवा लिया है ।' - ऐसा सदानंद ने शादीराम से क्यों कहा ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :
(1) पंडित शादीराम कर्ज अदा करने के लिए क्यों बेचैन थे ?
(2) लाला सदानंद ने शादीराम की समस्या का क्या हल निकाला ?
(3) शादीराम ने अपना कर्ज कैसे चुकाया ?
(4) पंडित शादीराम लाला सदानंद से यह क्यों न कह सके कि वे झूठ बोल रहे हैं ?
(5) शादीराम का ऋण उतरने की बजाय दुगुना क्यों हो गया ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :
(1) पंडित शादीराम के दिल में क्यों शांति नहीं थी ?
(2) पंडित शादीराम खुशी से क्यों झूमने लगा ?
(3) लाला सदानंद ने शादीराम से रुपये लेने से मना क्यों दिया ?
(4) लाला सदानंद के चरित्र पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

5. सूचनानुसार लिखिए :
(1) **पर्यायवाची शब्द दीजिए :** हाथ, आँख, ऋण, अंधकार, परमात्मा
(2) **विलोम (विरोधी) शब्द दीजिए :** ठंडी, परवाह, सज्जन, जीवित, निराशा, सफल, दया
(3) **निम्नलिखित वाक्यों में से भाववाचक संज्ञा खोजकर बताइए :**
(1) लाला सदानंद पंडितजी की विवशता को जानते थे, परंतु भलमनसी के सामने आँखें नहीं उठती थीं ।
(2) पंडित शादीराम को अब कोई आशा नहीं थी ।
(3) आपने जो दया और सज्जनता दिखाई है, उसमें मरते दम तक न भूलूँगा ।
(4) आप झूठ बोल रहे हैं ।
(4) **मुहावरों के अर्थ देकर वाक्य-प्रयोग कीजिए :**
(1) ठंडी आह भरना
(2) पेट काट कर बचाना
(3) भार उतारना

योग्यता-विस्तार

- अपने मित्र को उधार पैसे दिए और अब मित्रता ही नहीं रही - दो मित्रों के बीच उसकी संवाद में प्रस्तुति करवाइए ।
- 'हम अत्याचार का सामना सिर उठाकर कर सकते हैं, परन्तु भलमनसी के सामने आँख नहीं उठती ।' का आशय स्पष्ट कीजिए ।

शिक्षण-प्रवृत्ति

- मानव मूल्यों के जतन करने के प्रति छात्रों को जागरुक कीजिए ।
- स्वातंत्र्य सेनानियों का तथा प्रसिद्ध खिलाड़ियों के अलबम तैयार करवाइए ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

21 पहेलियाँ-मुकरियाँ

अमीर खुसरो

(जन्म : सन् 1253 ई., निधन : सन् 1325 ई.)

आदिकाल की राज्याश्रय परंपरा से सर्वथा मुक्त अमीर खुसरो की कविता लोकजीवन का रंगों में रंगी हुई है । उनकी हलकी-फुलकी रचनाओं में ज्ञान के साथ-साथ मनोविनोद की सुंदर सामग्री प्रस्तुत की गई है । संकलित पहेलियाँ और मुकरियों में मानव-मन की जिज्ञासा, कुतूहल और रहस्यों का विनोदपूर्ण शैली में उद्घाटन किया गया है । छोटी-छोटी रचनाओं में गहरे अर्थ अभिव्यंजित कर कवि ने अपने कला-कौशल का अच्छा परिचय दिया है ।

उनकी पहेलियों में किसी वस्तु का टेढ़ा-मेढ़ा लक्षण देकर अभिप्रेत वस्तु का नाम पूछा जाता है । मुकरियों में आरंभ में कही गई बात का खंडन करते हुए सही बात की ओर संकेत किया जाता है । इन पहेलियाँ मुकरियों में विनोद के साथ ज्ञान परोसा गया है । इनके द्वारा विद्यार्थियों के ज्ञान की कसौटी भी हो जाती है, साथ-साथ चिंतन और जिज्ञासा भी जाग्रत होते हैं ।

पहेलियाँ

- जूता पहना नहीं ?
समोसा खाया नहीं ? (क्यों ?)
उत्तर : तला नहीं था ।
- अनार क्यों न चखा ?
वजीर क्यों न रखा ?
उत्तर : दाना न था ।
- रोटी जली क्यों ?
घोड़ा अड़ा क्यों ?
पान सड़ा क्यों ?
उत्तर : फेरा न था ।
- एक नारि के हैं दो बालक, दोनों एक ही रंग ।
एक फिरे एक ठाढ़ा रहै, फिर भी दोनों संग ॥
उत्तर : चक्की के पाट

मुकरियाँ

- जब माँगू तब जल भरि लावे
मेरे मन की तपन बुझावे
मन का भारी तन का छोटा
ए सखि साजन ? ना सखि लोटा । **उत्तर :** लोटा
- वो आवे तो शादी होय
उस बिना दूजा और न कोय
मीठे लागे वा के बोल
ए सखि साजन ? ना सखि ढोल । **उत्तर :** ढोल
- अति सुरंग है रंग-रंगीले
है गुणवंत बहुत चटकीला
राम-भजन बिन कभी न सोता
ए सखि साजन ? ना सखि तोता । **उत्तर :** तोता

शब्दार्थ

अनार एक दानेदार फल, दाडम (गुज.) **वजीर** मंत्री **अड़ना** रुक जाना **ठाढ़ा** खड़ा **तपन** आग **साजन** पति **दूजा** दूसरा **गुणवंत** गुणवान

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) 'तला' शब्द के दो अर्थ बताइए ।
(2) 'वजीर में दाने नहीं थे' क्या अर्थ है ?
(3) ढोल और साजन में क्या समानता है ?
(4) राम भजन बिना कौन नहीं सोता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) न फेरने पर रोटी, घोड़े और पान की क्या हालत होती है ?
(2) चक्की दो पाटों की क्या विशेषता बताई हैं ?
(3) लोटा क्या-क्या करता है ?

योग्यता-विस्तार

- किसी भी वस्तु को लेकर पहेलियाँ बनाने की, बुझाने की और सुलझाने की प्रवृत्ति कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- अपनी भाषा में पहेलियाँ बनाइए ।
- अमीर खुसरो की कुछ अन्य पहेलियाँ ढूँढ़िए ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

22 भीतरी समृद्धि

डॉ. चन्द्रकान्त मेहता
(जन्म : सन् 1939 ई.)

गुजरात विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति डॉ. चन्द्रकान्त मेहता बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं । डॉ. मेहता की मातृभाषा गुजराती है किन्तु संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी पर भी उनका समान अधिकार है । लगभग 50 वर्षों से हिन्दी एवं गुजराती लेखन के प्रति समर्पित डॉ. मेहता की गुजराती एवं हिन्दी में कई रचनाएँ प्रकाशित हैं ।

'साथ-साथ चल रही किरन' निबंध संग्रह पर भारत सरकार ने उन्हें नेशनल अवोर्ड से सम्मानित किया है एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ ने गुजराती हिन्दी की सेतु रूप सेवाओं के लिए 'सौहार्द-सम्मान' दिया है । अन्य कृतियों में 'दिया जलाना कब मना है', 'दिशान्तर जरा ठहर जाओ', 'अन्वेषक और अन्य' आदि प्रमुख हैं ।

प्रस्तुत निबंध में चाहे जितना धन कमाओ, चाहे ऊँचे महल बनाओ, ऐशो-आराम की जिंदगी में भौतिक सुख तो अवश्य मिलता है, सोने-चाँदी के गहनों-आभूषणों से लद जाओ पर जब तक भीतरी शांति नहीं मिलती तब तक जीवन व्यर्थ है । सुख पैसे रुपयों से नहीं मिलता । जीवन का सुख उदारता और त्याग में समाया है ।

जब 'द्रव्य-भक्ति' बढ़ जाती है तब जीवन-भक्ति कम हो जाती है । जब लोग अमीर बनने के कृत्रिम चाव में फँस जाते हैं तब अंत:करण की अमीरी की सुगंध खो देते हैं । तृष्णा तो परंपरागत डाकूरानी होती है । जब तृष्णाएँ बढ़ती हैं तो मनुष्य की नेकी के समाप्त होने में देरी नहीं लगती ।

मनुष्य के लिए जीना कोई मुश्किल काम नहीं है, हाँ, पर पवित्रतापूर्वक जीना अवश्य ही मुश्किल है । धन सुख का जादूगर भी है और शांति का डकैत भी । अभी तक किसी कोई भी दरजी ऐसा अँगरखा नहीं सिल पाया है जिसे पहनकर तृष्णातुर मनुष्य चैन की साँस ले सके ।

कहा जाता है कि पोम्पीनगर के खंडहरों में खुदाई करते हुए एक नर-कंकाल प्राप्त हुआ था । उसकी मुट्ठी खोलने में काफी परेशानी हुयी थी । मुट्ठी खुलने के बाद पता चला कि मृत व्यक्ति ने अपने हाथ में सोना पकड़ रखा था । इसी प्रकार इसी शहर के एक व्यापारी ने अपनी अंतिम साँस लेते समये तकिये के नीचे से पैसों से भरी हुई एक थैली बाहर निकाली थी तथा अपने प्राण त्यागने के समय तक उसे खूब मजबूती से अपने हाथ में पकड़ रखी थी ।

हमारे यहाँ पहले डाल-डाल पर सोने की चिड़ियाँ रहती थीं । आज अमीरों की पारिवारिक समस्याओं को दर्शाते हुए धारावाहिकों की 'मानव-चिड़ियाँ' गहनों से लदीफदी रहती हैं । घर के भीतर गहनों से सजी-सँवरी और खूब महँगी-महँगी साड़ियों में रौब से घूमती अभिमानी स्त्रियाँ संस्कारिता की धज्जियाँ उड़ाती हुई बेहूदे षड्यंत्रों में संलग्न रहती हैं । इनमें भारतीयता का तिलमात्र भी दर्शन होता है क्या ? पहले त्याग द्वारा आनंद की प्राप्ति होती थी पर अब 'भोगने के बाद फेंक देना' मूलमंत्र हो गया है ।

आज के जीवन में धन ही जीवन का नियंत्रक परिबल बन गया है अत: आज के मनुष्य की वृत्ति व प्रवृत्ति दोनों ही भ्रष्ट हो गयी हैं । अमीर को और अधिक अमीर बनने के लिए धन की प्यास है जबकि गरीब को अपना तन ढकने के लिए रुपयों की जरूरत है । गरीब स्वयं खून-पसीना एक करके धन कमाता है जबकि अमीर दूसरों को उल्लू बनाकर धन कमाता है । यदि गरीब अपने 'गहने' को संभाल सके तो, उसका गहना तो केवल स्वाभिमान ही है ।

जब तक पैसे की खोज नहीं हुयी थी तब तक मनुष्य अंदर से अमीर था । एक लेखक के शब्द ध्यान देने योग्य हैं । वह कहता है - 'सहृदयता, आत्मीयता, आशा, उल्लास तथा प्रेम ही वास्तविक धन हैं । इस पृथ्वी के एक छोटे से अंश को पाने के लिए मुझे इतना सख्त परिश्रम करने की आखिर क्या आवश्यकता है ? समग्र पृथ्वी ही तो मेरी है । अगर कायदे-कानून की भाषा में यह पृथ्वी किसी और की कहलाती है तो इसमें इतनी ईर्ष्या क्यों करनी चाहिए ? यह उसी की संपत्ति है जो इसका उपयोग कर पाता है । अत: संपत्ति के मालिकों से मुझे क्यों ईर्ष्या करनी चाहिए ? मैं रेल का किराया देकर देशभर की सैर कर सकता हूँ । मेरा मन हो तो ताजगीभरी सुंदर हरी घास, छोटे-बड़े पौधे, मैदानों में लगे कीर्ति-स्तंभ तथा सुंदर बारीक कारीगरी वाले शिल्प व सुंदर चित्रों का आनंद ले सकता

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हूँ । उन सब को अपने साथ घर ले जाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि जहाँ पर ये सब हैं, वहाँ उनकी देखभाल व उनकी व्यवस्था जितनी अच्छी तरह से की गयी है, उससे आधी देखभाल भी मैं नहीं कर पाऊँगा । इस सृष्टि ने मुझे इस प्रकार की अनेक चीजें प्रदान की हैं । वन में घूमते हुए प्राणी हमारे हैं, नक्षत्र तथा महकते हुए फूल हमारे हैं । समुद्र, हवा, पक्षी तथा वृक्ष भी हमारे हैं । अब हमें दूसरी किसी चीज की आवश्यकता नहीं है । इस युग से पहले के सभी युग हमारे लिए काम करके गये हैं । हमें तो केवल अन्न व वस्त्र प्राप्त करने की आवश्यकता है और ये प्राप्त करना इस धरती पर बहुत आसान है ।'

वाल्मिकी, स्वामी रामतीर्थ, विवेकानंद, दयानंद, अरविंद के पास आखिर कौन-सा जमा किया हुआ धन था ? फिर भी क्या हम उन्हें गरीब कहने की हिम्मत कर सकते हैं ?

'भाग्य के स्रष्टाओं' में जॉन डंकन नामक एक स्कॉटलैंड के निवासी बुनकर के गरीब पुत्र की अमीरी का एक प्रेरणादायक उदाहरण है । जॉन बिलकुल अनपढ़, संकुचित दृष्टि का अशक्त, कुबड़ा तथा आर्थिक दृष्टि से कंगाल परिवार का पुत्र था । जब वह अपने मुहल्ले में से गुजरता था तब बच्चे उसे चिढ़ाते थे । बहुत बार तो पत्थर भी मार दिया करते थे । उसने ढोर चराने का काम शुरू किया तो उसके मालिक ने भी उसके साथ अत्याचार किया । कभी-कभी जॉन कपड़ों को निचोड़ते-निचोड़ते ठंड में काँपते-काँपते पूरी रात गुजार देता । एक दिन जॉन की इच्छा हुई कि वह पढ़ाई करना सीखे । कुछ समय के पश्चात् जब वह बुनाई के काम पर गया, तब उसने स्कूल में पढ़नेवाली एक बारह वर्ष की लड़की से उसे पढ़ाने की विनती की । सोलह वर्ष की उम्र में जॉन ने मूल अक्षर सीखने शुरू किये और इसके बाद तो वह खूब जल्दी से लिखना-पढ़ना सीखता ही गया । पहले से जंगल में इधर-उधर भटकने के कारण उसे वनस्पतियों की काफी अच्छी जानकारी थी । उसने वनस्पतिशास्त्र का एक ग्रंथ खरीदने के लिए पाँच शिलिंग जमा करने के लिए खूब जी तोड़ मेहनत से काम किया तथा वनस्पतिशास्त्र का गहरा अध्ययन करके उस विषय का पंडित बन गया । अब उसे पढ़ाई में इतनी अधिक रुचि हो गयी थी कि अस्सी वर्ष की वृद्धावस्था में भी एक पौधे को प्राप्त करने के लिए उसने बारह मील की पैदलयात्रा की थी । उसका शरीर दुर्बल था और जीर्ण-शीर्ण पहनावा, पर उसके दिमाग की करामात अद्भुत ! एक बार उसे एक अमीर आदमी मिला । जब उसे पता चला कि बाहर से एकदम साधारण सा दिखनेवाला जॉन वनस्पतिविज्ञान का महापंडित है, तो वह इस पर फिदा हो गया और उसने उसका जीवन-चरित्र अखबार में छपवा दिया । उसके बारे में पढ़कर बहुत से लोगों ने जॉन के पास काफी बड़ी-बड़ी रकम के चैक भेजे । परंतु उसने इस धन को अपने लिए प्रयुक्त नहीं किया और अपने वसीयतनामे में लिखा – ''मुझे प्राप्त सारी धन-राशि का उपयोग गरीब विद्यार्थियों के प्राकृतिक विज्ञान के अध्ययन के लिए किया जाय तथा उनको प्रोत्साहन देने के लिए 'स्कोलरशिप' तथा 'पारितोषिक' भी दिये जाएँ ।'' जॉन ने कीमती पुस्तकों का अपना ग्रंथालय भी आम लोगों के उपयोग के लिए दान में दे दिया था ।

भारत के अनेक महापुरुष भी इसी प्रकार गरीबी, अभाव तथा कठिनाइयों के दलदल में खिलने वाले कमल हैं । अपने-अपने क्षेत्रों में इन्होंने मूल्यवान प्रदान दिये हैं । धन के लिए उन्होंने धर्म (कर्तव्यपरायण) को लज्जित नहीं किया है । द्रव्य के लोभ में अपनी नीयत खराब नहीं की है । पद के लिए प्रतिष्ठा के साथ छेड़छाड़ नहीं की है ।

मनुष्यत्व अर्थात् उदारता तथा उदात्तता के प्रयोग के लिए प्राप्त हुआ दैवीय वरदान ! इसीलिए मुंशी प्रेमचंद ने कहा था कि मनुष्य यदि उदार बनता है तो देवदूत और यदि नीच बनता है तो शैतान । सोक्रेटिस के मतानुसार दुनिया में सम्मानपूर्वक जीने के लिए सबसे सरल और आवश्यक उपाय है कि आप अपने आपको जैसा बाहर से दिखाना चाहते हैं, वैसा ही भीतर भी बनें । वास्तव में मनुष्य स्वयं का ही विरोधी है । हम अपने सद्गुणों को स्वार्थ की बेआवाज बुलट से छलनी करते रहते हैं .... जीवनभर ! बाहर ही नहीं, अंदर से श्रीमंत अथवा अमीर बनना ही पैसा पचाने की कला है ।

शब्दार्थ

द्रव्यभक्ति धनलोभ **तृष्णा** लोभ, इच्छा, अपेक्षा **चैन** शांति **रौब** गर्व, अभिमान **शिलिंग** ब्रिटिश पौंड से छोटी मुद्रा **जीर्ण-शीर्ण** जर्जर **बुलट** बंदूक की गोली

मुहावरें

चैन की साँस लेना शांति होना **खून-पसीना एक करना** सख्त परिश्रम करना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) किसके बढ़ने पर जीवन-भक्ति कम हो जाती है ?

(अ) द्रव्य-भक्ति (ब) तरल-भक्ति (क) धन-भक्ति (ड) प्रभु-भक्ति

(2) पोम्पीनगर के खंडहरों से मिले एक नर-कंकाल की मुट्ठी में क्या था ?

(अ) चाँदी (ब) सोना (क) मोती (ड) हीरा

(3) मनुष्य अंदर से कब तक अमीर था ?

(अ) विज्ञान की खोज नहीं हुई थी तब तक (ब) टी.वी. की खोज नहीं हुई थी तब तक

(क) टेलिफोन की खोज नहीं हुई थी तब तक (ड) पैसों की खोज नहीं हुई थी तब तक

(4) इनमें से वनस्पतिविज्ञान का महान पंडित कौन बन गया ?

(अ) विवेकानंद (ब) दयानंद (क) डंकन (ड) श्री अरविंद

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) लोग अंत:करण की अमीरी की सुगंध कब खो देते हैं ?

(2) सुख का जादूगर और शांति का डकैत कौन-सा है ?

(3) आज जीवन का नियंत्रक परिबल कौन है ?

(4) अमीर धन कैसे कमाता है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) तृष्णा को परंपरागत डाकूरानी क्यों कहा गया है ?

(2) व्यापारी ने अपनी अंतिम साँस लेते समय रुपयों की थैली मजबूती से हाथ में क्यों पकड़ रखी थी ?

(3) आज वास्तविक धन कौन-कौन-से गुण में हैं ? क्यों ?

(4) आज मनुष्य की वृत्ति व प्रवृत्ति दोनों ही भ्रष्ट क्यों हो गई है ?

(5) डंकन के जीवन से क्या संदेश मिलता है ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) पोम्पीनगर के खंड़हरों के कंकाल और एक व्यापारी के हाथ में अंतिम समय तक क्या था ? क्यों ?

(2) डंकन वनस्पतिशास्त्र का महापंडित कैसे बना ?

(3) भारत के महापुरुषों को कीचड़ में खिलने वाले कमल क्यों कहा है ?

(4) 'बाहर ही नहीं अंदर से श्रीमंत अथवा अमीर बनना ही पैसा पचाने की कला है ।' समझाइए ।

5. निम्नलिखित कथनों को समझाइए :

(1) 'धन सुख का जादूगर भी है और शांति का डकैत भी ।'

(2) 'पहले त्याग द्वारा आनंद की प्राप्ति होती थी पर अब भोगने के बाद फेंक देना' - मूल मंत्र हो गया है ।

(3) 'आज जीवन में धन ही जीवन का नियंत्रक परिबल बन गया है ।'

6. सूचनानुसार लिखिए :

(1) **मुहावरों का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :** चैन की साँस लेना, खून-पसीना एक करना

(2) **दिए गए शब्दों के विशेषण बनाइए :** अमीर, परिवार, अभिमान, परिश्रम, दिन, दर्शन

(3) **दिए गए शब्दों से भाववाचक बनाइए :** मनुष्य, डाकू, व्यक्ति, दुर्बल, लज्जा

योग्यता-विस्तार

- वाल्मीकि, स्वामी रामतीर्थ, विवेकानंद के जीवनकार्य की जानकारी एकत्रित कीजिए ।
- 'भीतरी-समृद्धि' पर वक्तृत्व स्पर्धा का आयोजन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'जीवन में धन से ज्यादा महत्त्व गुणों का है ।' इस कथन को समझाइए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

23 भूख

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
(जन्म : सन् 1926 ई., निधन : सन् 1983 ई.)

नई कविता के इस प्रमुख कवि का जन्म बस्ती (उ.प्र.) में हुआ । आर्थिक अभावों से जूझते हुए इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एम.ए. किया । स्कूल में शिक्षक, क्लर्क की और आकाशवाणी में नौकरी की । बाद में 'दिनमान' के उपसम्पादक रहे ।

इनकी कविताओं में आधुनिक जीवन की विडंबना, विषम स्थिति में भी व्यक्ति की जिजीविषा आदि का मार्मिक चित्रण मिलता है । 'जंगल का दर्द', 'कुआनो नदी', 'गर्म हवाएँ', 'खूटियों पर टँगे लोग', 'क्या कह कर पुकारूँ', 'कोई मेरे साथ चले' आदि इनके प्रमुख काव्य-संग्रह हैं । इनकी रचनाएँ 'तीसरा सप्तक' में भी संकलित हैं । 'बतूता का जूता' बाल कविताओं का अनूठा संग्रह है । इन्होंने नाटक भी लिखे हैं ।

प्रस्तुत कविता में कवि ने सौन्दर्य को वैयक्तिक रुचि से हटाकर संघर्षशीलता के साथ जोड़ दिया है ।

जब भी
भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता है
सुन्दर दीखने लगता है ।
झपटता बाज,
फन उठाये साँप,
दो पैरों पर खड़ी
काँटों से नन्हीं पत्तियाँ खाती बकरी,
दबे पाँव झाड़ियों में चलता चीता,
डाल पर उल्टा लटक
फल कुतरता तोता,
या इन सबकी जगह
आदमी होता ।
जब भी
भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता है
सुन्दर दीखने लगता है ।

शब्दार्थ

बाज़ एक शिकारी पक्षी

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने प्राणियों में सौन्दर्य कब देखा है ?
(2) कवि के अनुसार बकरी में सुन्दरता कब प्रकट होती है ।
(3) कवि ने भूख की दशा को क्यों सुन्दर कहा है ?

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :

जब भी
भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता है
सुन्दर दीखने लगता है

प्रवृत्ति

- इस कविता के साथ बच्चन जी की 'बंगाल का अकाल' कविता ढूँढ़कर पढ़िए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रयोजनमूलक हिन्दी

संचार माध्यम

प्राचीन काल में मनुष्य का जीवन सीमित दायरे में बीत जाता था । उसे अपने इर्द-गिर्द घटनेवाली छोटी-बड़ी घटनाओं का ही पता चलता था । उस समय उनका विश्व अत्यंत छोटा था । धीरे-धीरे उसने समूह बनाया और अधिक जानकारी पाने का प्रयास किया ।

अपनी जानकारी दूसरों तक पहुँचाने के लिए प्राणियों का उपयोग होता था । धीरे-धीरे बैलगाड़ी, घोड़ों का उपयोग होने लगा । यंत्रयुग से जानकारी को फैलाने के अवसर बढ़ने लगे । साइकिल, मोटर, ट्रक से अब जानकारी दूर-दूर तक भेजी जाती थी ।

यंत्र में मुद्रण कला का प्रवेश होते ही छपी सामग्री से समाचार, कला, कथा इत्यादि का प्रचार-प्रसार होने लगा ।

पिछले कुछ वर्षों में संचार के माध्यमों में छपाई के साथ साथ डिजिटल स्वरूप में साहित्य फैलने लगा है । उपग्रहों के माध्यम से टीवी, दूरदर्शन, आकाशवाणी, फैक्स, ई-मेल, मोबाइल, डाक व्यवस्था इत्यादि में काफी प्रगति हुई । कम्प्यूटर का युग प्रगति करता गया । अब इन्टरनेट का जमाना आ गया । क्षणभर का भी समय नहीं लगता और समाचार की घटनाएँ दिखाकर एक कोने से दूसरे कोने तक पहुँचाई जाती हैं ।

आज हम कुछ प्रचार-प्रसार माध्यमों के बारे में बात करेंगे ।

समाचार पत्र

समाचार पत्र जनसंचार का मुद्रित माध्यम है । मनुष्य सदा अपने इर्द-गिर्द होनेवाली घटनाओं से परिचित होना चाहता है । अत: समाचार पत्र, समाचार टीवी चैनल, मोबाइल जैसे साधनों का आजकल अत्यधिक उपयोग होता है ।

समाचार पत्र तो हमारे जीवन का अभिन्न अंग हो गया है । प्रारंभ में समाचार पत्रों का उपयोग सेना के लिए होता था । आज शिक्षा, खेल, मनोरंजन, साहित्य, विज्ञापन आदि के लिए समाचार पत्र उपयोगी है । हर सुबह मुद्रित रूप में समाचार हमारे सामने समाचार पत्र के रूप में आते हैं । समाज के विकास में समाचार पत्रों की अहम् भूमिका है ।

समाचार पत्रों का ब्रिटिश शासन में बड़ा महत्त्व था । भारत में 'बंगाल गजट' हिन्दुस्तान टाइम्स, नेशनल हेराल्ड, पायोनियर, मुंबई मिरर जैसे समाचार पत्र अंग्रेजी में निकलते थे । इनके साथ बंगला और उर्दू में भी समाचार पत्र निकले थे । हिन्दी में समाचार पत्र सबको एकसूत्र में बाँधने में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए । लोकमान्य तिलक ने 'केसरी' का संपादन किया । लाला लजपत राय ने 'वन्दे मातरम्' पत्र निकाला । आज़ादी के आंदोलनों में इन समाचार पत्रों का योगदान बहुत बड़ा था । गणेश शंकर विद्यार्थी ने 1913 में कानपुर से साप्ताहिक 'प्रताप' का प्रकाशन आरंभ किया था । लोगों को आज़ादी के लिए तैयार करने में इन समाचार पत्रों का महत्त्व था । ये आज़ादी का हथियार सिद्ध हुए । गांधीजी ने 'हरिजन' तथा 'यंग इंडिया' का प्रकाशन किया । मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने 'अल हिलाल' पत्र का प्रकाशन किया । यह लोगों से प्रत्यायन का प्रबल साधन था । हिन्दुस्तान की सही तसवीर उन दिनों कैसी थी, इसका पता इन समाचार पत्रों से हमें पता चलता है ।

आकाशवाणी

'आकाशवाणी' भारत के सरकारी रेडियो प्रसारण सेवा का नाम है । आकाश से सुनाई जानेवाली वाणी जो विशेष यंत्रों द्वारा ध्वनि तरंगों के माध्यम से कार्यक्रमों के रूप में प्रसारित की जाती है । रेडियो यंत्र द्वारा उसकी तरंग लंबाई को पकड़ कर सुनी जाती हैं ।

सन् 1901 में मारकोनी नामक वैज्ञानिक ने रेडियो का आविष्कार किया था । इसकी सहायता से देश-विदेश में होनेवाले कार्यक्रम सुन सकते हैं ।

ऑल इंडिया रेडियो, बी.बी.सी. लंदन जैसी संस्थाएँ समाचार, हवामान तथा कार्यक्रम का प्रसारण करती हैं । रेडियो फ्रीक्वेंसी के माध्यम से हम उसे सुन सकते हैं ।

अब रोडियो द्वारा हम गीत, समाचार अन्य कार्यक्रम तथा विज्ञापन सुनते हैं ।

दूरदर्शन (टी.वी.)

सन् 1926 में जे.एल.बेयर्ड ने लोगों को टेलीविजन की भेट दी । यह रेडियो का ही एक विकसित रूप है । भारत में 1959 में दिल्ली में पहला दूरदर्शन केंद्र स्थापित किया गया । यह दृश्य-श्राव्य माध्यम है ।

दूरदर्शन से प्रसारित कार्यक्रम सेटेलाइट की सहायता से टी.वी. सेट के माध्यम से हम घर में छोटे पर्दे पर देख सकतें हैं । पहले प्रसारण केंद्र कम थे अब सेटेलाइट की संख्या बढ़ी, केन्द्रों की संख्याएँ बढ़ीं । सभी केंद्र नाटक, संगीत, कला, सांस्कृतिक कार्यक्रम, समाचार, खेल-कूद, फिल्म इत्यादि का प्रसारण करते हैं । धार्मिक चैनल धर्म प्रचार

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

करते हैं । टीवी के सामने समुचित समय एवं रुचिकर, आनंददायक, बुद्धिगम्य निश्चित कार्यक्रम ही देखने का औचित्य रखना चाहिए वर्ना आँखें कमजोर हो सकती हैं । शैक्षणिक कार्यक्रमों से पढ़ाई में मन लगता है तथा रुचिकर प्रस्तुति के कारण लाभ होता है ।

STD, ISD, PCO

STD का पूरा नाम है - Subscriber trunk dialing

ISD का पूरा नाम है - International Subscriber Dialing

PCO का पूरा नाम है - Public Call Office

PCO द्वारा अपने इलाकों में तथा निश्चित विस्तार में टेलीफोन द्वारा निश्चित व्यक्ति का कॉल नंबर डायल करके बात कर सकते हैं । कुछ लोग अपना प्राइवेट (निजी) फोन डिवाइस (साधन) रखते थे । पर PCO द्वारा कोई भी व्यक्ति अपने परिचित से फोन से बात कर सकता है ।

STD में विस्तार का एक कोड नंबर दिया जाता है । उसको सबसे पहले मिलाकर बाद में उपभोक्ता का नंबर लगाकर बात की जाती है । जनता की सुविधा के लिए STD, PCO की व्यवस्था डाक विभाग से की गई थी कोई भी व्यक्ति इसका यूनिट खरीदकर PCO खोल सकता है । स्थानीय तथा अन्य राज्यों में बात कर सकता है । हर शहर, राज्य का अलग कोड होता है ।

ISD में इंटरनेशनल बात करने की सुविधा होती है । कोड मिलाकर किसी भी देश के निवासी उपभोक्ता से बात की जा सकती है । इससे कम खर्च में विदेश में स्थित सगे-संबंधी तथा कारोबार के लिए बातचीत की जाती थी । अब मोबाइल के युग में शीघ्र विकास के कारण इसका प्रचलन कम हो गया हैं । ये संचार के माध्यम अब कम प्रयोग में दिखाई देते हैं ।

कम्प्यूटर (Computer)

कम्प्यूटर के लिए हिन्दी में संगणक शब्द का प्रयोग होता है । कम्प्यूटर मनुष्य के मस्तिष्क की तरह, किन्तु इससे भी अधिक तेजी से वह गणितीय रचनाओं, आँकड़ों के विश्लेषण आदि के साथ-साथ प्राप्त सामग्री को अपनी स्मृति इकाई में भी संचित करता है । आजकल संगणक का जो रूप हमें देखने को मिलता है वह न्यूमैन नाम वैज्ञानिक की देन है । सन् 1642 में ब्लेन पास्कल नामक वैज्ञानिक ने यांत्रिक संगणक का आविष्कार किया था । संगणक का मूल इसमें देखा जा सकता है बेरान गाट, फिक्ड ने कम्प्यूटर में अनेक संशोधन किए । बाद में सन् 1833 में चार्ल्स बेवेज ने एक विशेष किस्म के मशीन का आविष्कार किया, जो 'एरिथमेटिक, आउटपुट एवं कंट्रोल संबंधी व्यवस्था थी । इस दृष्टि से चार्ल्स बेवेज को आधुनिक कम्प्यूटर का पिता कहा जा सकता है ।

आज कम्प्यूटर जगत में वैविध्यपूर्ण एवं विशिष्ट कार्य करनेवाले अनेकविध कम्प्यूटर उपलब्ध हैं । इन कम्प्यूटरों को मोटे तौर पर मनफ्रेम कम्प्यूटर, मिनी कम्प्यूटर तथा माइक्रो कम्प्यूटरों के अंतर्गत विभाजित किया गया है । आजकल विज्ञान, वाणिज्य, स्वास्थ्य, संगीत, पत्रकारिता सहित सरकारी, अर्ध सरकारी एवं निजी कंपनियों समाचार पत्रों, दूरदर्शन, आकाशवाणी, संचारसेवा, परिवहन आदि सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर का उपयोग बड़े पैमाने से होता है । संचार क्रांति में कम्प्यूटरकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है ।

डी.टी.पी. (Desk Top Publishing)

अन्य क्षेत्रों की तरह मुद्रण एवं प्रकाशन जगत में भी जबरदस्त क्रान्ति हो गई है । डी.टी.पी. के आविष्कार के साथ अब कम्पोजिंग का सारा कार्य एक मेज पर करना मुमकिन हो गया है । पर्सनल कम्प्यूटर पर विशेष प्रकार के सॉफ्टवेयर की मदद से डिस्क-कार्ड लगाकर या प्रकाशक आदि सॉफ्टवेयर के प्रयोग से टंकित सामग्री को विभिन्न पृष्ठों में विभाजित करना सरल हो गया है । वर्तनी जाँच (Spell Check) की मदद से टंकित सामग्री संशोधित की जा सकती है । सामान्य कम्प्यूटरों के साथ उपलब्ध डॉट मेट्रिक प्रिन्टर (बिन्दु-मुद्रक) पर बढ़िया किस्म की छपाई नहीं होती । इसलिए लेजर प्रिन्टर का प्रयोग किया जाता है । कलर प्रिन्टर की मदद से रंगीन छपाई भी संभव हो चुकी है ।

ई-मेल (E-mail)

ई-मेल का अर्थ है - इलेक्ट्रोनिक मेल - यह एक ऐसी प्रक्रिया या पद्धति है जो दो कम्प्यूटर्स युजर्स के बीच संदेश व्यवहार का कार्य करते हैं । 1960 से 1970 तक इस प्रकार की संदेशा व्यवहार की पद्धति में अनेक रूप से परिवर्तन हुए इस समय जो इलेक्ट्रोनिक्स मेल की प्रक्रिया हुई उसे ई-मेल के रूप में जाना जाता है ।

इन्टरनेट के माध्यम से यह प्रक्रिया होती है । कुछ समय पहले दोनों कम्प्यूटर युजर्स - होना जरूरी था । आज यह ई-मेल व्यवस्था स्टोर एड, फार्वर्ड मोडेल पर निर्भर है । ई-मेल सर्वर संदेश को स्वीकार कर, फोर्वर्ड कर डिलीवर करते हैं तथा स्टोर करते हैं । इसलिए भेजनेवाला या पानेवाला कम्प्यूटर का Online होना अब जरूरी नहीं ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पत्र-लेखन

पत्र-लेखन एक कला है । अच्छे पत्रों में सहजता, आत्मीयता एवं अपनापन होता है । पत्र की भाषा प्रसंगानुसार होनी चाहिए । पत्रों में शिष्टाचार का निर्वाह होना अत्यंत आवश्यक है । पत्र-लेखन का इतिहास बहुत पुराना है । विचारों के आदान-प्रदान का यह एक उत्तम साधन है । पत्रों से मैत्री बनाना सरल होता है । पत्र-मित्र बनाकर हम देश-विदेश में नये मित्र बना सकते हैं । पत्र एक दस्तावेज के रूप में संग्रहीत किए जा सकते हैं ।

राजपूत सामंत पृथ्वीराज का राजा प्रताप को लिखा पत्र, कर्मवती का हुमायूं को सहायता के लिखा पत्र, जवाहरलाल के प्रियदर्शिनी को लिखे गए पत्र, गांधीजी, गालिब, महावीर प्रसाद द्विवेदीजी के पत्र दस्तावेज बन गए हैं ।

पत्र निजी या व्यक्तिगत होते हैं, व्यावसायिक पत्र तथा सरकारी एवं अर्धसरकारी पत्र ये तीन प्रकार के पत्र पाये जाते हैं ।

पत्र के प्रमुख अंगों पर ध्यान देना चाहिए, जो इस प्रकार हैं :

- **पत्र लिखनेवाले का पता एवं दिनांक :** जो पत्र की दाहिनी ओर लिखा जाता है, अब कम्प्यूटर के युग में सुविधा के लिए इसे बायीं ओर भी रखा जाता है ।
- **संबोधन :** निजी या व्यक्तिगत पत्रों में संबोधन तथा अन्य पत्रों के संबोधन में अंतर होता है ।

निजी पत्रों में बड़ों के प्रति आदरसूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है । जैसे - पूज्य, परमपूज्य, आदरणीय श्रद्धेय, पूजनीय, मान्यवर, माननीय, पूज्या, पूजनीया.... इत्यादि । छोटों के प्रति प्रेम व्यक्त करने के लिए प्रिय भाई, मित्रवर, प्रिय मित्र, बन्धुवर, चिरंजीव... इस प्रकार संबोधन होते हैं व्यावसायिक या सरकारी पत्रों में प्रति के बाद उनके होद्दों के अनुसार संबोधन होता है ।

- **पत्र का विषय :** व्यावसायिक पत्रों में इसका विशेष उपयोग होता है ।
- **अभिवादन :** सरकारी या व्यावसायिक पत्रों में अभिवादन की परंपरा नहीं है । व्यक्तिगत पत्रों में प्रणाम, नमस्कार, सादर वंदन, चरणस्पर्श, नमस्ते .... इत्यादि से अभिवादन किया जाता है ।
- **पत्र का मुख्य भाग :** यह हिस्सा पत्र की जान है, व्यक्तिगत पत्रों में कुशल समाचार के बाद पत्र में मुख्य बात विशिष्ट शैली, भाषा में व्यक्त होती है । पत्र-लेखक का सहज परिचय भाषा से होता है ।

व्यावसायिक एवं सरकारी पत्रों में नपे-तुले शब्दों में विषय को औपचारिक रूप से लिखा जाता है ।

- **हस्ताक्षर के पूर्व प्रयुक्त शब्दावली :** व्यक्तिगत पत्रों में संबंधानुसार बड़ों को लिखे पत्रों में आज्ञाकारी, आपका सेवक, कृपाकांक्षी, स्नेहभाजन; छोटों को शुभचिंतक, शुभेच्छक, शुभाकांक्षी आदि लिखा जाता है ।

आवेदन पत्रों में भवदीय, प्रार्थी या निवेदक लिखा जाता है । अंत में प्रेषक का नाम लिखा जाता है ।

- **पता :** पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र या लिफाफे पर योग्य ढंग से पता लिखना चाहिए ।
  - पहले पानेवाले का नाम ।
  - मकान का नंबर ।
  - मुहल्ला या सोसायटी, कॉलोनी का नाम ।
  - सीमा चिह्न रूप स्थान या विस्तार ।
  - रास्ता-विशेष का नाम ।
  - नगर या गाँव का नाम तथा पिन कोड नंबर ।

इन बातों का क्रमश: लिखना चाहिए । गाँव या शहर का नाम बड़े या बोल्ड अक्षरों से लिखने से डाक कर्मचारी को सुविधा रहती है ।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए पत्र लिखने से आप अपनी पत्र-लेखन कला का विकास कर सकते हैं ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पत्राचार

मनुष्य अपने भावों एवं विचारो को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा का लिखित एवं मौखिक प्रयोग करता है । पत्र लिखकर हम अपने भावों, विचारों, सूचनाओं, संदेशों, आदेशों आदि को दूसरों तक पहुँचा सकते हैं । डाक विभाग की मदद से हम इन पत्रों को दूर-सुदूर तक पहुँचा सकते हैं । निजी संबंधों में हम आत्मीयतापूर्ण ढ़ंग से पत्र लिखकर अपनी बात नाते-रिश्तेदार, स्नेही-स्वजनों और मित्रों को पहुँचा सकते हैं । ऐसे पत्रों को अनौपचारिक पत्र कहते हैं । सरकारी, प्रशासनिक एवं कार्यालयों को लिखे जानेवाले पत्र औपचारिक पत्र कहे जाते हैं । आवेदन पत्र, शिकायती पत्र इसी श्रेणी में आते हैं । यहाँ प्रस्तुत औपचारिक पत्र के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं ।

उदाहरण 1 : निजी टेलीफोन का कनेक्शन कटने की शिकायत

(**सूचना :** क्रमानुसार ढाँचे के अनुसार ड्राफ्टिंग किया जाए ।)

सिद्धार्थ महेता
159, सत्याग्रह छावनी-6
आंबावाड़ी,
अहमदाबाद-380015

दिनांक : 10-08-2016

सेवा में,
कार्यपालक अभियंता,
भारत संचार निगम लिमिटेड
साबेना एपार्टमेन्ट,
मा. जे. ग्रंथालय के सामने,
एलिसब्रिज,
अहमदाबाद-380006

विषय : निजी टेलीफोन कनेक्शन कटने के बारे में ।

महोदय,

मैं भारत संचार निगम लिमिटेड के टेलीफोन नंबर 26929291 का धारक हूँ । एक सप्ताह पूर्व मेरा कनेक्शन काट दिया गया है । आपके कार्यालय से प्राप्त सूचनानुसार मैंने टेलीफोन बिल की पूरी राशि जमा करा दी है । भुगतान किए गए बिल की फोटो प्रति भी मैंने संबद्ध कार्यालय में पहुँचा दी है । आपकी जानकारी के लिए इसकी एक फोटो प्रति संलग्न है ।

आपसे अनुरोध है कि मेरा टेलिफोन कनेक्शन तत्काल चालू करवाने की आवश्यक व्यवस्था करें ।

भवदीय,

सिद्धार्थ महेता

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण 2 : बस सेवा संबंधी शिकायत पत्र ।

अश्फाक शेख
विनय विहार,
बस अड्डे के पास,
बावला,
जिला : अहमदाबाद

दिनांक : 25/02/2017

सेवा में,
गुजरात राज्य परिवहन निगम,
आस्टोडिया,
अहमदाबाद-380001

विषय : बस सेवा की अनियमितता

महोदय,

मैं बावला अहमदाबाद का निवासी हूँ । अहमदाबाद स्थित अपने कार्यालय पहुँचने के लिए मैं बावला बस अड्डे से प्रात: 9:30 बजे छूटने वाली बस का उपयोग करता हूँ । किन्तु पिछले कुछ दिनों से वह बस अनियमित है । अत: मैं अपने कार्यालय में ठीक समय पर नहीं पहुँच पाता हूँ । मेरी तरह अन्य दैनिक-यात्रियों को भी अत्यधिक असुविधा का सामना करना पड़ता है ।

मेरा आपसे अनुरोध है कि उपर्युक्त बस-सेवा नियमित रूप से निर्धारित समयानुसार बस अड्डे से रवाना हो, इसके लिए सब डिपो प्रबंधक को आवश्यक निर्देश देने की कृपा करें ।

भवदीय

हस्ताक्षर
(अश्फाक शेख)

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पूरक-वाचन

1 क्रिकेट जगत में अनुशासन और टीम भावना

विजय मर्चन्ट

इन दो शब्दों का प्रयोग तो बहुत अधिक किया जाता है लेकिन सही तरह से समझा बहुत कम जाता है । अनुशासन का अर्थ होता है, कप्तान के आदेशों का पूरी तरह से पालन करना । यदि आपसे कप्तान जल्दी-जल्दी रन बनाने को कहे तो आप उससे विकेट की स्थिति, गेंद कैसी फेंकी जा रही है या पिच की हालत आदि के बारे में किसी प्रकार का तर्क न करें । कप्तान के आदेशों को पालन करने का भरसक प्रयत्न करें ।

किसी भी टीम की सफलता के लिए टीम-भावना बहुत महत्त्वपूर्ण होती है । टीम-भावना का यह मतलब नहीं होता कि टीम के ग्यारह सदस्यों का आपस में मेल-जोल हो, हालाँकि यह भी बहुत जरूरी है । टीम-भावना का अर्थ होता है कि आप अपने व्यक्तिगत संबंधों को दूर रखें और केवल टीम के लिए खेलें, अपने लिए नहीं अधिक-से-अधिक रन तो बनाइए, लेकिन जल्दी बनाइए ताकि उससे आपकी टीम को लाभ भी हो । यहाँ में टीम-भावना के तीन उदाहरण प्रस्तुत करूँगा, जिससे कि आपको मेरा आशय ज्यादा अच्छी तरह समझ में आ जाएगा ।

'अ' और 'ब' बल्लेबाजी कर रहे हैं । 'अ' ने 10 से अधिक रन बना लिए हैं । दिन का खेल खत्म होने से 10 मिनट पहले 'ब' आउट हो जाता है । अब 'स' 'अ' के साथ खेलने आता है । उस समय उसकी टीम-भावना उससे यह माँग करती है कि यह खेल का जो थोड़ा-सा समय बचा है, उसमें 'स' को गेंद से जितना बचा सकता है, बचाए । उसे यह भी नहीं सोचना चाहिए कि मैं तो बेहतर बल्लेबाज़ हूँ और इसलिए मेरी विकेट 'स' की तुलना में ज़्यादा कीमती है । यदि वह ऐसा सोचने लगेगा तो इसका अर्थ यह हुआ कि वह अपने लिए खेल रहा है, टीम के लिए नहीं ।

एक दूसरा उदाहरण लें । सोचिए कि 'अ' और 'ब' गेंद फेंक रहे हैं । ऐसे मौके आ सकते हैं जबकि टीम के कप्तान यह चाहते हों कि इस समय उन्हें विकेट नहीं लेनी चाहिए । उस स्थिति में गेंदबाज़ों को अपने कप्तान से किसी प्रकार का तर्क नहीं करना चाहिए, बल्कि उसके आदेश का पालन करना चाहिए ।

एक और उदाहरण फील्ड में कभी-कभी गेंद बहुत उछाल दी जाती है । दो क्षेत्ररक्षक उस गेंद को कैच करने की स्थिति में हैं । 'क' बहुत कुशल क्षेत्ररक्षक है लेकिन वह गेंद से दूर है । 'ख' यों तो गेंद के पास है लेकिन वह कमज़ोर क्षेत्ररक्षक है । टीम-भावना को ध्यान में रखते हुए उस समय 'क' को चाहिए कि वह 'साइड' या 'माइन' पुकारकर उस कैच को लेने के लिए दौड़ पड़े, भले ही यह उसके लिए ज़्यादा कठिन हो ।

इस समय भारतीय टीम में अनुशासन और टीम-भावना के लाभ को पहले से ज़्यादा समझा जाने लगा है । आज हमारे खिलाड़ी टीम के रूप में खेलते हैं, तभी आज हमारा खेल पहले से कहीं ज़्यादा अच्छा है ।

शब्दार्थ

तर्क दलील **भरसक** जहां तक हो सके **आशय** तात्पर्य, उद्देश्य **बेहतर** अपेक्षाकृत ठीक या अच्छा **आदेश** आज्ञा **उदाहरण** मिसाल

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2 जलियाँवाला बाग में बसंत

सुभद्राकुमारी चौहान

प्रस्तुत कविता में कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने भारत की निहत्थी और शांतिपूर्वक सभा कर रही जनता पर जलियाँवाला बाग में अंग्रेज़ सरकार द्वारा गोली चलाने की मार्मिक कथा का वर्णन किया है । इस घटना से मर्माहत कवयित्री ने वहाँ बसंत से धीरे एवं शांतिभाव से आने का आग्रह किया है ।

यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते ।
काले-काले कीट, भ्रमर कर भ्रम उपजाते ।
कलियाँ भी अधखिली, मिली हैं कंटक-कुल से ।
वे पौधे, वे पुष्प, शुष्क हैं अथवा झुलसे ॥

परिमल-हीन पराग दाग-सा बना पड़ा है ।
हा ! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है ।
आओ, प्रिय ऋतुराज ! किंतु धीरे से आना ।
यह है शोक-स्थान, यहाँ मत शोर मचाना ॥

वायु चले, पर मंद चाल से उसे चलाना ।
दु:ख की आहें संग उड़ाकर मत ले जाना ।
कोकिल गावे, किंतु राग रोने का गावे ।
भ्रमर करे गुँजार, कष्ट की कथा सुनावे ॥

लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले ।
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ-कुछ गीले ।
किंतु न तुम उपहार भाव आकर दरसाना ।
स्मृति में पूजा-हेतु यहाँ थोड़े बिखराना ॥

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर ।
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर ।
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं ।
अपने प्रिय परिवार-देश से भिन्न हुए हैं ॥

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना ।
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना ।
तड़प-तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर ।
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर ॥

यह सब करना, किंतु, बहुत धीरे से आना ।
यह है शोक-स्थान यहाँ न शोर मचाना ॥

शब्दार्थ

ऋतुराज वसन्तकाल **कीट** कीड़े-मकोड़े **कंटक** काँटा **शुष्क** सूखा, अनार्द **पराग** फूल के भीतरी भाग का धूल **परिमल** सुगंध, सुवास **कोकिला** कोयल **स्मृति में** याद में **ऋतु** मौसम, अश्रु **भ्रम** संशय **मंद** धीमा **आह** दु:ख या क्लेशसूचक शब्द **ओस** शीत (हवा में मिली हुई भाप जो रात्रि के समय सरदी से जमकर जल-कण के रूप में गिरती है ।)

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3 सत्साहसी

गणेश शंकर विद्यार्थी

इस लेख में साहस के अनेक रूपों की चर्चा की गई है तथा यह भी बताया गया है कि सत्साहस क्या है । सत्साहस और दुस्साहस में क्या अंतर है यह भी बताया गया है ।

संसार के सभी महापुरुष साहसी थे । संसार के काम, बड़े अथवा छोटे, साहस के बिना नहीं होते । बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाए किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं बन सकता । अपने साहास के कारण ही अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु आदि आज हमारे हृदयों में बसे हैं ।

साहसी के लिए केवल साहस प्रकट करना ही अभीष्ट नहीं क्रोधांध होकर स्वार्थवश साहस दिखाने को किसी प्रकार प्रशंसनीय कार्य नहीं कहा जा सकता । इस प्रकार का साहस चोर और डाकू भी कभी-कभी कर गुज़रते हैं । राजा-महाराजा भी अपनी कुत्सित अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए कभी-कभी इससे भी बढ़कर साहस के काम कर ड़ालते हैं । ऐसा साहस निम्न श्रेणी का साहस है । इस साहस को किसी भी दृष्टिकोण से सत्साहस नहीं कहा जा सकता ।

मध्यम श्रेणी का साहस प्राय: शूरवीरों में पाया जाता है । वह उनके उच्च विचार और निर्भीकता को भली-भाँति प्रकट करता है । इस प्रकार के साहसी मनुष्यों में बेपरवाही और स्वार्थहीनता की कमी नहीं होती परंतु उनमें ज्ञान की कमी अवश्य पाई जाती है ।

एक बार बादशाह अकबर के पास दो राजपूत नौकरी के लिए आए । अकबर ने उनसे पूछा, ''तुम क्या काम कर सकते हो ?''

वे बोले, ''जहाँपनाह ! करके दिखलाएँ या केवल कहकर ?''

बादशाह ने करके दिखलाने की आज्ञा दी । राजपुतों ने घोड़ों पर सवार होकर अपने-अपने बरछे सँभाले और अकबर के सामने ही एक-दूसरे पर वार करने लगे । बादशाह के देखते-देखते दोनों घोड़ों से नीचे आ गिरे और मरकर ठंडे हो गए । इस प्रकार का साहस निस्संदेह प्रसंसनीय है परंतु ज्ञान की आभा की कमी के कारण निस्तेज-सा प्रतीत होता है ।

सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हाथ-पैर की बलिष्ठता आवश्यक नहीं और न ही धन-मान आदि का होना आवश्यक है । जिन गुणों का होना आवश्यक है, वे हैं - हृदय की पवित्रता, उदारता और चरित्र की दृढ़ता । ऐसे गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ साहस, तब तक पूर्णतया प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता, जब तक उसमें एक और गुण सम्मिलित न हो । इस गुण का नाम है, 'कर्तव्यपरायणता' ।

कर्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी मनुष्य में होना चाहिए । कर्तव्यपरायण व्यक्ति के हृदय में यह बात अवश्य उत्पन्न होनी चाहिए कि जो कुछ मैंने किया, वह केवल अपना कर्तव्य किया । मारवाड़ के मौरूदा गाँव का ज़मींदार बुद्धन सिंह किसी झगड़े के कारण स्वदेश छोड़कर जयपुर चला गया और वहीं बस गया । थोड़े ही दिनों बाद मराठों ने मारवाड़ पर आक्रमण किया । यद्यपि बुद्धन मारवाड़ को बिलकुल ही छोड़ चुका था तथापि शत्रुओं के आक्रमण का समाचार पाकर और मातृभूमि को संकट में पड़ा हुआ जानकर उसका रक्त उबल पड़ा । वह अपने एक सौ पचास साथियों को लेकर, बिना किसी से पूछे जयपुर से तुरंत चल पड़ा । वह समय पर अपने देश और राजा की सेवा करने के लिए पहुँच गया ।

इस घटना को हुए बहुत दिन हो गए परंतु आज भी मारवाड़ के लोग कर्तव्यपरायण बुद्धन सिंह की वीरता व सत्साहस को सम्मानपूर्वक याद करते हैं । राजपूत महिलाएँ आज भी बुद्धन और उसके साथियों की वीरता के गीत गाती हैं ।

सत्साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है जिसके बल से वह दूसरे मनुष्य को दु:ख से बचाने के लिए प्राण तक देने को प्रस्तुत हो जाता है । धर्म, देश, जाति और परिवार वालों के लिए नहीं, अपितु संकट में पड़े हुए अपरिचित व्यक्ति के सहायतार्थ भी उसी शक्ति की प्रेरणा से वह संकटों का सामना करने को तैयार हो जाता है । अपने प्राणों की वह लेशमात्र भी परवाह नहीं करता । हर प्रकार के कलेशों को प्रसन्नतापूर्वक सहता है और स्वार्थ के विचारों को वह फटकने तक नहीं देता है । सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है । सत्साहस दिखाने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, पल-पल में, आया करता है । देश, काल और कर्तव्य पर विचार करना चाहिए और स्वार्थरहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्तव्यपरायण बनने का प्रयत्न करना चाहिए । यही सत्साहस है ।

शब्दार्थ

साहसी हिम्मती **प्रशंसनीय** प्रशंसा के योग्य **निम्न** नीचा **मध्यम** बीच का **क्लेशों** कष्टों **अभीष्ट** उद्देश्य, ऐच्छिक **कुत्सित** निंदित, नोच **दृष्टिकोण** नज़रिया **सत्साहस** हिम्मत **कर्तव्यपरायण** उचित काम करने वाला **बलिष्ठता** मज़बूती **निर्भीकता** निड़रता **शूरवीर** बहादुर, योद्धा **सर्वोच्च** सबसे ऊँचा

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4 असाध्य एड्स

दीपिका गुप्त

एड्स एक असाध्य रोग है । मनुष्य इसका इलाज़ ढूँढ़ने में निरंतर लगा हुआ है । इस समय तक इसका कोई इलाज़ नहीं, परंतु सही जानकारी ही हमें इस रोग से बचा सकती है । ऐसी स्थिति में यह जानकारी शिक्षा का एक आवश्यक अंग है । विद्यार्थी निश्चित रूप से इस उपयोगी ज्ञान से लाभान्वित होंगे ।

प्रतिदिन की भाँति आज जब मैं आठवीं क्लास में पहुँची तो कुछ असामान्य-सा शोर हो रहा था । मेरी उपस्थिति को महसूस करते हुए सभी भागकर अपने-अपने निर्धारित स्थान पर जा बैठे । मैं कुछ कहूँ, इससे पहले रोहन बोला – ''मैम आदिल रो रहा है ।''

क्लास लगभग शांत हो चुकी थी । मैंने चारों ओर देखा, मेरी दृष्टि आदिल पर पड़ी । उसकी आँखें लाल और चेहरे पर क्रोध स्पष्ट दिखाई दे रहा था । मैंने पूछा – ''क्या बात है आदिल ?'' उसने कुछ नहीं, कहकर बात को टालना चाहा पर रोहन फिर बोल पड़ा – ''मैम, जतिन और मयंक इसे 'एडिल' ! 'एडिल' ! कहकर चिढ़ा रहे थे ।'' इस पर आदिल ने रोहन को बैठने का इशारा करते हुए मुझसे फिर वही कहा – ''नो मैम कुछ नहीं ।'' मैंने भी यही सोचा कि बच्चे एक-दूसरे का नाम बिगाड़ने की शरारत तो करते ही हैं । मैंने पढ़ाना शुरू कर दिया । एक बार के लिए मैंने मन में यह सोचा कि इतनी-सी बात पर रोने वाला तो आदिल है नहीं । फिर पढ़ाकर बाहर निकली और अगली क्लास में चली गई । यह बात मैं बिलकुल भूल गई थी । छुट्टी के बाद जब मैं स्टाफ रूप से बाहर निकल रही थी तो लगभग सभी बच्चे जा चुके थे । कॉरिडोर खाली था । तभी मैंने रोहन और आदिल को आते देखा और दोनों के गंभीर चेहरों को देखकर सारी बात पुन: याद आ गई मैंने तुरंत पूछा ''आदिल क्या बात है ? मुझे बताओ शायद में तुम्हारी मदद कर सकूँ ।'' आदिल कुछ नहीं बोला । उसकी आँखों में फिर आँसू तैरने लगे तो रोहन ने बताया – ''मैम इसके दादा जी. एच. आई. वी. पॉज़िटिव हैं, इसलिए मयंक और जतिन इसे एडिल-एडिल कहकर चिढ़ा रहे थे ।'' सुनकर मैं चौंक गई । मैं जिस बच्चों की शैतानी समझ रही थी, वह तो काफ़ी गंभीर बात थी । स्वयं को संयत कर मैंने कहा – ''यह तो बड़े दु:ख की बात है, पर तुमने यह सब क्लास में क्यों बताया ?'' इस पर आदिल ने बताया कि – ''मयंक के पिताजी डॉक्टर हैं । उन्हीं की देख-रेख में मेरे दादा जी का इलाज चल रहा है ।''

''अच्छा ! ठीक है, मैं उन्हें समझाऊँगी ।'' कहकर मैंने बच्चों को भेज दिया और स्वयं भी घर आ गई ।

घर आकर भी मेरे दिमाग में यही चलता रहा कि यह उपेक्षा करने की बात नहीं, बच्चों को सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है । एक बार सोचा कि कल मैं ही उन्हें समझाऊँगी, फिर मुझे कुछ संकोच हुआ कि मैं इस विषय पर इतनी अच्छी तरह बच्चों की सभी जिज्ञासाएँ शांत नहीं कर पाऊँगी । अच्छा तो यही रहेगा कि इस विषय के किसी अच्छे जानकार के साथ बच्चों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया जाए ।

यह विषय मज़ाक बनाने का नहीं है । संभवत: बच्चों के मन में अधकचरी के साथ-साथ कुछ भ्रांतियाँ भी हैं । इनका निराकरण बहुत ज़रूरी है ।

यही सब सोचते हुए मैंने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग में कार्यरत अपनी एक मित्र को फ़ोन किया । उनसे बात करते ही मेरी सारी उलझन दूर हो गई । उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग का एक स्पेश्यल सेल, स्कूलों के लिए इसी तरह की कार्यशालाएँ आयोजित करता है । मैं जब चाहूँ, वो अपने स्वास्थ्य अधिकारी को स्कूल में भेज सकती हैं ।

अगले दिन सुबह मैं डॉ. अय्यर (स्वास्थ्य अधिकारी) को लेकर क्लास में पहुँची; परिचय के पश्चात् वे सीधे बच्चों से बात करने लगे । सबसे पहले उन्होंने बोर्ड पर लिखा 'एड्स' और बच्चों से पूछा कि ये क्या है ?

लगभग सभी ने हाथ उठाया, सबका उत्तर था कि यह एक बीमारी है । कुछ ने यह भी बताया कि 'यह एक जानलेवा बीमारी है ।'

बच्चों के उत्तर सुनकर डॉ. अय्यर संतुष्ट थे । तभी उन्होंने उन बच्चों की ओर इशारा किया, जो आपस में बातें

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कर रहे थे । डॉ. अय्यर ने उन्हीं से पूछा कि वे क्या करना चाहते हैं ?'' जो भी कहना है, वह खुलकर कहिए और खुलकर पूछिए; हमारी कार्यशाला का यही उद्देश्य है ।''

इस पर बच्चों में से एक ने कहा – ''सर यह एक गंदी बीमारी है, जो गंदे लोगों को होती है ।''

डॉ. अय्यर – ''बेटा आप लोगों ने किसी अच्छी बीमारी का नाम सुना है क्या ?''

क्लास में हँसी का ठहाका लगा । डॉ. अय्यर ने समझाया कि ''हर बीमारी गंदी या खराब ही होती है । पर यह बात कहना गलत है कि यह बीमारी गंदे लोगों को होती है । यह बीमारी किसी को भी हो सकती है । जिसे बीमारी हो गई है, उससे घृणा करना भी गलत है । हमारे समाज में जानकारी के अभाव में लोग एड्स के रोगियों के प्रति बुरा व्यवहार करते हैं । ऐसे भी कई किस्से सामने आए हैं, जब रोगियों को उनके घर वालों ने घर से निकाल दिया । इसलिए सही जानकारी ज़रूरी है । आप हर बात खुलकर पूछिए, मैं आपको पूरी जानकारी दूँगा ।''

इसके बाद डॉ. अय्यर ने श्यामपट्ट (ब्लैक बोर्ड) पर लिखा –

A – एक्वायर्ड (प्राप्त किया हुआ)

I – इम्यूनो (रोगों से लड़ने की क्षमता)

D – डिफिशिएसी (कमी)

S – सिंड्रोम (लक्षणों का समूह)

''एड्स एक भयंकर बीमारी है । यह संसार के लिए एक चुनौती बन चुकी है । विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार लगभग 5 करोड़ वयस्क और 15 लाख बच्चे एच. आई. वी. की चपेट में आ चुके हैं ।'' क्लास बिलकुल शांत थी । सभी ध्यान से सुन रहे थे । आदिल ने हाथ उठाया और पूछा – ''सर ! ये एच. आई. वी. क्या है ?''

डॉ. अय्यर – ''असल में यह एच. आई. वी. ही एड्स की जड़ है । इसे पूरे शब्दों में **ह्यूमन इम्यूनो डेफ़िशिएंसी वायरस** कहते हैं । यह वायरस अर्थात् जीवाणु जिसके शरीर में प्रवेश कर जाता है, उस व्यक्ति में बीमारियों से लड़ने की क्षमता नष्ट हो जाती है ।''

इस बार माधुरी ने पूछा – ''यह वायरस शरीर में प्रवेश कैसे करता है ?''

डॉ. अय्यर – ''यह बात जानना बहुत ज़रूरी है । यही जानकारी आपको एड्स से बचा सकती है । इसे जानने के बाद आप बहुत-सी भ्रांतियों से भी बच सकते हैं । आप समझ जाएँगे कि एड्स के रोगी को छूने से या उसके पास बैठने से यह रोग नहीं फैलता । इसके निम्नलिखित कारण हैं –

(1) संक्रमित सूई (इनफेक्टेड नीडिल)

(क) अनाड़ी डॉक्टर द्वारा रोगी के लिए प्रयोग में लाई गई सूई को यदि किसी स्वस्थ व्यक्ति के लिए पुन: प्रयोग में लाया जाए तो एच. आई. वी. शरीर में प्रवेश कर जाता है ।

(ख) नशीली दवा (ड्रग्स) लेने वालों द्वारा संक्रमित सूई के प्रयोग के समय भी ऐसा हो सकता है ।

(ग) नाक, कान या त्वचा पर किसी भी हिस्से में छेद करवाने के समय ।

(घ) गोदना गुदवाते समय यानी टैटू बनवाने वालों की सूई से भी ऐसा हो सकता है ।

(2) संक्रमित रक्त : शरीर में रक्त की कमी या शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) के समय हमें रक्त की आवश्यकता पड़ती है, उस समय यदि संक्रमित (एच. आई. वी. इन्फ़ेक्टेड) रक्त चढ़ा दिया जाए तो स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में यह विषाणु प्रवेश कर जाता है । रक्त के अतिरिक्त, कभी रक्त के अन्य पदार्थ जैसे – प्लाज़मा, प्लेटलैट्स आदि चढ़वाने के समय भी ऐसा हो सकता है ।

(3) संक्रमित व्यक्ति के साथ असुरक्षित यौन संबंध : यदि कोई स्वस्थ व्यक्ति किसी एच. आई. वी. संक्रमित स्त्री या पुरुष के साथ असुरक्षित शारीरिक संबंध बनाता है तो भी यह विषाणु स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर जाता है ।

(4) संक्रमित माँ द्वारा स्तनपान : जो माँ एच. आई. वी. से संक्रमित है, यदि वह बच्चे को अपना दूध पिलाती है तो बच्चे के शरीर में यह विषाणु प्रवेश कर जाता है ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अत: इन बातों का हमें विशेष ध्यान रखना होगा । यदि इन कारणों से बचा जाए तो हम इस रोग को फैलने से रोक सकते हैं ।''

इस बार सुशांत ने हाथ उठाया – ''सर ! मैं यह जानना चाहता हूँ कि एड्स के रोगी को क्या परेशानी होती है ?''

डॉ. अय्यर – ''एड्स से ग्रस्त व्यक्ति का वज़न लगातार घटने लगता है । रोगी की जाँघ, बगल और गरदन की ग्रंथियों में सूजन आ जाती है । उसे हमेंशा हल्का बुखार रहता है । उसके मुँह व जीभ पर सफ़ेद निशान पड़ जाते हैं । साथ ही उसे अन्य बीमारियों का संक्रमण भी तुरंत घेर लेता है ।

हाँ ! इसके साथ एक बात यह भी जान लीजिए कि ऐसे लक्षण तपेदिक रोग के भी होते हैं, अत: पूरी तरह जाँच करना जरूरी है । एड्स की जाँच एलिसा टेस्ट और वैस्टर्न ब्लॉट नामक रक्त जाँच से होती है ।''

तान्या – ''सर ! जिस दिन कोई व्यक्ति एच. आई. वी. पॉज़िटिव हो जाता है तो क्या उसे उसी दिन बुखार आ जाता है और ग्रंथियाँ सूज जाती हैं ?''

डॉ. अय्यर – ''ये एक अहम सवाल है । असल में एच. आई. वी. के शरीर में प्रवेश करते ही कुछ पता नहीं लगता ।

संक्रमित व्यक्ति भी सामान्य व्यक्ति जैसा ही दिखाई देता है । इसे एड्स की स्थिति तक पहुँचने में 7 से 10 वर्ष तक का समय लगता है । कोई एच. आई. वी. पॉज़िटिव है, इसकी जानकारी केवल रक्त की जाँच से ही मिलती है ।

आप मेरे कोट पर यह जो लाल रिबन देख रहे हैं, यह एड्स के विरूद्ध संघर्ष का प्रतीक है । एड्स के ख़िलाफ़ विश्वव्यापी अभियान सन 1977 से आरंभ हुआ । सभी देशों की यही धारणा है कि विश्व के सभी लोग इस रोग की गंभीरता को समझें । इसके कारणों को जानकर इसे फैलने से रोकें ।

संयुक्त राष्ट्र संघ (यू. एन. ओ.) ने 1 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय एड्स दिवस घोषित किया है । हमारे देश में एड्स नियंत्रण कार्यक्रम 1999 में 15 सौ करोड़ रुपयों की लागत से शुरू किया गया । दूसरा अभियान कार्यक्रम 2004 से लागू किया गया । इस रोग से लड़ने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाँ (एन. जी. ओ.) समाज की मदद कर रही हैं । विद्यार्थियों में इस रोग के प्रति जागरूकता लाने के लिए प्रतिवर्ष 20,000 विद्यालयों में जानकारी देने का लक्ष्य रखा गया है । आपके विद्यालय में आज की कार्यशाला भी इसी अभियान का अंग है ।''

अंत में डॉ. अय्यर ने शांत बैठकर सुनने और अच्छे प्रश्न पूछने के लिए बच्चों का धन्यवाद करते हुए एक आग्रह किया – ''आप सभी इस देश के आने वाले ज़िम्मेदार नागरिक हैं । यह याद रखिए आज तक इस रोग का कोई उपचार नहीं है । अत: इस रोग के कारणों को जानने के बाद सदैव इस रोग से बचकर रहें ।''

याद रखें कि ''एड्स के रोगी को घृणा या मज़ाक का विषय मत बनाइए । इन रोगियों का मनोबल बढ़ाना और इनमें जीने की इच्छा जगाना ज़रूरी है । मुझे विश्वास है आप लोग ऐसा ही करेंगे ।''

सभी बच्चों ने डॉ. अय्यर को धन्यवाद दिया । सबके चेहरे जानकारी की परिपक्वता से चमक रहे थे ।

मैंने डॉ. अय्यर का धन्यवाद करते हुए उन्हें पूरी क्लास के सामने बाताया कि हमारी क्लास में बड़े ही समझदार घरों के बच्चे आते हैं । इनके माता-पिता एच. आई. वी. पॉज़िटिव लोगों को प्यार से अपने घर में रखते हैं और उनका इलाज़ भी करते हैं । आपके द्वारा दी गई जानकारी इन्हें और भी समझदार बनाएगी ।

शब्दार्थ

असामान्य असाधारण **उपेक्षा** अवहेलना, ध्यान न देना **जिज्ञासा** जानने की इच्छा **निराकरण** उपाय, उपचार **लक्षण** जानकारी के संकेत **संक्रमित** रोग ग्रस्त **मनोबल** मन की ताकत **टैटू** गोदना, त्वचा के नीचे रंग भरकर आकृतियाँ या चित्र बनवाना **कॉरिडोर** बरामदा **मार्गदर्शन** दिशा दिखाना **अधकची** अधूरी **स्पेश्यल सैल** खास विभाग **चपेट में आना** पीड़ित होना **तपेदिक** क्षयरोग **परिपक्व** पका हुआ, ज्ञानी **असाध्य** उपचार रहित **संकोच** झिझक **भ्रांति** भ्रम, अपूर्ण ज्ञान **घृणा** नफ़रत **अनाड़ी** बुद्धू **अभियान** व्यापक कार्य

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5 बंटी की उलझन

मन्नू भण्डारी
(जन्म : सन् 1931 ई.)

श्रीमती मन्नू भण्डारी का जन्म मानपुरा (मध्य प्रदेश) में हुआ था । उनका बचपन राजस्थान में व्यतीत हुआ । आरंभिक शिक्षा और इंटर तक की पढ़ाई अजमेर में संपन्न हुई । उन्होंने बी. ए. कलकत्ता यूनिवर्सिटी से किया और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से एम. ए. प्रायवेट किया । मन्नू भण्डारी को लेखन संस्कार पैतृक-दाय के रूप में प्राप्त हुए थे । 'मैं हार गयी', 'तीन निगाहों की तस्वीर', 'आँखों देखा झूठ' उसकी प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं । उन्होंने 'महाभोज' और 'आपका बंटी' उपन्यास भी लिखे । उन्हें अपनी कहानियों और उपन्यासों में आधुनिक मध्यम वर्ग का विशेषत: स्त्रियों का चित्रण किया है । इनमें बदले हुए मानव संबंधों का निरूपण है । आज शिक्षित पति-पत्नी अपने दाम्पत्यजीवन की समस्याओं का हल तलाक में देखते हैं, परंतु इसमें सबसे ज्यादा पीड़ा भोगते हैं, उनके निर्दोष बच्चे । प्रस्तुत अंश 'आपका बंटी' उपन्यास से लिया गया है । शकुन और अजय पढ़े-लिखे हैं । साथ नहीं रह पाये । परंतु उनके बेटे बंटी को दोनों चाहिए । माँ और पिता के बीच झूलते बंटी की वेदना जहाँ हमें छू जाती है, वहाँ हमें तलाक के बारे में नये सिरे से सोचने को बाध्य भी करती है ।

आज पापा आनेवाला है ।

दस बजे बंटी को सरकिट हाउस पहुँच जाने को लिखा है । मम्मी है कि पता नहीं कैसा मुँह लिए घूम रही है । न हँसती है, न बोलती है । बस गुमसुम । इस बार वकील चाचा के जाने के बाद से ही मम्मी ऐसी हो गई है । वकील चाचा भी एक ही हैं बस । खुद तो बोल-बोलकर ढेर कर देंगे और मम्मी बेचारी की बोलती बंद कर जाएँगे । पता नहीं क्या हो गया है मम्मी को ? उसे देखना शुरू करेंगी तो देखती ही रहेंगी, ऐसे मानो उसके भीतर कुछ ढूँढ़ रही हों । रात को कहानी भी नहीं सुनाती । ज्यादा कहो तो कह देती है, 'सो जा, कल सुनाऊँगी ।' वह तो सो ही जाता है पर मम्मी को ऐसा करना चाहिए ?

उस दिन रात में पता नहीं, कब बंटी की नींद खुल गई । देखा, दूर पेड़ के नीचे कोई खड़ा है । डर के मारे उससे तो चीखा तक नहीं गया था, बस साँस जैसे घुटकर रह गई थी । और वे मम्मी निकली । उसके बाद कितनी देर तक मम्मी उसे थपकाती रही, दिलासा देती रही, पर भीतर दहशत जैसे जमकर बैठ गई थी । आधी रात को ऐसे कहीं घूमा जाता होगा ? चाचा जो कह गये थे गड़बड़ होने की बात । वह बिलकुल ठीक है । जरूर कुछ गड़बड़ हुआ है । मम्मी पहले तो ऐसी नहीं थी । पर वह क्या करे ? मम्मी जब चुप-चुप हो जाती है तो उसका मन बिलकुल नहीं लगता ।

परसों ही तो पापा की चिट्ठी आई थी । लिफाफे पर मम्मी का नाम लिखा था । पिछली बार तो लिफाफे पर भी उसका नाम था । अंदर भी दो कागज निकले, एक मम्मी खुद पढ़ने लगी, दूसरा उसे पकड़ा दिया । तो क्या मम्मी के पास भी पापा की चिट्ठी आई है ? मम्मी-पापा क्या दोस्ती करनेवाले हैं ? उसने अपनी चिट्ठी पढ़ ली और फिर मम्मी की ओर ध्यान से देखने लगा । मम्मी क्या खुश नजर आ रही है ? कहीं कुछ नहीं, बस वैसे ही चुप बैठी है, मानो पापा की कोई चिट्ठी ही नहीं आई हो । एक बार उसकी चिट्ठी पढ़ने तक के लिए नहीं माँगी । पिछली बार तो केवल उसी के पास चिट्ठी आई थी और उसे पढ़कर ही मम्मी कितनी प्रसन्न हुई थीं । पापा के पास भेजने से पहले उसे अपनी बाँहों में भरकर इतना प्यार किया था, इतना प्यार किया था मानो वह कहीं भागा जा रहा हो । और जब वह लौटकर आया था तो मम्मी उससे सवाल पर सवाल पूछे जा रही थीं....'और क्या कहा और क्या कहा'....के मारे परेशान कर दिया था ।

मम्मी से छिपकर उसने मम्मीवाला पत्र उठाकर देखा, घसीटी हुई अंग्रेजी की चार-छ: लाइनें थीं, वह कुछ भी समझ नहीं सका । उसका पत्र हिन्दी में था और बड़े-बड़े साफ अक्षरों में ।

परसों रात को जब वह सोया तो बराबर उम्मीद कर रहा था कि मम्मी जरूर पहले की तरह प्यार करेंगी, कुछ कहेंगी । पर उन्होंने कुछ नहीं कहा, सिर्फ पूछा, 'तू जाएगा पापा के पास ?' यह भी कोई पूछने की बात थी भला । पापा आ रहे हैं और वह जाएगा नहीं ? उसके बाद मम्मी बोली नहीं ।

इस समय मम्मी उदास बिलकुल नहीं हैं । मम्मी की उदासी वह खूब पहचानता है । बिना आँसू के भी आँखें कैसी भीगी-भीगी हो जाती हैं ।

अच्छा है, बैठी रहें ऐसी ही । वह तब पापा के पास जाकर खूब घूमेगा, चीजें खरीदेगा, हाँ, नहीं तो ।

वह जल्दी-जल्दी तैयार हो रहा है और मन ही मन कहीं उन चीजों की लिस्ट तैर रही है जो उसे माँगनी है । कैरम बोर्ड जरूर लेगा, एक व्यू मास्टर भी ।

'दूध-दलिया खा लो ।' फूफी अलग ही अपना मुँह फुलाये घूम रही हैं । पिछली बार भी पापा आये थे तो यह ऐसे ही भन्ना रही थी, जैसे इसकी भी पापा से लड़ाई हो ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'मैं नहीं खाता दूध-दलिया । बस रोज सड़ा-सा दूध-दलिया बनाकर रख देती है ।'

'बंटी, क्या बात है ?' कैसी सख्त आवाज़ में बोल रही है मम्मी । बंटी भीतर ही भीतर सहम गया । धीरे से बोला, 'हमें अच्छा नहीं लगता दूध-दलिया ।'

'क्यों, दूध-दलिया तो तुझे खूब पसंद है । एक दिन भी न बने तो शोर मचा देता है । आज ही क्या बात हो गई ?'

'पसंद है तो रोज-रोज वही खाओ, एक ही चीज बस । मैं नहीं खाता ।'

'देख रही हूँ जैसे-जैसे तू बड़ा होता जा रहा है, वैसे ही वैसे जिद्दी और ढीठ होता जा रहा है । अच्छा है, भद्द उड़वा सबके बीच मेरी ।'

कैसे बोल रही है मम्मी । इसमें भद्द उड़वाने की क्या बात हो गई । वह नहीं खाएगा दूध-दलिया, बिना नाश्ता किये ही चला जाएगा ।

वह मेज से उठ गया तो मम्मी ने एक बार भी नहीं कहा कि कुछ और बना दो । न कहें, उसका क्या जाता है ?

हीरालाल को कल ही कह दिया था कि ठीक नौ बजे आ जाना । साढ़े नौ बज रहे हैं पर उसका पता नहीं । बंटी बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा है । थोड़ी-थोड़ी देर में घड़ी देख लेता है । मम्मी किताब लेकर ऐसे बैठ गई है, जैसे समय का उन्हें कुछ होश ही नहीं हो । वह बताये कि साढ़े नौ बज गये । पर क्या फायदा, कह देंगी, 'अभी आता होगा ।'

वह सब समझता है । अब उतना बुद्धू नहीं है । मम्मी को शायद अच्छा नहीं लग रहा है कि बंटी पापा के पास जा रहा है । पर क्यों नहीं लग रहा है ? उसकी तो पापा से लड़ाई नहीं है । पर ऐसा होता है शायद ।

एक बार क्लास में विभु से उसकी लड़ाई हो गई थी तो उसने अपने सब दोस्तों की विभु से कुट्टी नहीं करवा दी थी ? शायद मम्मी भी चाहती हैं कि वह भी पापा से कुट्टी कर ले । तो मम्मी उससे कहतीं । अच्छा मान लो मम्मी उससे कहतीं तो वह कुट्टी कर लेता ? और उसके मन में न जाने कितनी चीजें तैर गईं – कैरम बोर्ड, व्यू मास्टर, मैकेनो, ग्लोब...

तभी हीरालाल की छोटी लड़की आई, 'बापू को ताव चढ़ा है, वे नहीं आ सकेंगे ।'

'क्या हो गया ?' मम्मी की आवाज में जरा भी परेशानी नहीं है । हाँ, उनका क्या बिगड़ता है । वे तो चाहती ही है कि मैं नहीं जाऊँ । मैं जरूर जाऊँगा, चाहे कुछ भी हो जाये ।

'भोत जोर का ताप चढ़ा है, सीत देकर । वे तो गूदड़े ओढ़कर पड़े हैं, मुझे इत्तिला देने को भेजा है ।' और वह चली गई ।

'अब ?' बंटी रोने-रोने को हो आया ।

मम्मी एक क्षण चुप रहीं । फिर फूफी को बुलाकर कहा तो फूफी अलग मिजाज दिखाने लगी, 'बहूजी, मैं नहीं जाऊँगी वहाँ ।'

'क्यों ? बस तुम ही मुझे छोड़कर आओगी ।' बंटी फूफी का हाथ पकड़कर झूल आया, 'जल्दी चलो, अभी चलो ।'

'छोड़ आओ फूफी, वरना कौन ले जाएगा ?' कैसी ठण्डी-ठण्डी आवाज में बोल रही हैं । जैसे कहना है इसलिए कह रही है बस । ले जाये, न ले जाये, कोई फरक नहीं पड़ेगा ।

फूफी एकदम बिफ़र पड़ी, 'कोई नहीं है ले जानेवाला तो नहीं जाएगा । मिलने की ऐसी ही बेकली है तो खुद आकर ले जाएँगे । इस घर में आ जाने से तो कोई धरम नहीं बिगड़ जाएगा । आप जो चाहे सजा दे लो बहूजी, मैं वहाँ नहीं जाऊँगी । मुझसे तो आप जानो...'

और बड़बड़ाती हुई फूफी चली गई । मम्मी ने कुछ भी नहीं कहा । मम्मी का अपना काम होता तो कैसे बिगड़ती । अब फूफी को कहो न कि बिगड़ती जा रही है, ढीठ होती जा रही है । बस डाँटने के लिए मैं ही हूँ । ठीक है कोई मत ले जाओ मुझे । और बंटी एकदम वहीं पसरकर रोने लगा ।

'रो क्यों रहा है ? यह भी कोई रोने की बात है भला ? ठहर जा, कालेज के माली को बुलवाती हूँ ।'

मम्मी माली को समझा रही है, 'देखो, कह देना कि आठ बजे तुम लेने आओगे, इसलिए जहाँ कहीं भी हों, आठ बजे तक सरकिट हाउस पहुँच जायें । तू भी कह देना रे । आठ से देर नहीं करें, समझे !' कैसी सख्त-सख्त आवाज में बोल रही हैं, एकदम प्रिंसिपल की तरह ।

रास्ते भर बंटी सोचता गया कि बहुत सारी बातें हैं जो वह पापा से पूछेगा । मम्मी से पूछी नहीं जाती । कभी शुरू भी करता है तो या तो मम्मी उदास हो जाती हैं या सख्त । उदास मम्मी बंटी को दु:खी करती हैं और सख्त मम्मी उसे डराती हैं । और इधर तो मम्मी को पता नहीं क्या कुछ होता जा रहा है । पास लेटी मम्मी भी उसे बहुत दूर लगती है । उसके और मम्मी के बीच में जरूर कोई रहता है । शायद वकील चाचा की कही हुई कोई बात, शायद

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कोई गड़बड़ी । उसे कोई कुछ नहीं बताता, वह अपने-आप समझे भी क्या ? मम्मी की बात तो पापा से भी नहीं पूछी जा सकती है ।

पर एक बात वह जरूर पूछेगा कि क्या तलाकवाली कुट्टी में कभी अब्बा नहीं हो सकती ? अगर पापा भी साथ रहने लगें तो कितना मजा आये । पर ऐसी बात पूछने पर पापा ने डाँट दिया तो ?

पापा बाहर ही मिल गये । बंटी देखते ही दौड़ गया और पापा ने उठाकर छाती से लगा लिया, 'बंटी बेटा !' और दोनों गालों पर ढेर सारे किस्सू दे दिये ।

शाम को तांगे में बिठाकर पापा ने उसे घुमाया । आइसक्रीम खिलाई, चाट खिलाई । गन्ने का रस पिलाया । बंटी सोच रहा था कि पापा शायद कुछ चीजें और दिलवायेंगे । लेकिन उन्होंने कुछ नहीं दिलवाया तो बंटी को थोड़ी-सी निराशा हुई । पर फिर भी उससे माँगा नहीं गया । खा-पीकर, घूम-फिरकर शाम को वे लोग वापस आ गये । तांगे से उतरकर बंटी भीतर जाने लगा कि एकदम पापा की चिल्लाहट सुनाई दी । मुड़कर देखा । पापा तांगेवाले को डाँट रहे थे । पता नहीं तांगेवाले ने क्या कहा कि पापा और जोर से चिल्लाये, 'झूठ बोलते हो ? घड़ी देखकर तांगा किया था । मैं एक पैसा भी ज्यादा नहीं दूँगा ।'

बंटी सहमकर जहाँ का तहाँ खड़ा हो गया ।

तांगेवाले ने कुछ कहा और कूदकर तांगे से नीचे उतर आया । पापा एकदम चीख पड़े, 'यू शट अप ! जबान संभालकर बात करो । जितना रहम खाओ उतना ही सिर पर चढ़े जा रहे हैं, जूते की नोक पर ही ठीक रहते हैं ये लोग...' पापा का चेहरा एकदम सुर्ख हो रहा था और आँखों से जैसे आग बरस रही थी । बंटी की साँस जहाँ की तहाँ रुक गई । चपरासी और दरबान ने बीच-बचाव करके तांगे को रवाना किया ।

पापा अभी भी जैसे हाँफ रहे थे और बंटी सहमा हुआ था । उसने पापा को कभी गुस्सा होते हुए तो देखा ही नहीं । एकाएक खयाल आया, कभी इसी तरह उस पर गुस्सा हों तो ? वह भीतर तक काँप गया । एकाएक उसे बड़ी जोर से मम्मी की याद आने लगी । अब वह एकदम मम्मी के पास जाएगा । माली आया या नहीं ?

तभी चपरासी ने कहा, 'बाबा को लेने के लिए आदमी आया था । आधा घंटे तक बैठा भी रहा, अभी-अभी गया है, बस आपके आने के पाँच मिनट पहले ही ।'

बंटी की आँखों में आँसू आ गये । किसी तरह उन्हें आँखों में ही पीता हुआ वह बड़ी असहाय सी नज़रों से पापा की ओर देखने लगा । मन में समाया हुआ एक अनजान डर जैसे फैलता ही जा रहा था ।

पापा ने एक बार घड़ी की तरफ नज़र डाली, 'चपरासी चला गया तो ? यह भी अच्छा तमाशा है, घड़ी देखकर घर में घुसो । जो समय उधर से दिया गया है उसी में घूमो-फिरो और लौट आओ । नोंनसेंस !'

एकाएक ही बंटी की छलछलाई आँखें बह गईं । पता नहीं माली के लौट जाने की बात सुनकर या कि पापा का गुस्सा देखकर या कि इस भय से कि पापा कहीं रात में यहीं रहने को न कह दें । दो दिन से पापा को लेकर जो उत्साह मन में समाया हुआ था, वह एकदम बुझ गया और सामने खड़े पापा उसे निहायत अजनबी और अपरिचित से लगने लगे ।

'अरे तुम रो क्यों रहे हो ? रोने की बात क्या हो गई ?'

'माली चला गया, अब मैं घर कैसे जाऊँगा ?' सिसकते हुए बंटी ने कहा ।

'पागल कहीं का । यहाँ क्या जंगल में बैठा है ? मैं नहीं हूँ तेरे पास ?'

'मम्मी के पास जाऊँगा ।' रोते-रोते ही बंटी ने कहा ।

'हाँ-हाँ, तो मैंने कब कहा कि मम्मी के पास नहीं जाओगे ।'

'पर माली तो चला गया ?'

'चला गया तो क्या ? मैं तुम्हें छोड़कर आऊँगा, बस ।'

बंटी ने ऐसे देखा जैसे विश्वास नहीं कर रहा हो । कहीं उसे बहका तो नहीं रहे । अभी चुप करने के लिए कह दें और फिर कहने लगें कि सो जाओ ।

पापा ने पास आकर उसका माथा सहलाया, गाल सहलाये, तो टूटा विश्वास जैसे फिर जुड़ने लगा । पापा फिर अपने लगने लगे ।

'पागल कहीं का । इतना बड़ा होकर रोता है मम्मी के लिए ।' तो अँसुवाई आँखों से ही बंटी हँस दिया । भीतर ही भीतर बड़ी शर्म भी महसूस हुई अपने ऊपर । सचमुच उसे इतनी जल्दी रोना नहीं चाहिए । बच्चे रोया करते हैं बात-बात पर वह तो अब बड़ा हो गया है । अब कभी नहीं रोएगा इस तरह ।

बंटी पापा के साथ तांगे में बैठा तो मन एकदम हल्का होकर दूसरी ओर को दौड़ गया । पापा को देखकर मम्मी को कैसा लगेगा ? एकदम खुश हो जाएँगी । वह खींचकर पापा को अंदर ले जाएगा और मम्मी का हाथ, पापा का

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हाथ मिला देगा – चलो कुट्टी खत्म । फिर मम्मी और वह मिलकर पापा को जाने ही नहीं देंगे । सोते, घूमते-फिरते कितनी बार मन हुआ था कि मम्मी की बात करे । पापा से सब पूछे, जो मम्मी से नहीं पूछ पाता है । पर पापा का चेहरा देखता और बात भीतर ही घुमड़कर रह जाती । पर पापा को साथ लाकर और दोस्ती की बात सोच-सोचकर उसका मन थिरकने लगा ।

जाने कैसे-कैसे चित्र आँखों के सामने उभरने लगे । पापा, मम्मी और वह घूमने जा रहे हैं । पापा उसके साथ खेल रहे हैं । वह पापा के साथ मिलकर मम्मी को चिढ़ा रहा है या कभी मम्मी के साथ मिलकर पापा को ।

अजीब-सा उत्साह है जो मन में नहीं समा रहा है । कहानियों के न जाने कितने राजकुमार मन में तैर गये, जो अपनी अपनी माँ के लिए समुद्र तैर गये थे या पहाड़ लाँघ गये थे । वह भी किसी से कम नहीं है । माँ के लिए पापा को ले आया । अब दोस्ती भी करवा देगा । वरना कोई ला सकता था पापा को ? अब चिढ़ाये फूफी कि बंटी लड़की है । अब मम्मी कभी उदास नहीं होंगी । लेटे-लेटे छत या आसमान नहीं देखेंगी । टीटू की अम्मा यह नहीं पूछेंगी, 'आते हैं तुम्हारे पापा यहाँ ?'

उसने बड़े थिरकते मन से पापा की ओर देखा । पापा एकदम चुप क्यों हैं ? अंधेरे में चेहरा ठीक से नहीं दिखाई दे रहा है । वह चाहता है पापा कुछ बोलते चलें, कलकत्ता चलने की बात ही कहें या कि उसे लड़कोंवाले खेल खेलने की बात ही कहें, पर कुछ तो कहें । बोलते हुए पापा उसे अपने बहुत पास लगने लगते हैं । चुप हो जाते हैं तो लगता है जैसे पापा कहीं दूर चले गये । जैसे उसके और पापा के बीच में कोई और आ गया ।

उसी निकटता को महसूस करने के लिए उसने अनायास ही पापा का हाथ पकड़ लिया ।

पर पापा हैं कि बिलकुल चुप । पापा की चुप्पी से बंटी के मन में अजीब तरह की बेचैनी घुलने लगी । कहीं दोस्ती की बात करते ही पापा चिल्लाने लगें आँखें लाल-लाल करके तो ? पापा का वही चेहरा उभर आया । ऐसे चिल्लाते होंगे तभी शायद मम्मी ने कुट्टी कर ली होगी । बंटी ने फिर एक बार पापा की ओर देखा । अंधेरे में पापा का चेहरा दिखाई नहीं दे रहा ।

'बस, बस यही घर है, बाईं तरफवाला ।' कालेज के पास आते ही तांगा थम गया था । बंटी ने कहा तो तांगेवाले ने बाईं तरफ को लगा दिया ।

बंटी ने हाथ और कसकर पकड़ लिया । हाथ पकड़े-पकड़े ही वह तांगे से नीचे उतरा और एक तरह से पापा को खींचता हुआ गेट की तरफ चला । उसे लग रहा था कि यदि उसकी पकड़ जरा भी ढीली हुई तो पापा छूटकर चल देंगे ।

सड़क पर से वह चिल्लाया, 'मम्मी, पापा आये हैं !'

लोन में से एक छायाकृति तेज-तेज कदमों से फाटक की ओर आई । फाटक खुला और मम्मी सामने आ खड़ी हुई । मम्मी को देखते ही बंटी का हौसला बढ़ गया । लगा जैसे वह अपनी सुरक्षित सीमा में आ गया है । पापा के हाथ को पूरी तरह खींचता हुआ बोला, 'भीतर चलिए न पापा ? मैं अपना बगीचा दिखाऊँगा । मोगरा खूब फूला है ।'

पर मम्मी और पापा जहाँ के तहाँ खड़े हुए हैं, चुप और जड़ बने हुए ।

'मैंने आदमी भेजा था । आपको शायद लौटने में देर हो गई । सो वह राह देखकर चला आया । आपको तकलीफ करनी पड़ी ।'

'कोई बात नहीं ।' बंटी ने चौककर पापा की ओर देखा । यह पापा बोले थे ?

एकदम बदला हुआ स्वर । न प्यारवाला, न गुस्सेवाला । पता नहीं उस स्वर में ऐसा क्या था कि बंटी की पकड़ ढीली हो गई । फिर भी उसने कहा, 'पापा, एक बार भीतर चलिए न । मम्मी, तुम कहो न ।' बंटी रुआँसा हो गया ।

'कुछ देर बैठ लीजिए । बच्चे का मन रह जाएगा ।' मम्मी कैसे बोल रही है ? किसी को ऐसे कहा जाता होगा ठहरने के लिए ?

'रात हो गई है, फिर लौटने में बहुत देर हो जाएगी ।'

'इसी तांगे को रोक लीजिए, अभी कहाँ देर हुई है, चलिए न ।' हाथ पर झूलते हुए बंटी ने पापा को भीतर खींच ही लिया । पापा भीतर आये । लॉन में ही मम्मी-पापा आमने-सामने कुर्सी पर बैठ गये । बंटी पुलकित । उसे समझ नहीं रही कि क्या करे और कैसे करे ।

शब्दार्थ

सहमना डरना **ढीठ** उद्दंड, बेअदब **इत्तिला** सूचना **बेकली** बेचैनी **सुर्ख** लाल **निहायत** बहुत ज्यादा, अत्यधिक

मुहावरे

बोलती बंद कर देना चुप कर देना **आँखें छलछला आना** रोना **मन थिरकने लगना** आनंदित होना **आँखें लाल करना** गुस्सा करना **चेहरा सुर्ख होना** शर्म या गुस्से से चेहरा लाल होना **छाती से लगा देना** बहुत प्यार करना

• • •

Downloaded from https:// www.studiestoday.com